@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/ qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
वीरवार, 30 मई 2024

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 17 अंक 190 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

सीएम नीतीश ने मुख्य सचिव को दिया स्कूल बंदी का आदेश

पटना, 29 मई। पटना में एक स्कूली छात्र की मौत के दो दिन बाद बुधवार को आठ जिलों में करीब सौ बच्चों के बीमार होने के बाद बिहार सरकार सवालों से तंग आ गई। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राज्य के मुख्य सचिव को बिहार में स्कूल बंद करने का निर्देश दिया। इधर, शिक्षा विभाग ने आठवीं कक्षा तक के बच्चों के लिए स्कूलों का समय सुबह 10 बजे तक करते हुए मिशन दक्ष और विशेष कक्षाओं के नाम पर शिक्षकों और शिक्षकेतर कर्मियों को कोई राहत नहीं देने का आदेश दिया। लेकिन, कुछ ही देर बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के निर्देश पर राज्य के मुख्य सचिव ब्रजेश मेहरोत्रा ने सभी जिलाधिकारियों को आदेश दिया कि सभी तरह के स्कूल, कोचिंग और शिक्षण संस्थान आठ जून तक पूर्ण रूप से बंद रखे जाएं। इसके साथ ही शिक्षा विभाग को पीत पत्र के बदले में जारी होने वाला आदेश मुख्य सचिव की ओर से जारी किया गया। इसमें भी मुख्यमंत्री के आदेश की जानकारी दी गई, ताकि शिक्षा विभाग अपने अपर मुख्य सचिव के आदेश के हवाले से कुछ और आदेश न जारी कर दे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भीषण गर्मी और भयंकर लू की आपदाजनक स्थिति मानते हुए मुख्य सचिव ब्रजेश मेहरोत्रा को स्कूलों को बंद करने का निर्देश दिया है। उन्होंने अपने निर्देश में स्पष्ट तौर पर कहा कि गर्मी के कारण बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े, इसके लिए स्कूलों को बंद करने की समुचित कार्यवाही करें।

नवीन पटनायक की तबीयत खराब होने के पीछे कोई षड्यंत्र है क्या: पीएम मोदी

सिम्मी कौर बब्बर

मयूरभंज, 29 मई। लोकसभा चुनाव के सातवें और आखिरी चरण के मतदान से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज ओडिशा में चुनाव प्रचार किया। मयूरभंज में एक रैली को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी बीजू जनता दल (बीजद) की जमकर आलोचना की। उन्होंने बीजद पर आदिवासियों की जमीन हड़पने और खनिज संपदा लूटने का आरोप लगाया। इस रैली के जरिए उन्होंने ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक की तबीयत को लेकर भी सवाल किया। इस रैली में पीएम मोदी ने मुख्यमंत्री नवीन पटनायक की तबीयत पर जमकर कटाक्ष किया। उन्होंने कहा, आजकल नवीन पटनायक के सभी शुभचिंतक बहुत चिंता में हैं। वो ये देखकर बहुत परेशान हैं कि पिछले एक साल में नवीन बाबू की तबीयत इतनी कैसे बिगड़ गई। वर्षों से नवीन पटनायक के करीबी लोग जब मुझसे मिलते हैं, तो वो उनकी तबियत की चर्चा जरूर करते हैं। वो बताते हैं कि नवीन बाबू अब खुद से कुछ कर नहीं पा रहे हैं। अरसे तक उनके करीबी रहे लोगों का मानना है कि उनकी तबीयत बिगड़ने के पीछे कोई साजिश भी हो सकती है। प्रधानमंत्री ने नवीन

पटनायक के तबीयत को लेकर सवाल उठाया। उन्होंने कहा, नवीन बाबू की तबीयत खराब होने के पीछे कोई षड्यंत्र है क्या? ये ओडिशा के लोगों को जानने का अधिकार है। कहीं इसमें उस लॉबी का तो हाथ नहीं है न जो नवीन पटनायक के नाम पर पर्दे के पीछे ओडिशा में सत्ता भोग रहे हैं। इस रहस्य से पर्दा उठना जरूरी है। उन्होंने आगे कहा कि 10 जून के बाद ओडिशा में भाजपा सरकार बनने के बाद हमारी सरकार एक स्पेशल कमेटी का गठन करेगी और ये जांच करेगी कि अचानक नवीन बाबू की तबियत क्यों गिरती जा रही है। बता दें कि पीएम मोदी की यह टिप्पणी असम के सीएम हिमंत बिस्वा सरमा के उस आरोप के बाद आई, जहां उन्होंने कहा था कि बीजद नेता वीके पांडियन ओडिशा के सीएम के गतिविधियों को नियंत्रित कर रहे हैं। रैली को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी बीजद को घेरा। उन्होंने कहा, बीजद पर आपने 25 साल भरोसा किया, लेकिन बीजद ने हर कदम पर आपके भरोसे को तोड़ा है। यही बीजद सरकार आदिवासी बंधुओं की जमीन हड़पने के लिए कानून लेकर आई थी। भाजपा के दबाव में उसे वो कानून वापस लेना पड़ा। अब इस बार अगर इन्हें मौका मिला, तो ये आदिवासियों की जमीन हड़पने का अवसर छोड़ेंगे नहीं। प्रधानमंत्री ने राज्य सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा, बीजद ने आपकी खनिज संपदा को भी लुटा है। मोदी ने डिस्ट्रिक्ट मिनरल फंड बनाकर हजारों करोड़ रुपये ओडिशा को दिए। बीजद में इसमें भी घोटाला कर दिया। लोग कह रहे हैं कि ओडिशा का लुटा हुआ पैसा विदेशों तक जा रहा है। लूट का माल ये कहीं भी छिपा लें, मोदी पाई-पाई निकालेगा। ये मोदी की गारंटी है कि जिसने जनता को लूटा है, उसे लौटाना ही पड़ेगा और लूटने वाले जिंदगी भर जेल की चक्की पिसेंगे। पीएम मोदी ने ओडिशा में वनधन योजना को ठीक से लागू करने का वादा किया। उन्होंने कहा, मोदी सरकार ने जो वनधन योजना चलाई है। यहां भाजपा सरकार बनते ही उसको भी ठीक से लागू किया जाएगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि बीजद सरकार ने सबसे बड़ा धोखा तो महाप्रभु के श्री रत्न भंडार को लेकर किया है। आज ओडिशा ही नहीं, पूरा देश जानना चाहता है कि रत्न भंडार की चाबी गई कहां? जो जांच हुई थी, उसकी रिपोर्ट में किसका नाम है? उन्होंने ओड़िशावासियों को विश्वास दिलाया कि बीजद सरकार जो छुपा रही है, उसका खुलासा ओडिशा में भाजपा सरकार बनने के बाद किया जाएगा।

1962 वाले बयान पर अय्यर ने माफी मांगी

तेजिन्दर कौर बब्बर

नई दिल्ली, 29 मई। कांग्रेस नेता मणिशंकर अय्यर की 1962 में चीनी आक्रमण के लिए कथित शब्द का इस्तेमाल करने वाली टिप्पणी ने मंगलवार देर रात राजनीतिक विवाद खड़ा कर दिया। भाजपा ने इसे संशोधनवाद का निर्लज्ज प्रयास बताया। हालांकि, बाद में अय्यर ने कथित शब्द का इस्तेमाल करने के लिए माफी मांगी। वहीं, कांग्रेस ने अय्यर की इस टिप्पणी से खुद को दूर कर लिया। वहीं, इस बयान से दूरी बनाते हुए कांग्रेस प्रवक्ता जयराम रमेश ने कहा कि बिना शर्त माफी मांगने के बाद प्रकरण समाप्त हो जाना चाहिए। बता दें कि कांग्रेस नेता अय्यर ने मंगलवार शाम विदेशी संवाददाता क्लब में एक कार्यक्रम में किस्सा सुनाते हुए कहा था कि अक्तूबर 1962 में चीनियों ने कथित तौर पर भारत पर आक्रमण किया। अय्यर ने यह टिप्पणी नेहरू फर्स्ट रिक्रूट्स पुस्तक के विमोचन के अवसर पर की। भाजपा आईटी विभाग के प्रमुख अमित मालवीय ने अय्यर की टिप्पणी पर कांग्रेस की आलोचना की। उन्होंने कहा, एफसीसी में

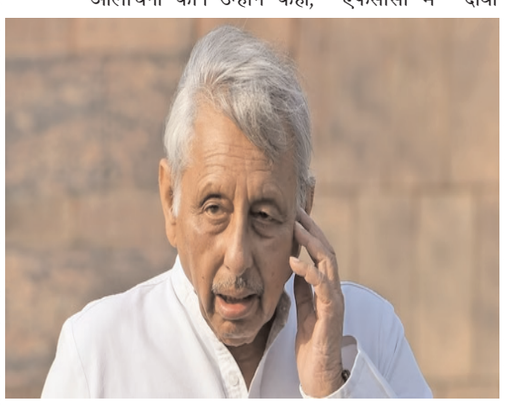

नेहरू फर्स्ट रिक्रूट्स नामक पुस्तक के विमोचन के दौरान बोलते हुए मणिशंकर अय्यर 1962 में चीनी आक्रमण को कथित बताते हैं। यह संशोधनवाद का एक बेशर्म प्रयास है। मालवीय ने आरोप लगाया कि नेहरू ने चीनियों के पक्ष में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में स्थायी सीट पर भारत का दावा छोड़ दिया, राहुल गांधी ने एक गुप्त समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, राजीव गांधी फाउंडेशन ने चीनी दूतावास से चंदा लिया और चीनी कंपनियों को भारत में व्यापार करने में आसानी हो, इस मकसद से एक रिपोर्ट प्रकाशित की गई। उनके आधार पर, सोनिया गांधी की यूपीए सरकार ने चीनी सामानों के लिए भारतीय बाजार खोल दिया, जिससे देश के सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग (एमएसएमई) को नुकसान हुआ। अब कांग्रेस नेता अय्यर 1962 के चीनी आक्रमण पर पर्दा डालना चाहते हैं, जिसके बाद चीनियों ने 38,000 वर्ग किमी भारतीय क्षेत्र पर अवैध कब्जा कर लिया था। मालवीय ने पूछा कि कांग्रेस का चीनियों के प्रति प्रेम क्या बताता है? हालांकि, विवाद बढ़ा तो कांग्रेस नेता अय्यर बैकफुट पर दिखे। उन्होंने कहा कि चीनी आक्रमण से पहले कथित शब्द का गलती से इस्तेमाल हो गया था। इसके लिए मैं मांफी मांगता हूं।

प्रज्ज्वल रेवन्ना को बंगलूरू कोर्ट से झटका

बंगलूरू, 29 मई। कर्नाटक में बंगलूरू की एक विशेष अदालत ने दुष्कर्म के एक मामले में जनता दल सेक्युलर (जद एस) के निलंबित नेता प्रज्ज्वल रेवन्ना की अग्रिम जमानत अर्जी खारिज कर दी। रेवन्ना पर कई महिलाओं के यौन उत्पीड़न का आरोप है। निर्वाचित प्रतिनिधियों के लिए विशेष अदालत ने रेवन्ना के वकील अरूण द्वारा दायर जमानत आवेदन को बुधवार को खारिज कर दिया। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक, प्रज्ज्वल ने 30 मई को म्यूनिख से बंगलूरू आने के लिए हवाई टिकट बुक कराया है। प्रज्ज्वल 31 मई को तड़के यहां पहुंच सकते हैं। जद (एस) सुप्रीमो और पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा के पोते प्रज्ज्वल पर 47 साल की एक महिला के यौन उत्पीड़न का आरोप है। वह हासन लोकसभा सीट पर मतदान होने के एक एक बाद 27 अप्रैल को जर्मनी चले गए थे और अब तक फरार हैं। एक विशेष अदालत ने एसआईटी (विशेष जांच दल) के आवेदन पर प्रज्वल के खिलाफ 18 मई को गिरफ्तारी वारंट जारी किया था। बाद में एसआईटी ने उनके पिता एवं जद (एस) विधायक एचडी रेवन्ना को गिरफ्तार कर लिया, जो महिला के अपहरण में कथित रूप से शामिल थे। अब सभी लोगों की नजरें केम्पेगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर टिकी हैं, जहां प्रज्ज्वल के 31 मई को पहुंचने की संभावना है। उनके हवाई अड्डे पर उतरते ही एसआईटी उन्हें गिरफ्तार कर सकती है। इस बीच, प्रज्ज्वल की मां भवानी रेवन्ना ने अपने पति से जुड़े अपहरण मामले में गिरफ्तारी की आशंका से विशेष (निर्वाचित प्रतिनिधि) अदालत में अग्रिम जमानत अर्जी दायर की है। एसआईटी ने उन्हें अग्रिम जमानत देने का विरोध किया है। उसने इसी मामले में एचडी रेवन्ना को मिली अंतरिम अग्रिम जमानत को रद्द करने की भी मांग की है।

प्रधानमंत्री मोदी के ध्यान को टीवी पर दिखाने को लेकर ममता बनर्जी की चेतावनी

कौमी संवाददाता

कोलकाता, 29 मई। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी चेतावनी दी है कि अगर कन्याकुमारी में प्रधानमंत्री मोदी के ध्यान लगाने का प्रसारण टेलीविजन पर किया गया तो चुनाव आयोग से इसकी शिकायत की जाएगी। ममता बनर्जी ने दावा किया है कि यह स्पष्ट रूप से आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन होगा। बता दें कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 30 मई को लोकसभा चुनाव प्रचार के समाप्त होने के बाद कन्याकुमारी का दौरा करेंगे। प्रधानमंत्री स्वामी विवेकानंद को श्रद्धांजलि देने के लिए बनाए गए स्मारक रॉक मेमोरियल में ध्यान लगाएंगे। ममता बनर्जी ने कहा कि पीएम मोदी ध्यान लगा सकते हैं लेकिन इसका प्रसारण टेलीविजन पर नहीं किया जा सकता। टीएमसी प्रमुख ने कहा कि यह आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन होगा और चुनाव आयोग से इसकी शिकायत की जाएगी। उन्होंने सवाल पूछा कि क्या ध्यान लगाते समय किसी को कैमरों की जरूरत होती है? ममता

बनर्जी ने दावा किया कि पीएम मोदी हर बार चुनाव के आखिरी चरण से पहले 48 घंटे के लिए ध्यान लगाने चले जाते हैं। उन्होंने कहा कि 2019 में भी चुनाव प्रचार के बाद प्रधानमंत्री केदारनाथ की ध्यान गुफा में चले गए थे। टीएमसी प्रमुख ने प्रधानमंत्री के उस दावे को भी खारिज किया, जिसमें उन्होंने कहा था कि इस बार पश्चिम बंगाल में भाजपा सबसे बेहतर प्रदर्शन करेगी। ममता बनर्जी ने कहा कि 34 वर्ष पहले टीएमसी ने पश्चिम बंगाल से सीपीआई(एम) सरकार को बाहर का रास्ता दिखा दिया था, तो भाजपा के साथ भी ऐसा हो सकता है।

भीषण गर्मी से दिल्ली में टूटे सारे रिकॉर्ड

नई दिल्ली, 29 मई। देशभर में गर्मी ने प्रचंड रूप धारण कर लिया है। कई शहरों में पारा 50 डिग्री के पार चला गया है और लोग भीषण लू का सामना कर रहे हैं। उधर मौसम विभाग ने फिलहाल किसी राहत की उम्मीद नहीं जताई है। कई राज्यों में अत्यधिक गर्मी और लू चलने की चेतावनी भी जारी की गई है। देश की राजधानी दिल्ली भी भीषण गर्मी का कहर झेल रही है। दिल्ली के मुंगेशपुर में अब तक का सर्वोच्च तापमान दर्ज किया गया। उत्तर-पश्चिम दिल्ली स्थित मौसम निगरानी केंद्र ने बताया कि बुधवार 29 मई को मुंगेशपुर का तापमान 52.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। हालांकि, इसके बाद बारिश की वजह से लोगों को थोड़ी राहत मिल सकी। बुधवार को दिल्ली के मुंगेशपुर का तापमान पूर्वानुमान के हिसाब से नौ डिग्री अधिक रहा। इससे पहले दिल्ली में वर्ष 2002 में सबसे अधिकतम तापमान 49.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। 29 मई को पुराने सारे रिकॉर्ड ध्वस्त हो गए। भीषण लू और गर्मी के बीच दिल्ली में बिजली की खपत ने भी सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए।

25 हफ्ते के गर्भ को गिराने की मांग वाली याचिका खारिज

नई दिल्ली, 29 मई। सुप्रीम कोर्ट ने एक महिला की उस याचिका को खारिज कर दिया है, जिसमें 25 हफ्ते के गर्भ को गिराने की मंजूरी मांगी गई थी। सुप्रीम कोर्ट ने एम्स की रिपोर्ट का हवाला देते हुए याचिका खारिज की। हालांकि कोर्ट ने महिला की निजता का सम्मान करते हुए रिपोर्ट सार्वजनिक करने से इनकार कर दिया। जस्टिस अभय एस ओका और जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा की अवकाश पीठ ने एम्स दिल्ली की रिपोर्ट के आधार पर फैसला किया। महिला ने याचिका में बताया कि उसे 17 मई को ही अपनी गर्भावस्था के बारे में पता चला। महिला ने बताया कि वह आर्थिक तौर पर मजबूत नहीं है और बच्चे की परवरिश करने में सक्षम नहीं है। महिला दुबई से भारत आई है और फिलहाल होटल में ठहरी हुई है। महिला की याचिका पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली एम्स से 24 मई से पहले मेडिकल रिपोर्ट मांगी। अब एम्स की रिपोर्ट के आधार पर याचिका को खारिज कर दिया है। 27 मई को कोर्ट ने याचिका पर फिर से सुनवाई करते हुए कहा कि मेडिकल रिपोर्ट को ध्यान में रखते हुए हम गर्भ गिराने की अनुमति नहीं दे सकते और मेडिकल रिपोर्ट सीलबंद लिफाफे में रिकॉर्ड में रहेगी। गर्भपात कानून के तहत 24 हफ्ते से ज्यादा का गर्भ गिराने की इजाजत तभी दी जा सकती है, जब गर्भ में पल रहा बच्चा किसी लाइलाज या गंभीर बीमारी से पीड़ित हो या फिर गर्भवती महिला की जान बचाने की स्थिति में गर्भ गिराने की मंजूरी दी जा सकती है।

पश्चिम बंगाल में सीएए के तहत नागरिकता देना शुरू

सौरभ शर्मा

नई दिल्ली, 29 मई। केंद्र सरकार ने पश्चिम बंगाल में सीएए के तहत नागरिकता देना शुरू किया। गृह मंत्रालय के मुताबिक, नागरिकता (संशोधन) नियम 2024 के तहत नागरिकता प्रमाण-पत्र देने की प्रक्रिया अब पश्चिम बंगाल राज्य में शुरू हो गई है। यहां राज्य से आए आवेदनों के पहले सेट को आज पश्चिम बंगाल की अधिकार प्राप्त समिति द्वारा नागरिकता प्रदान की गई। इसी तरह हरियाणा और उत्तराखंड राज्यों की अधिकार प्राप्त समितियों ने भी नागरिकता (संशोधन) नियम 2024 के तहत अपने-अपने राज्यों में आवेदकों के पहले सेट को आज नागरिकता प्रदान की है। नागरिकता (संशोधन) नियम, 2024 की अधिसूचना के बाद दिल्ली की अधिकार प्राप्त समिति ने पहली बार भारतीय नागरिकता प्रदान की थी। इन आवेदकों को 15 मई को दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय गृह सचिव ने नागरिकता प्रमाण पत्र सौंपा था। नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) 11 मार्च को देश में लागू हो गया था। कानून को लेकर चार साल बाद नियम अधिसूचित किए गए थे। इससे पहले नागरिकता संशोधन विधेयक 2019 को संसद द्वारा पारित किया गया था। बाद में इस विधेयक को राष्ट्रपति का अनुमोदन मिल गया था। सीएए के जरिए पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान से आए

हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध, पारसी और ईसाई समुदायों से संबंधित अल्पसंख्यकों को भारतीय नागरिकता लेने में आसानी होगी। नागरिकता अधिनियम में देशीयकरण द्वारा नागरिकता का प्रावधान किया गया है। आवेदक को पिछले 12 महीनों के दौरान और पिछले 14 वर्षों में से आखिरी साल 11 महीने भारत में रहना चाहिए। कानून में छह धर्मों (हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध, पारसी और ईसाई) और तीन देशों (अफगानिस्तान, बांग्लादेश और पाकिस्तान) से संबंधित व्यक्तियों के लिए 11 वर्ष की जगह छह वर्ष तक का समय है। कानून में यह भी प्रावधान है कि यदि किसी नियम का उल्लंघन किया जाता है तो ओवरसीज सिटीजन ऑफ इंडिया (ओसीआई) कार्डधारकों का पंजीकरण रद्द किया जा सकता है। नागरिकता अधिनियम, 1955 यह बताता है कि कौन भारतीय नागरिकता प्राप्त कर सकता है और किस आधार पर। कोई व्यक्ति भारतीय नागरिक बन सकता है यदि उसका जन्म भारत में हुआ हो या उसके माता-पिता भारतीय हों या कुछ समय से देश में रह रहे हों, आदि। हालांकि, अवैध प्रवासियों को भारतीय नागरिकता प्राप्त करने से प्रतिबंधित किया गया है। अवैध प्रवासी वह विदेशी होता है जो (द्व) पासपोर्ट और वीजा जैसे वैध यात्रा दस्तावेजों के बिना देश में प्रवेश करता है, या (द्वद्व) वैध दस्तावेजों के साथ प्रवेश करता है, लेकिन अनुमत समय अवधि से अधिक समय तक रहता है। विदेशी अधिनियम, 1946 और पासपोर्ट (भारत में प्रवेश) अधिनियम, 1920 के तहत अवैध प्रवासियों को कैद या निर्वासित किया जा सकता है।

उल्टा चोर कोतवाल को डांटे: महबूबा

श्रीनगर, 29 मई। अनंतनाग-राजोरी लोकसभा सीट पर मतदान के दिन धरना-प्रदर्शन करने को लेकर पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती के खिलाफ पुलिस ने मामला दर्ज किया है। 25 मई को महबूबा मुफ्ती के नेतृत्व में पीडीपी के कई सदस्यों ने बिजबिहाड़ा पुलिस थाने के बाहर धरना दिया था। इस मामले में आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन को लेकर महबूबा मुफ्ती के एफआईआर दर्ज की गई है। महबूबा मुफ्ती ने बुधवार को मामले दर्ज होने पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि उल्टा चोर कोतवाल को डांटे। एक्स पर एक पोस्ट में मुफ्ती ने कहा कि मतदान से एक दिन पहले उनकी पार्टी के कई कार्यर्ताओं को बिना किसी वजह के हिरासत में ले लिया गया था। इसी के विरोध में उन्होंने केंद्र सरकार और स्थानीय प्रशासन के खिलाफ प्रदर्शन किया था। उन्होंने कहा, आचार संहिता के उल्लंघन के लिए मेरे खिलाफ एफआईआर दर्ज होना हास्यसपद है। सत्ता के सामने सच बोलने की कीमत पीडीपी को चुकानी पड़ी है। हमारा विरोध स्थानीय प्रशासन के साथ मिलकर भारत सरकार द्वारा मतदान से पहले पीडीपी के पोलिंग एजेंटों और कार्यकर्ताओं को हिरासत में लेने के खिलाफ था। इसके बाद भी प्रशासन ने कई मतदाताओं को वोट देने के अधिकार का प्रयोग करने से रोकने के लिए पारंपरिक पीडीपी के गढ़ वाले क्षेत्रों में घेराबंदी और तलाशी अभियान चलाया। उल्टा चोर कोतवाल को डांटे। इससे पहले 25 मई को अनंतनाग-राजोरी सीट पर मतदान के दिन महबूबा मुफ्ती ने पुलिस पर बिना किसी कारण के उनकी पार्टी के पोलिंग एजेंट और कार्यकर्ताओं को हिरासत में लेने का आरोप लगाते हुए धरना दिया था। उन्होंने कहा था कि डीजी, एलजी और ऊपर से नीचे तक सभी अधिकारी इसमें शामिल हैं। 13 मई को उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं के कथित उत्पीड़न और अवैध गिरफ्तारी को रोकने के लिए चुनाव आयोग को एक पत्र भी लिखा था। मुफ्ती अनंतनाग-राजोरी सीट पर नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के उम्मीदवार मियां अल्ताफ अहमद और अपनी पार्टी के जफर इकबाल मन्हास के खिलाफ चुनावी मैदान में हैं। चुनाव आयोग के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, अनंतनाग-राजोरी निर्वाचन क्षेत्र में 54.3 प्रतिशत मतदान हुआ। 2019 के लोकसभा चुनाव में निर्वाचन क्षेत्र में मतदान 14.3 प्रतिशत ही रहा था।

नई रणनीति पर अमल कर रहा इंडिया गठबंधन

नरेश मल्होत्रा

लखनऊ, 29 मई। उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनाव के सातवें चरण में शामिल 13 सीटों पर इंडिया गठबंधन ने नई रणनीति बनाई है। तय किया है कि संबंधित लोकसभा सीटों पर अधिकाधिक मतदान कराया जाए। इसके लिए प्रदेश व जिला स्तरीय पदाधिकारियों को बूथ की जिम्मेदारी सौंपी गई है। घर-घर पहुंचने वाली टीम चुनाव घोषणा पत्र और कांग्रेस के 10 साल व सपा के पांच साल के कार्यकाल की उपलब्धियों से संबंधित पर्ची भी थमा रहे हैं। सातवें चरण में शामिल 13 सीटों में से महराजगंज, देवरिया, बांसगांव और वाराणसी सीट पर गठबंधन के तहत कांग्रेस प्रत्याशी मैदान में हैं। पिछले लोकसभा चुनाव में सपा और बसपा एकसाथ थी और कांग्रेस अलग मैदान में उतरी थी। अगर इन तीनों दलों को मिले वोटबैंक को मिलाकर देखा जाए तो भी वह भाजपा के वोटबैंक से काफी पीछे थी। महराजगंज में भाजपा को 59.20 फीसदी वोट मिला था, जबकि सपा-बसपा को 31.45 और कांग्रेस को सिर्फ 5.91 फीसदी फीसदी वोट मिला था। यहां भाजपा ने पंकज चौधरी पर फिर से दांव लगाया है, जबकि इंडिया गठबंधन ने उम्मीदवार बदल कर वीरेंद्र चौधरी को मैदान में उतार दिया है। वहीं, बांसगांव में भाजपा को 56.41 फीसदी वोट मिला। कांग्रेस ने यहां उम्मीदवार नहीं उतारा था। सपा-बसपा गठबंधन के तहत सदल प्रसाद मैदान में थे, उन्हें 40.57 फीसदी वोट मिला था। इस बार वह कांग्रेस के टिकट पर मैदान में हैं। देवरिया में दोनों तरफ से नए उम्मीदवार उतारे गए हैं। भाजपा के शशांक मणि त्रिपाठी और कांग्रेस के अखिलेश प्रताप सिंह के बीच सीधा मुकाबला है। चुनावी चौसर पर ब्राह्मण व क्षत्रिय बिरादरी के बीच प्रतिष्ठा का सवाल बन गया है। दोनों अन्य जातियों को गोलबंद करने में जुटे हैं। यहां भाजपा को 57.19, कांग्रेस को 5.03 और सपा- बसपा को 32.57 फीसदी वोट मिला था। वाराणसी से पिछले चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 63.62 फीसदी वोट मिले थे। यहां कांग्रेस के अजय राय को 14.38 और सपा-बसपा गठबंधन उम्मीदवार शालिनी यादव को 18.40 फीसदी वोट मिला था। इस बार शालिनी भाजपा के साथ हैं। यहां नरेंद्र मोदी और

अजय राय के बीच सीधा मुकाबला है। भाजपा हार-जीत के अंतर को ऐतिहासिक बनाने की ख्वाहिशमंद है। यही वजह है कि हर वर्ग के बीच अलग-अलग बैठकें हो रही हैं। मठ-मंदिर से लेकर मतदाताओं के घर-घर पार्टी के दिग्गज नेता पहुंच रहे हैं। उनकी इस ख्वाहिश को पूरा न होने देने के लिए विपक्ष ने एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया है। पहले प्रियंका गांधी और डिंपल यादव ने रोड शो किया तो फिर मंगलवार को अखिलेश यादव और राहुल गांधी ने संयुक्त कार्यक्रम के जरिए एकजुटता का संदेश दिया। सपा और कांग्रेस के राष्ट्रीय व प्रदेश स्तरीय पदाधिकारी भी वाराणसी में डेरा डाले हैं और घर-घर पहुंच रहे हैं। यहां गठबंधन ने भी मंशा साफ कर दी है कि वे वाराणसी से किसी भी कीमत पर रिकॉर्ड नहीं बनने देना चाहते हैं। अंतिम चरण के सियासी मैदान में उतरे इंडिया गठबंधन से जुड़े राष्ट्रीय व प्रदेश स्तरीय नेता काम के बदले अनाज योजना, मनरेगा से लेकर कन्या विद्याधन तक गिना रहे हैं। इसी तरह आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे की खासियत के साथ ही अन्य एक्सप्रेसवे की कमियां भी गिना रहे हैं। वोटरों को कामधेनु योजना, बिजली सेक्टर के कार्यों और किसान के हित में किए गए कार्यों के पंपलेट के साथ ही 2019 के घोषणा पत्र भी थमाया जा रहा है।

जीरिस्तान में छात्राओं के स्कूल में अज्ञात बदमाशों ने लगायी आग

एजेंसी

मीरानशाह। पाकिस्तान के उत्तरी वजीरिस्तान में छात्राओं के एक विद्यालय में आग लगाने की घटना सामने आयी है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि रजमक उपमंडल के शाखिमर गांव स्थित गोल्डन एरो पब्लिक स्कूल में अज्ञात बदमाशों ने देर रात आग लगा दी। आग तेजी से फैली और विद्यालय की पूरी इमारत इसकी चपेट में आ गयी। आग से इमारत में रखे फर्नीचर और कंप्यूटर जलकर राख हो गए।स्थानीय लोगों ने घटना की निंदा की और स्कूल के तत्काल पुनर्निर्माण की मांग की है। स्कूल की स्थापना पाकिस्तानी सेना की सातवीं डिवीजन और शाखिमर वेलफेयर सोसाइटी की मदद से की गई थी। यहां करीब 400 छात्राएं अध्ययनरत हैं। इससे पहले गत मार्च में अज्ञात हथियारबंद लोगों ने स्कूल पर गोलीबारी की थी, जिससे उसका सोलर सिस्टम क्षतिग्रस्त हो गया था। गौरतलब है कि संदिग्ध आतंकवादियों ने गत 10 मई को उत्तरी वजीरिस्तान के शेवा तहसील में छात्राओं के एक निजी स्कूल में विस्फोट कर दिया था।

इक्वाडोर के तट पर छोटा विमान दुर्घटनाग्रस्त, 2 की मौत

क्विटो। इक्वाडोर के दक्षिणी तटीय प्रांत एल ओरो के सांता रोजा में एक छोटा विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिससे दो लोगों की मौत हो गई और एक घायल हो गया। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय ने यह जानकारी दी।एजेंसी ने एक बयान में कहा, पाइपर-34 हल्का विमान दक्षिण-पश्चिमी तटीय शहर गुआयाकिल से सांता रोजा की ओर उड़ान भर रहा था। दुर्घटना में पायलट डेविड पैरेंनो और एक यात्री ऑगस्टो विएरा की मौत हो गई, जबकि दूसरा यात्री एड्रियन युम्बाला घायल हो गया और उसे इलाज के लिए स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया।

बयान में कहा गया है कि दुर्घटना जांच बोर्ड के कर्मचारी जांच के लिए दुर्घटनास्थल पर गए। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, स्थानीय निवासियों ने कहा कि विमान एक पहाड़ी पर जंगली इलाके में गिर गया, और बचाव दल ने कहा कि विमान के अवशेष जल गए हैं।

हम राफा की स्थिति के लिए अमेरिका को पूरी तरह जिम्मेदार मानते हैं, फिलिस्तीनी राष्ट्रपति

रामल्लाह। फिलिस्तीनी राष्ट्रपति पद के प्रवक्ता नबील अबू रुदैनेह ने गाजा पट्टी के सबसे दक्षिणी शहर राफा में चल रही हिंसा के लिए अमेरिकी प्रशासन को जिम्मेदार ठहराया है। अबू रुदैनेह ने रामल्लाह में संवाददाताओं से कहा, हम राफा और गाजा में स्थिति के लिए अमेरिकी प्रशासन को पूरी तरह से जिम्मेदार मानते हैं। उन्होंने कहा कि इजरायली पक्ष ने अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के फैसले की अनदेखी की और शहर को रहने लायक नहीं बना दिया। सिन्हुआ समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने इजरायली कार्रवाइयों पर अमेरिकी प्रशासन की चुप्पी की आलोचना की और इसे फिलिस्तीनियों के खिलाफ नरसंहार युद्ध का समर्थन बताया। अबू रुदैनेह ने इजरायली आक्रामकता के व्यापक अंतरराष्ट्रीय विरोध के बावजूद संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा इजरायल को दिए जा रहे निरंतर राजनीतिक, वित्तीय और सैन्य समर्थन की ओर भी इशारा किया। उन्होंने इजरायली सरकार की योजनाओं के लिए अभूतपूर्व अमेरिकी समर्थन के साथ गाजा पर संभावित पूर्ण कब्जे की चेतावनी दी और अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (आईसीजे) के फैसले का तत्काल अनुपालन करने का आग्रह किया। हाल ही में ICJ द्वारा अपने हमलों को रोकने के आदेश के बावजूद, इज़रायल राफ़ा पर अपने हमले जारी रखे हुए है, जहाँ 1 मिलियन से अधिक विस्थापित फ़िलिस्तीनी शरण ले रहे हैं। इसके अतिरिक्त, अबू रुदैनेह ने स्पेन, नॉर्वे और आयरलैंड द्वारा फ़िलिस्तीन को मान्यता दिए जाने को बढ़ते यूरोपीय समर्थन के संकेत के रूप में देखा, साथ ही फ़िलिस्तीन और अन्य अरब राज्यों द्वारा अधिक देशों को फ़िलिस्तीनी राज्य को मान्यता देने के लिए राजी करने के निरंतर प्रयास भी किए जा रहे हैं।

दक्षिणी गाजा पट्टी के राफा हवाई हमले में अप्रत्याशित द्वितीयक विस्फोट के कारण दर्जनों नागरिक मारे गए

यरुशलम। इजरायली सेना ने कहा है कि उसकी प्रारंभिक जांच के निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि दक्षिणी गाजा पट्टी के राफा पर उसके हवाई हमले में अप्रत्याशित द्वितीयक विस्फोट और आग के कारण दर्जनों नागरिक मारे गए। इजरायल रक्षा बलों (आईडीएफ) की वेबसाइट पर पोस्ट किए गए एक वीडियो में, आईडीएफ के प्रवक्ता डैनियल हगरी ने कहा कि सेना ने एक संरचना पर सटीक हमला किया था, जहां दो वरिष्ठ हमास कमांडर, यासीन राबिया और खालिद नज्जर स्थित थे, सिन्हुआ समाचार एजेंसी ने बताया। आईडीएफ ने दो हमास अधिकारियों पर इजरायलियों के खिलाफ आतंकवादी हमलों की साजिश रचने और उन्हें अंजाम देने का आरोप लगाया। हगरी ने कहा कि अप्रत्याशित परिस्थितियों के कारण, आग दुखद रूप से भड़क गई, जिसके परिणामस्वरूप पास के गाजा नागरिकों की जान चली गई।

इजरायल ने राफा शिविर पर बमबारी में शामिल होने से किया इनकार

एजेंसी

गाजा। इजरायल डिफेंस फोर्सेज (आईडीएफ) ने राफा शहर के पास अल-मवासी इलाके में एक शिविर पर हुए बम विस्फोट में अपनी संलिप्तता से इनकार किया, जिसमें कम से कम 21 लोग मारे गए और दर्जनों अन्य घायल हो गए थे।

आईडीएफ ने एक बयान में कहा ,पिछले कुछ घंटों की रिपोर्टों के विपरीत, आईडीएफ ने अल-मवासी में मानवीय क्षेत्र में हमला नहीं किया आईडीएफ ने यह भी सुझाव दिया कि हथियारों का छिपा हुआ भंडार घातक विस्फोटों का वास्तविक कारण हो सकता है।राफा में सुरक्षा सूत्रों ने पहले 'शिन्हुआ ' को बताया था कि इजरायली तोपखाने ने अल-मवासी क्षेत्र में विस्थापितों के लिए तंबुओं पर बमबारी की, जो एक मानवीय क्षेत्र है जहां विस्थापित गाजावासी आईडीएफ के आदेश के आधार पर शरण लेते हैं। स्थानीय चिकित्सा सूत्रों ने 'शिन्हुआ' को बताया कि बमबारी में महिलाओं और बच्चों सहित कम से कम 21 लोगों की मौत हो गई और दर्जनों घायल हो गए।

गाजा में स्वास्थ्य अधिकारियों ने एक बयान में कहा कि बमबारी में कम से कम 64 लोग घायल हो गए, जिनमें 10 की हालत गंभीर है।

यह घटना उत्तर-पश्चिमी राफा में विस्थापित नागरिकों के तंबुओं पर इजरायल के हवाई हमले के एक दिन बाद हुई, जिसके परिणामस्वरूप कम से कम 45 फिलिस्तीनियों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए।

सोमवार को इजरायली सांसदों को संबोधित करते हुए इजरायली प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने सोमवार के हवाई हमले को दुर्भाग्य से कुछ दुखद गलत हुआ कहा और त्रासदी की जांच करने का वादा किया।

'पाकिस्तान ने 1999 में वाजपेयी के साथ किए गए समझौते का 'उल्लंघन' किया', नवाज शरीफ ने 25 साल बाद मानी गलती

एजेंसी

लाहौर। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने स्वीकार किया कि इस्लामाबाद ने भारत के साथ 1999 में उनके और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा हस्ताक्षरित समझौते का 'उल्लंघन' किया है। उन्होंने जनरल परवेज मुशर्रफ द्वारा करगिल में किए गए हमले के स्पष्ट संदर्भ में यह बात कही। सत्तारूढ़ पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) का अध्यक्ष चुने जाने के बाद पार्टी की आम परिषद को संबोधित करते हुए शरीफ ने कहा, ''28 मई 1998 को पाकिस्तान ने पांच परमाणु परीक्षण किये। उसके बाद वाजपेयी साहब यहां आये और हमारे साथ समझौता किया। लेकिन, हमने उस समझौते का उल्लंघन किया...यह हमारी गलती थी।'' शरीफ और वाजपेयी ने यहां 21 फरवरी, 1999 को लाहौर समझौते पर हस्ताक्षर किए। दोनों देशों के बीच शांति और स्थिरता के दृष्टिकोण की बात करने वाले इस समझौते ने एक बड़ी सफलता का संकेत दिया, लेकिन कुछ महीने बाद जम्मू-कश्मीर के करगिल जिले में पाकिस्तानी घुसपैठ के कारण करगिल युद्ध हुआ। पाकिस्तान के परमाणु परीक्षण की 26वीं वर्षगांठ मनाने के बीच शरीफ ने कहा, ''राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने पाकिस्तान को परमाणु परीक्षण करने से रोकने के लिए पांच अरब अमेरिकी डॉलर की पेशकश की थी लेकिन मैंने इनकार कर दिया। अगर (पूर्व प्रधानमंत्री) इमरान खान जैसे व्यक्ति मेरी सीट पर होते तो उन्होंने क्लिंटन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया होता।''

नवाज शरीफ का फिर से पीएमएल-एन अध्यक्ष चुना जाना तय

एजेंसी

ढाका। नवाज शरीफ का फिर से पीएमएल-एन अध्यक्ष चुना जाना तय, छह साल पहले गंवाना पड़ा था पद लाहौर। पाकिस्तान के तीन बार प्रधानमंत्री रह चुके नवाज शरीफ फिर से सत्तारूढ़ पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) दल का अध्यक्ष चुना जाना तय है। पनामा पेपर मामले में उच्चतम न्यायालय के फैसले के बाद छह साल पहले उन्हें यह पद गंवाना पड़ा था।

डॉन अखबार की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि एक स्थानीय होटल में जनरल कौंसिल की बैठक होने वाली है। ब्रिटेन में चार साल के निर्वासन के बाद पिछले साल अक्टूबर में पाकिस्तान लौटे 74 वर्षीय नवाज के निर्विरोध चुने जाने की संभावना है। हालांकि पार्टी के 11 सदस्यों ने इस शीर्ष पद के लिए नामांकन पत्र प्राप्त किया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि पीएमएल-एन ने पहले 11 मई को जनरल कौंसिल की बैठक बुलाने की घोषणा की थी, लेकिन पाकिस्तान के परमाणु शक्ति बनने के 26 साल पूरे होने के जश्न के मौके पर इसे स्थगित कर दिया गया। पीएमएल-एन पंजाब के अध्यक्ष राणा सनाउल्लाह ने एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए संकेत दिया कि शरीफ बिना किसी विरोध के चुने जाएंगे।

एक सवाल के जवाब में सनाउल्लाह ने कहा कि अगर पार्टी का कोई सदस्य उनके खिलाफ चुनाव लड़ना चाहता है तो उसे आगे आना चाहिए।

स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज ने कहा- देश का मंत्रिमंडल फिलिस्तीन राष्ट्र को मान्यता देगा

एजेंसी

मैड्रिड। यूरोपीय संघ के इजराइल के साथ बढ़ते मतभेद के बीच स्पेन के प्रधानमंत्री पेड्रो सांचेज ने कहा कि उनके देश का मंत्रिमंडल बैठक में फलस्तीन राष्ट्र को मान्यता देगा। आयरलैंड और नॉर्वे भी बाद में फलस्तीन राष्ट्र को आधिकारिक तौर पर मान्यता देंगे। दर्जनों देशों ने फलस्तीन राष्ट्र को मान्यता दी है लेकिन किसी बड़े पश्चिमी देश ने ऐसा नहीं किया है। सांचेज ने मैड्रिड में प्रधानमंत्री आवास के द्वार पर खड़े होकर कहा, ''यह एक ऐतिहासिक फैसला है जिसका एकमात्र लक्ष्य है और यह लक्ष्य इजराइल और फलस्तीन के लोगों को शांति स्थापित करने में मदद करना है।

सांचेज के इस भाषण का टेलीविजन पर प्रसारण किया गया। समाजवादी नेता सांचेज ने पिछले सप्ताह संसद के समक्ष अपने देश के फैसले की घोषणा की थी। उन्होंने गाजा में संघर्ष विराम और मान्यता के लिए समर्थन जुटाने के मकसद से यूरोपीय और पश्चिम एशियाई देशों का दौरा किया था। यूरोपीय संघ के सदस्य आयरलैंड और स्पेन द्वारा फलस्तीन राष्ट्र को राजनयिक मान्यता देने की पूर्व संध्या पर यूरोपीय संघ और इजराइल के आपसी संबंध सोमवार को रसातल में पहुंच गए। मैड्रिड का कहना है कि दक्षिणी गाजा शहर रफह में लगातार हमलों के लिए इजराइल के खिलाफ

प्रतिबंधों पर विचार किया जाना चाहिए। इजराइली विदेश मंत्री इजराइल काट्ज ने स्पेन से कहा है कि यरूशलम में उसके वाणिज्य दूतावास को फलस्तीनियों की मदद करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। यूरोपीय संघ के विदेश नीति प्रमुख जोसेप बोरेल ने अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय का पुरजोर समर्थन किया है जिसके अभियोजक इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और हमास के नेताओं सहित अन्य के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट का अनुरोध कर रहे हैं। नॉर्वे ने फलस्तीन राष्ट्र को औपचारिक मान्यता देने से पहले सप्ताहांत में फलस्तीन सरकार को राजनयिक दस्तावेज़ सौंपे।

सांचेज ने कहा कि फलस्तीन राष्ट्र को मान्यता देने का निर्णय इजराइल समेत किसी के भी खिलाफ नहीं है। उन्होंने गाजा में स्थायी संघर्ष विराम, मानवीय सहायता सामग्री की आपूर्ति बढ़ाने और पिछले साल सात अक्टूबर को हमला करने के बाद हमास द्वारा बंधक बनाए गए लोगों को रिहा किए जाने का आह्वान किया। सांचेज ने फलस्तीनी राष्ट्रीय प्राधिकरण द्वारा शासित एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की जो एक गलियारे के माध्यम से वेस्ट बैंक और गाजा को पूर्वी यरुशलम से जोड़े। उन्होंने कहा, ''हम 1967 की सीमा रेखाओं में उन बदलावों को मान्यता नहीं देंगे जिन्हें लेकर पक्षकारों में सहमति नहीं हो।

जापान में पहली बार कोविड-19 एंटीबॉडीज़ दर 60 प्रतिशत हुयी

एजेंसी

टोक्यो। जापान के स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से किए गए दो हालिया सर्वेक्षणों के अनुसार यहां कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों में एंटीबॉडी पाए जाने की दर पहली बार 60 प्रतिशत से अधिक हो गई है। मंत्रालय ने इस साल मार्च में किए गए दो सर्वेक्षणों के नतीजे सोमवार को विशेषज्ञों के एक पैनल के सामने पेश किए। सभी आयु समूहों को कवर करने वाले सर्वेक्षण में एंटीबॉडी कब्जे की दर 60.7 प्रतिशत थी, जबकि देश भर में 16 से 69 वर्ष की आयु के रक्त दाताओं को लक्षित करने वाले एक अन्य सर्वेक्षण में, दर 64.5 प्रतिशत तक पहुंच गई।

सर्वेक्षण में सभी आयु समूहों को शामिल करते हुए 22 प्रान्तों में 3,947 लोगों के डेटा का विश्लेषण किया गया है।रिपोर्ट के अनुसार पांच से 19 वर्ष की आयु वालों के लिए, एंटीबॉडी दर 85 प्रतिशत से अधिक थी, जबकि 70 वर्ष और उससे अधिक आयु वालों के लिए यह दर 30 प्रतिशत की सीमा में थी।दूसरे सर्वेक्षण में जापान के सभी प्रान्तों में कुल 18,048 रक्त दाताओं को लक्षित किया। रिपोर्ट के अनुसार होक्काइडो और टोक्यो के सबसे उत्तरी प्रान्त सहित कुल 38 प्रान्तों में एंटीबॉडी दर 60 प्रतिशत से अधिक हो गई है। उच्चतम दर ओकिनावा के दक्षिणी प्रान्त में 77.6 प्रतिशत देखी गई और सबसे कम अकिता प्रान्त में 50 प्रतिशत देखी गई।

उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोंग उन की हुई किरकिरी, जासूसी उपग्रह लेकर जा रहे रॉकेट में हुआ विस्फोट

एजेंसी

सियोल। उत्तर कोरिया द्वारा देश के दूसरे जासूसी उपग्रह को अंतरिक्ष में तैनात करने के लिए छोड़े गए रॉकेट में उड़ान भरने के तुरंत बाद विस्फोट हो गया। सरकारी मीडिया ने यह जानकारी दी। यह उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन के लिए झटका है जो अमेरिका तथा दक्षिण कोरिया पर नजर रखने के लिए उपग्रहों को तैनात करने की उम्मीद कर रहे हैं। यह प्रक्षेपण ऐसे वक्त में विफल हुआ है जब दक्षिण कोरिया, चीन और जापान के नेताओं ने चार साल से अधिक समय बाद पहली त्रिपक्षीय बैठक के तहत सियोल में मुलाकात की।

उत्तर कोरिया का ऐसी उकसावे वाली कार्रवाई करना असामान्य है जब उसका प्रमुख सहयोगी चीन क्षेत्र में उच्च स्तरीय कूटनीतिक वार्ता कर रहा हो। उत्तर कोरिया के पड़ोसी देशों की आधिकारिक 'कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी' (केसीएनए) ने कहा

ने इस प्रक्षेपण की आलोचना की थी क्योंकि संयुक्त राष्ट्र ने उत्तर कोरिया पर ऐसा कोई प्रक्षेपण करने से प्रतिबंध लगा रखा है। उत्तर कोरिया कि उसने मुख्य उत्तरपश्चिमी अंतरिक्ष केंद्र से एक नए रॉकेट पर एक जासूसी उपग्रह छोड़ा। लेकिन उड़ान भरने के तुरंत बाद रॉकेट में संदिग्ध रूप से इंजन समस्या के कारण विस्फोट हो गया।

जापान के रक्षा मंत्री मिनोरू किहारा ने उत्तर कोरिया के प्रक्षेपण को ''पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर चुनौती'' बताया था। दक्षिण कोरिया ने उपग्रह प्रक्षेपण को ''उकसावे वाला कदम बताया था जिससे हमारी और क्षेत्रीय सुरक्षा को गंभीर खतरा पहुंचता है।

यह उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन के लिए झटका है जो अमेरिका तथा दक्षिण कोरिया पर नजर रखने के लिए उपग्रहों को तैनात करने की उम्मीद कर रहे हैं।

भारत की मेजर राधिका सेन को संयुक्त राष्ट्र के प्रतिष्ठित पुरस्कार से किया जाएगा सम्मानित

एजेंसी

संयुक्त राष्ट्र। कांगो में संयुक्त राष्ट्र मिशन में सेवा दे चुकी भारतीय महिला शांति रक्षक मेजर राधिका सेन को एक प्रतिष्ठित सैन्य पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने उन्हें ''सच्चा नेता और आदर्श'' बताया।

कांगो गणराज्य में संयुक्त राष्ट्र संगठन स्थिरीकरण मिशन में सेवा दे चुकीं मेजर सेन को 30 मई को अंतरराष्ट्रीय संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षक दिवस के मौके पर यहां विश्व निकाय के मुख्यालय में गुतारेस द्वारा प्रतिष्ठित '2023 यूनाइटेड नेशंस मिलिट्री जेंडर एडवोकेट ऑफ द ईयर अवार्ड' प्रदान किया जाएगा।

संयुक्त राष्ट्र की एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, मेजर सेन भारतीय त्वरित तैनाती बटालियन की कमांडर के तौर पर मार्च 2023 से अप्रैल 2024 तक

कांगो गणराज्य के पूर्व में तैनात थीं। हिमाचल प्रदेश में 1993 को जन्मी मेजर सेन आठ साल पहले भारतीय सेना में भर्ती हुईं। उन्होंने बायोटेक इंजीनियर के तौर पर स्नातक किया। जब उन्होंने सेना में शामिल होने का फैसला किया था, उस समय वह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) बंबई से परास्नातक की पढ़ाई कर रही थीं। वह मेजर सुमन गवानी के बाद इस प्रतिष्ठित पुरस्कार को पाने वाली दूसरी भारतीय शांति रक्षक हैं। मेजर गवानी ने दक्षिणी सूडान में संयुक्त राष्ट्र के मिशन में सेवा दी थी और उन्हें 2019 में इस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। मेजर सेन को उनकी सेवा के लिए बधाई देते हुए गुतारेस ने कहा कि वह एक ''सच्ची नेता और आदर्श हैं। उनकी सेवा समग्र रूप से संयुक्त राष्ट्र के लिए एक योगदान है।''

इस पुरस्कार की घोषणा के बाद मेजर सेन ने कहा, ''यह पुरस्कार मेरे लिए खास है क्योंकि यह कांगो गणराज्य के चुनौतीपूर्ण माहौल में काम कर रहे और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए अपना उत्कृष्ट योगदान दे रहे सभी शांतिरक्षकों की कड़ी मेहनत को पहचान देता है।'' अभी संयुक्त राष्ट्र के लिए काम करने वाली महिला सैन्य शांतिरक्षकों में भारत का 11वां सबसे बड़ा योगदान है।

बंगलादेश में चक्रवाती तूफान रेमल के कहर से पांच और लोगों की मौत

एजेंसी

ढाका। बंगलादेश की राजधानी ढाका में रात चक्रवाती तूफान रेमल के कारण अलग-अलग इलाकों में तेज हवाओं के साथ पेड़ उखड़ने और बिजली के खंभे गिरने से कम से कम पांच लोगों की मौत हो गयी। ढाका मेडिकल कॉलेज अस्पताल के पुलिस चौकी प्रभारी बच्चू मिया ने मौतों की पुष्टि की।

ढाका में रात को आए चक्रवाती तूफान रेमल का प्रभाव आज सुबह तक देखा गया और राजधानी में बारिश और तेज हवाएं चल रहीं है।राजधानी ढाका से लगभग 259 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में, खगराचारी जिले में चक्रवाती तूफान के कारण उखड़े हुए पेड़ों को हटाते समय आज तड़के एक अग्निशमन कर्मी की बिजली के तारों की चपेट में आने से मौत हो गयी। उल्लेखनीय है कि बंगलादेश का तटीय क्षेत्र तूफान की तेज़ हवाओं से प्रभावित हुआ है। चक्रवाती तूफान से पेड़ और घरों और इमारतों की छतें उड़ गईं और बड़े पैमाने पर बिजली और पानी की आपूर्ति बाधित हुई है। कथित तौर पर देश के दक्षिणी और दक्षिण-पूर्वी क्षेत्रों के कुछ हिस्सों में चक्रवाती तूफान से बाढ़ सुरक्षा तटबंध क्षतिग्रस्त हो गए हैं। देश के आपदा प्रबंधन और राहत राज्य मंत्री मोहम्मद मोहिबुर रहमान ने सोमवार को कहा कि चक्रवाती तूफान रेमल के बंगलादेश के समुद्र तट से टकराने और बाद में इसके कमजोर पड़ने के दौरान कम से कम 10 लोगों की मौत हो गयी।

हिंद महासागर और लाल सागर में तीन अमेरिकी, इजरायली जहाजों पर हमला

एजेंसी

सना। यमन के विद्रोही अंसार अल्लाह (हूती) आंदोलन ने हिंद महासागर और लाल सागर में तीन अमेरिकी और इजरायली व्यापारिक जहाजों तथा दो अमेरिकी विध्वंसक पोतों पर हमला किया। अलमासिरा ब्रॉडकास्टर ने हूती सैन्य प्रवक्ता याह्या सारी के हवाले से कहा, यमनी सशस्त्र बलों की नौसेना एवं मिसाइल बलों ने तीन संयुक्त अभियान चलाये। पहला हिंद महासागर में अमेरिकी जहाज लारेगो डेजर्ट के खिलाफ, दूसरा हिंद महासागर में इजरायली जहाज एमएससी मेचेला के खिलाफ और तीसरा लाल सागर में मिनर्वा लीसा के खिलाफ अभियान चलाया।

सऊदी अरब ने इज़रायल के 'निरंतर नरसंहार' की निंदा की

एजेंसी

काहिरा। सऊदी अरब ने दक्षिणी गाजा पट्टी में राफा पर घातक हवाई हमलों के बाद इजरायल की निंदा की है। सऊदी विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि रियाद ने राफा में असहाय फिलिस्तीनी शरणार्थियों के तंबुओं को निशाना बनाकर इजरायली कब्जे वाले बलों द्वारा फिलिस्तीनी लोगों के खिलाफ किए गए निरंतर नरसंहार की निंदा की है। मंत्रालय ने कहा कि राज्य इजरायल को राफा और पूरे कब्जे वाले फिलिस्तीनी क्षेत्रों में जो कुछ भी हो रहा है, उसके लिए पूरी तरह से जिम्मेदार ठहराता है, साथ ही सभी मानवीय संकल्पों, कानूनों और मानदंडों के निरंतर स्पष्ट उल्लंघन की निंदा करता है। कई अरब देशों ने रविवार को इजरायली हमले की निंदा की है, जिसमें राफा के पास विस्थापित लोगों के तंबूओं पर हमला किया गया था।

मोदी के चुनाव हारने पर भारत और पाकिस्तान के रिश्ते होंगे बेहतर: पाक नेतो

एजेंसी

दिल्ली। भारत में हो रहे लोकसभा चुनाव को लेकर पाकिस्तान के पूर्व मंत्री चौधरी फवाद हुसैन ने एक बार फिर अपनी प्रतिक्रिया दी है. पाक नेता ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उस बयान पर प्रतिक्रिया दी है, जिसमें उन्होंने विपक्षी दलों को पाकिस्तान की समर्थन बताया था. पाक नेता ने कहा कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और ममता बनर्जी के साथ होनी चाहिए, क्योंकि वो कट्टरपंथियों को हरा सके.

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in
R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

मोदी फिर सत्ता में आए तो हर एक विपक्षी नेता को गिरफ्तार कर लिया जाएगा : केजरीवाल

एजेंसी

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने पार्टी की नेता आतिशी की गिरफ़्तारी की आशंका व्यक्त करते हुए कहा कि अगर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फिर सत्ता में आए तो हर एक विपक्षी नेता को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। श्री केजरीवाल ने दिल्ली सरकार में मंत्री आतिशी को कोर्ट का समन मिलने पर 'एक्स' पर लिखा, मैंने पहले कहा था कि वह अगली बार आतिशी को गिरफ्तार करेंगे। वह अब ऐसा करने की योजना बना रहे हैं। पूर्णतः तानाशाही। पूरी तरह से कमजोर, तुच्छ और झूठे मामलों में वह एक-एक करके 'आप' के सभी नेताओं को गिरफ्तार कर रहे हैं। अगर मोदी जी दोबारा सत्ता में आए तो हर एक विपक्षी नेता को गिरफ्तार कर लिया जाएगा आप महत्वपूर्ण नहीं है, अपने प्यारे देश को तानाशाही से बचाना महत्वपूर्ण है।उल्लेखनीय है कि मानहानि मामले में सुश्री आतिशी को अदालत से समन मिलने पर श्री केजरीवाल ने उनकी गिरफ़्तारी की आशंका जताई है।

किसान मसीहा 'भारत रत्न' चौधरी चरण सिंह की पुण्यतिथि पर दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। भारत सरकार के पूर्व प्रधानमंत्री और किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह की बुधवार को 37वीं पुण्यतिथि है। उनके चाहने वालों और आरएलडी कार्यकर्ताओं ने इस मौके पर उन्हें याद किया और भावभीनी श्रद्धांजलि दी। आरएलडी प्रमुख और चौधरी चरण सिंह के पोते जयंत चौधरी ने किसान घाट पर हवन पूजन कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर उन्हें नमन करने भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ भी पहुंचे। उपराष्ट्रपति ने किसान घाट पहुंचकर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि पूर्व प्रधानमंत्री और भारत रत्न चौधरी चरण सिंह को अर्पित की। चौधरी चरण सिंह की पुण्यतिथि के अवसर पर किसान घाट स्थित उनके समाधि स्थल पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में राष्ट्रीय लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सांसद चौधरी जयंत सिंह ने 'चौधरी साहब' को याद करते हुए सपरिवार उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके साथ ही हवन पूजन भी किया गया।

कांग्रेस ने किया मणिशंकर के बयान से किनारा, कहा 1962 का चीनी आक्रमण वास्तविक था

नई दिल्ली । कांग्रेस पार्टी ने एक बार फिर से स्वयं को मणिशंकर अय्यर के विवादित बयान से अलग कर लिया है। मणिशंकर अय्यर ने कहा था कि 1962 में चीनियों ने 'कथित' तौर पर भारत पर आक्रमण किया था। कांग्रेस ने जहां इस बयान से खुद को अलग कर लिया, वहीं इस बयान के तूल पकड़ने के बाद मणिशंकर अय्यर ने भी 'कथित आक्रमण' वाले अपने बयान को लेकर माफी मांगी है। गौरतलब है कि लोकसभा चुनाव के लिए आखिरी दौर का मतदान 1 जून को होना है। मतदान के इस आखिरी दौर से पहले एक बार फिर मणिशंकर अय्यर के विवादित बयान की एंट्री हुई। मणिशंकर अय्यर ने दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि 1962 में चीनियों ने 'कथित' तौर पर भारत पर आक्रमण किया था। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने इस मसले पर कहा कि मणिशंकर अय्यर ने बाद में गलती से कथित आक्रमण शब्द का उपयोग करने के लिए बिना शर्त माफी मांगी है।

मंडावली थाने के पास पार्किंग में लगी आग, 17 कारें राख

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के मंडावली थाने के पास पार्किंग में बीती रात आग लग गई। सूचना मिलते ही दमकल की टीम मौके पर पहुंची। घंटों की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। तब तक पार्किंग में खड़ी 17 कारें राख हो चुकी थीं। दमकल विभाग के मुताबिक, मंगलवार देररात 1: 17 बजे मंडावली थाना के पास पार्किंग में आग लगने की सूचना मिली। सूचना मिलते ही दमकल की टीम को मौके पर भेजा गया। आग की गंभीरता को देखते हुए दमकल की 9 गाड़ियों का इस्तेमाल किया गया और घंटों की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। दमकल अधिकारी का कहना है कि इस आग में पार्किंग में खड़ी 17 कार जल गईं। फिलहाल आग लगने की वजह साफ नहीं हो पाई है। जांच के बाद ही आग लगने की वजह का पता चल पाएगा। बीती रात उत्तम नगर इलाके के एक बिजली के खंभे पर भी आग लग गई । गनीमत रही की आग फैलने से पहले उसे पर काबू पा लिया गया। इसी क्रम में तड़के सुबह करीब चार बजे चांदनी चौक स्थित फतेहपुरी मस्जिद के पास कुछ दुकानों में आग लग गई। खबर मिलते ही दमकल की चार गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। राहत की बात यह रही कि सभी घटनाओं में किसी के हताहत होने की कोई सूचना नहीं है। फिलहाल पुलिस सभी मामलों की जांच कर रही है।

सोनिया से मिले रेवंत रेड्डी, तेलंगाना आने का दिया आमंत्रण

एजेंसी

दिल्ली। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए. रेवंत रेड्डी ने कांग्रेस की शीर्ष नेता सोनिया गांधी से मुलाकात की और उन्हें 2 जून को हैदराबाद में आयोजित होने वाले राज्य स्थापना दिवस समारोह में आमंत्रित किया।

रेवंत रेड्डी ने राष्ट्रीय राजधानी में सोनिया गांधी से उनके आवास पर मुलाकात की और तेलंगाना के लोगों की ओर से निमंत्रण दिया। मुख्यमंत्री ने बाद में मीडियाकर्मियों को बताया कि सोनिया गांधी ने निमंत्रण पर सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है।

उन्होंने कहा कि राज्य मंत्रिमंडल ने सोनिया गांधी को तेलंगाना स्थापना दिवस समारोह में आमंत्रित करने और राज्य के गठन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए उन्हें सम्मानित करने का निर्णय लिया था।

रेवंत रेड्डी ने कहा कि स्थापना दिवस तेलंगाना के लोगों के लिए एक बड़ा त्योहार है और वे सोनिया गांधी को तेलंगाना राज्य के 10 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में समारोह में भाग लेते हुए देखना चाहते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आलोचना करते हुए रेवंत रेड्डी ने कहा कि उन्हें (पीएम मोदी) चुनावों के दौरान पाकिस्तान की याद आती है। उन्होंने पूछा कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के जन्मदिन में कौन शामिल हुआ था। मुख्यमंत्री ने कहा कि नरेंद्र मोदी पाकिस्तान गए थे और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री को गले लगाया था। उन्होंने कहा कि जब महंगाई, बेरोजगारी, एससी, एसटी और ओबीसी आरक्षण खत्म करने और संविधान में बदलाव जैसे मुद्दे उठाए जाते हैं, तो भाजपा को पाकिस्तान याद आ जाता है। उन्होंने मांग की कि भाजपा पिछले 10 सालों का देश का प्रगति कार्ड जारी करे। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा पिछले 10 सालों की विफलताओं को छिपाने के लिए गांधी परिवार को निशाना बना रही है। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस ने कभी भी प्रधानमंत्री या प्रधानमंत्री कार्यालय का अनादर नहीं किया। रेवंत रेड्डी ने कहा कि भाजपा उन सीटों पर भी जीतने का दावा कर रही है, जहां वह अपनी जमानत भी नहीं बचा पाएगी। उन्होंने विश्वास जताया कि केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनेगी।

चंद्रा ने की गूगल के मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी से मुलाकात

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय में सचिव अपूर्व चंद्रा ने गूगल के मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी से मुलाकात की और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्रों में अधिक सहयोग की आवश्यकता और डिजिटल स्वास्थ्य उपकरणों के बारे में जागरूकता फैलाने पर जोर दिया।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने यहां बताया कि श्री चंद्रा के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने जिनेवा में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) की 77वीं विश्व स्वास्थ्य सभा के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम में गूगल की मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. कैरेन डिसाल्वो के साथ मुलाकात की। इस बैठक का उद्देश्य डिजिटल स्वास्थ्य उपकरणों को लोगों के लिए अधिक सुलभ बनाने को गूगल रिसर्च और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के बीच चल रही भागीदारी पर चर्चा करना था।

केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में संभावित सहयोग की तलाश करने की आवश्यकता जताई और प्राधिकरण के अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. बसंत गर्ग भी उपस्थित थे।

ऑटोमेटेड रेटिनल डिजीज असेसमेंट (एआरडीए) जैसे अधिक डिजिटल स्वास्थ्य उपकरण बनाने को कहा।

इस अवसर पर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव हेकाली झिमोमी, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की अतिरिक्त सचिव एवं प्रबंध निदेशक (एनएचएम) आराधना पटनायक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य

आरपीएफ के दो जवानों पर हमला, दो हमलावर धरे गए

नई दिल्ली। मोती नगर थाना पुलिस ने एक नाबालिग समेत दो आरोपियों को धर दबोचा है। उन्होंने रेलवे पुलिस फोर्स (आरपीएफ) के दो जवानों पर सर्जिकल ब्लेड से हमला किया था। पश्चिमी जिले के डीसीपी विचित्र वीर ने मामले की जानकारी देते हुए बताया कि 26 मई को कनॉट प्लेस के नॉर्दर्न हॉस्पिटल से एक सूचना पुलिस को मिली थी। बताया गया कि आरपीएफ के कांस्टेबल घायल हालत में अस्पताल में भर्ती कराए गए हैं। जब वह ड्यूटी पर थे, उन पर हमला किया गया। सूचना मिलने के बाद सब इंस्पेक्टर मोहित सिंह अस्पताल पहुंचे तो वहां पर दोनों कांस्टेबल से मुलाकात हुई, जिनकी पहचान मनजीत और विकास के रूप में हुई। पूछताछ में पता चला कि उन पर तीन आरोपितों ने सर्जिकल ब्लेड से हमला किया है। पुलिस टीम ने केस दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस टीम ने घटनास्थल पर पूछताछ कर आरोपितों के बारे में पता लगाया। फिर जखीरा झुग्गी और नेहरू नगर झुग्गी से एक नाबालिग समेत दो को धर दबोचा।

चार जून को युवा बांसुरी स्वराज जीतने जा रही है बड़े अन्तराल से: चरणजीव मल्होत्रा

नई दिल्ली। दिल्ली की सभी सातों लोकसभा सीटों में से सबसे ज्यादा अंतराल से चुनाव जीतेगी युवा बांसुरी स्वराज, ऐसा कहना है दिल्ली के प्रतिष्ठित समाजसेवी व गौमाता रक्षा एवं करोना योद्धा चरणजीव मल्होत्रा का। 25 मई को दिल्ली की सभी सातों लोकसभा सीटों के लिए हुए मतदान पर बात करते हुए चरणजीव मल्होत्रा ने कहा की मैं आपको जमीनी स्तर की सच्चाई बताऊ तो मतदान बहुत ही ज्यादा अच्छा हुआ है, भाजपा और युवा बांसुरी स्वराज के पक्ष में हुआ है। चरणजीव मल्होत्रा ने कहा की दिल्ली में मतदान के दिन जनता का उत्साह देखने लायक था, एक भारतीय होने के नाते मुझे यह देख कर बेहद खुशी हुई की जनता अपने मतदान के अधिकार के लिए कितनी जागरूक है। चरणजीव मल्होत्रा ने आगे कहा की दिल्ली में मतदान के दिन दिल्ली की जनता भाजपा शासित केंद्र सरकार के कार्यों से बहुत खुश और संतुष्ट

दिखाई दी और भाजपा के जनहित के कार्यों से खुश हो कर दिल्ली की जनता ने भाजपा के पक्ष में, भाजपा को जिताने के लिए मतदान किया है।

चरणजीव मल्होत्रा ने आगे नई दिल्ली लोकसभा सीट पर बात करते हुए कहा की मतदान से पहले चुनाव प्रचार के दौरान युवा बांसुरी स्वराज एक मजबूत प्रत्याशी दिख रही थी और अब दिल्ली में मतदान होने के बाद युवा बांसुरी स्वराज जीत के प्रबल दावेदार दिख रही है। चरणजीव मल्होत्रा ने आगे कहा कि दिल्ली में मतदान वाले दिन 25 मई को नई दिल्ली की जनता ने भाजपा और युवा बांसुरी स्वराज के पक्ष में जमकर मतदान किया है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि भाजपा दिल्ली की सभी सातों लोकसभा सीट तो जीतेगा ही लेकिन जो सीट भाजपा सबसे ज्यादा मतों से जीतेगा वो नई दिल्ली लोकसभा क्षेत्र की सीट होगी और जो प्रत्याशी सबसे अधिक मतों से चुनाव जीतेगी वो प्रत्याशी युवा बांसुरी स्वराज होगी।

चरणजीव मल्होत्रा ने कहा कि आम आदमी पार्टी प्रत्याशी सोमनाथ भारती हार का डर, हताशा और निराशा का प्रमाण है। सच यह है कि सोमनाथ भारती किसी भी तरह भाजपा प्रत्याशी युवा बाँसुरी स्वराज के व्यक्तित्व का मुकाबला नहीं कर पाए हैं सोमनाथ भारती को पहले से डर सता रहा था और इसी कारण चुनाव-प्रचार कम करते दिखे है।

चरणजीव मल्होत्रा ने मतदाताओं से कहा कि लोकसभा का 7वां चरण व अंतिम चरण 1 जून को होना तय है अपना मतदान अवश्य करें। व्यर्थ न करें, कि वह अपना वोट %इंडिया' गठबंधन के घटक दलों के पक्ष में डालकर बर्बाद ना करें, क्योंकि विपक्षी गठबंधन का चुनावी भविष्य विरोधाभासों से भरा हुआ है। चरणजीव मल्होत्रा ने विश्वास जताया कि अब की बार 400 पार, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भारी जनादेश के साथ केंद्र में तीसरी बार सरकार बनाएंगे।

हरियाणा से पानी नहीं छोड़ने से लगातार गिर रहा यमुना का जल स्तर: आतिशी

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली की जल मंत्री आतिशी ने कहा कि हरियाणा सरकार की ओर से दिल्ली के हिस्से का पानी रोकने की वजह से यमुना का जल स्तर लगातार घट रहा है।

सुश्री आतिशी ने जल संकट से बचने के लिए दिल्लीवासियों से कुछ एहतियात बरतने की अपील की। उन्होंने कहा कि सबको पता है कि दिल्ली अपनी पानी की आपूर्ति के लिए यमुना नदी पर निर्भर है। यमुना में कितना पानी आता है, यह हरियाणा पर निर्भर करता है। हरियाणा जितना पानी छोड़ेगा, उतना यमुना में आएगा। जब से मई का महीना शुरू हुआ है, हरियाणा ने यमुना में पानी छोड़ना बंद कर दिया है। एक मई से लगातार यमुना का जल स्तर गिर रहा है। एक मई को यमुना जल स्तर 674.5

फीट था। यमुना का जल स्तर औसतन 674.5 फीट लगातार बनाए रखना होता है। अगर हम 2023 के अप्रैल, मई और जून महीने में देखे तो वजीराबाद में 674.5 फीट का जल स्तर हमेशा बना रहा लेकिन इस साल एक मई से ही हरियाणा ने दिल्ली को अपने हिस्से का पानी देना कम कर दिया है और यमुना का जल स्तर लगातार गिर रहा है।उन्होंने बताया कि एक मई को यमुना का जल स्तर वजीराबाद पर 674.5 फीट था जबकि एक सप्ताह में आठ मई तक जल स्तर गिरकर 672 फीट पर आ गया। पानी का स्तर लगातार गिरता रहा और 20 मई को जल स्तर 671 फीट पर आ गया, जबकि 24 मई तक जल स्तर 670.2 फीट पर आ गया और 28 मई को जल स्तर 669.8 फीट पर आ गया है।

सुश्री आतिशी ने कहा कि जिन इलाकों में दिन में दो बार पानी आ रहा है, वहां पर एक बार का पानी काटने से लोगों को परेशानी होगी, लेकिन सभी दिल्लीवासियों से अपील है कि हम सब केवल अपने बारे में न सोचें, बल्कि सभी दिल्लीवालों के बारे में सोचें।

चाहे आपके इलाके में पानी की समस्या हो या न हो, लेकिन आप पानी का इस्तेमाल बहुत तर्क संगत करें। अपनी गाड़ियों को खुली पाइप से न धोएं, कहीं पर पानी की सप्लाई का इस्तेमाल गाड़ियां धोने में न करें।जितना संभव हो सके, घर में इस्तेमाल होने वाले पानी बर्बाद होने को बचाएं।

आयुर्वेद के भविष्य के लिए 'प्रगति-2024' शुरू

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद ने 'प्रगति-2024' (आयुर्ज्ञान और तकनीकी नवाचार में फार्मा अनुसंधान) कार्यक्रम का शुभारंभ किया जो आयुर्वेद के विस्तार और विकास के लिए समर्पित है।आयुष मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कोटेचा ने इस अवसर पर आयुर्वेद के विकास में उद्योग की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने इस क्षेत्र के विस्तार और उन्नति के लिए उद्योगों की अपार संभावनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि नए चिकित्सकों और स्टार्टअप्स के आने से विकास के जबरदस्त अवसर मिलेंगे।उन्होंने कहा कि भारत और दुनिया भर में आयुष उत्पादों, विशेष रूप से आयुर्वेद की बढ़ती लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है।

कांग्रेस की राजकोट अग्निकांड की उच्च न्यायालय के न्यायाधीश से जांच कराने की मांग

नई दिल्ली। कांग्रेस ने गुजरात के राजकोट गेम जोन में आग लगने की घटना के लिए राज्य की भाजपा सरकार को जिम्मेदार ठहराते हुए इस घटना की उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय के मौजूदा न्यायाधीश से जांच कराने की मांग करते हुए पीड़ितों को उचित आर्थिक सहायता देने और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग की है। कांग्रेस के राज्यसभा सांसद तथा पार्टी के गुजरात प्रदेश अध्यक्ष शक्तिसिंह गोहिल ने यहां पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि राजकोट के एक गेम जोन में आग लगने से 31 लोगों की दर्दनाक मौत की वजह भाजपा सरकार और उसके बड़े अधिकारियों की लापरवाही है। इस गेम जोन में फायर सेफ्टी, आने-जाने के अलग रास्ते, आवासीय क्षेत्र से दूरी जैसे किसी भी सुरक्षा नियम का पालन नहीं किया गया था। उनका कहना था कि वह अत्यंत दर्दनाक घटना है और उच्च न्यायालय या उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश से इसकी जांच कराई जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि राजकोट में इतना भयावह हादसा होने के बाद भी सरकार गंभीर नहीं है। लोगों के जान-माल की सुरक्षा की जिम्मेदारी सरकार की होती है लेकिन आज सरकार ही इसके साथ खिलवाड़ कर रही है। खुद बड़े-बड़े अधिकारियों का ही इस गेम जोन में जब आना-जाना हो तो फिर छोटे अधिकारियों को सस्पेंड कर सरकार क्या साबित करना चाहती है। कांग्रेस सांसद ने कहा गुजरात के राजकोट में हुआ हादसा, पहला हादसा नहीं है। सूरत में एक एजुकेशन इंस्टीट्यूट में 22 बच्चों की जान चली गई थी। सूरत में पीड़ित परिवारों ने कहा कि हमें आज तक न्याय नहीं मिला लेकिन राजकोट के बच्चों को न्याय मिलना चाहिए। इसी तरह, वडोदरा में नाव डूबने से 14 बच्चों की जान चली गई। उस मामले में भी कोई एक्शन नहीं लिया गया। बनासकांठा में ब्रिज गिरने से कई लोगों की जान चली गई। जो कंपनी ये ब्रिज बना रही थी उसे पहले भी ब्लैकलिस्ट किया गया था। लेकिन जैसे ही उसने भाजपा को चंदा दिया, उसे ये ब्रिज बनाने का काम मिल गया। उन्होंने आरोप लगाया गुजरात सरकार में अच्छे और ईमानदार अफसरों को अलग कर, सरकार की जी-हुजूरी करने वालें अफसरों को जगह दी गई है।

NAME CHANGE
I, Namrita Sharma W/o Mahinder Singh R/o H.No-2582, 2nd Floor, Block-H, Sainik Colony, Sector-49, Faridabad, Haryana-121001, Have Changed My Name To Namrita Singh For All Future Purpose

NAME CHANGE
I, Vikram Singh R/o Gamri Gohana Sonipat-131301, Haryana, have changed my minor son's name from Vinay to Vinay Singh for all future purposes.

NAME CHANGE
I, Anju W/o Rakesh Kumar R/o Plot No-09, Kh No-85/21/3 P P No-0749, Krishana Vihar, Nagafgarh, South West Delhi, Delhi-110043, Have Changed My Name To Anju Yadav For All Purpose.

NAME CHANGE
I, Parveen Gudimani W/o Abhijit Shivappa Gudimani R/o D-38,1st Floor, Suncity Sector-54, Gurgaon, Haryana-122011, Have Changed My Name To Parveen Grewal Gudimani For All Future Purpose

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, REHAN AZIM S/o MOHD AZIM, residing at 274, Aslam Manzil, Flat No. B-204, Okhla village, Jamia Nagar, Okhla, New Delhi-110025, declare that name of my father has been mistakenly written as MOHAMMAD AZIM in my passport. The actual name of my father is MOHD AZIM which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, RAFAT NAIYAR W/O REHAN AZIM, residing at 274, Aslam Manzil, Flat No. ?- 204, Okhla Village, Jamia Nagar, Okhla, New Delhi-110025, have changed my name RAFAT to RAFAT NAIYAR for all purpose in future.

NAME CHANGE
I, RAJENDER KUMAR S/o JAGRAM SHARMA R/o H.NO. 99 Village Samalka, Delhi- 110037, have changed my name from RAJENDER KUMAR to RAJENDER KUMAR VATS for all future purposes.

NAME CHANGE
I, INDRESH KUMAR S/O JAMAN LAL RESIDING AT DAIRY NO-62 3RD FLOOR MASOODPUR VASANT KUNJ DELHI-110070 HAVE CHANGED MY NAME TO INDRESH KUMAR GAMBHIR FOR ALL FUTURE PURPOSES

NAME CHANGE
I, ASHA RANI W/O INDRESH KUMAR GAMBHIR RESIDING AT DAIRY NO-62 3RD FLOOR MASOODPUR VASANT KUNJ DELHI-110070 HAVE CHANGED MY NAME TO ASHA RANI GAMBHIR FOR ALL FUTURE PURPOSES

NAME CHANGE
I, FIROZA BEGAM W/O SHEIKH MOHD ALI residing at RZB-157 NIHAR VIHAR, NANGLOI DELHI-110041 have changed my name to FIROZA BEGUM for all future purposes

NAME CHANGE
I, RAMJANI KAHN S/O DEEN MOHAMMAD residing at HEAD POST OFFICE KE SAMNE, KARNAL GANJ, GUNA, MADHYA PRADESH-473001 have changed my name to RAMZANI KHAN for all future purposes

NAME CHANGE
I, RAMKHELAWAN SHARMA S/O KARU MISHTRI RESIDING AT C-112 KARAN VIHAR PART 5 KIRARI SULEMAN NAGAR DELHI-110086 HAVE CHANGED MY NAME TO RAM KHILAWAN FOR ALL FUTURE PURPOSES

NAME CHANGE
I, NEETU w/o SHRI SHAMSHER resident of FLAT NO.101, PLOT NO.42A SHYAM VIHAR, PHASE-1, D-BLOCK, DEENPUR, NAJAFGARH, NEW DELHI-110043 have lost my 1M.A Yogacharya (Master Degree in yogic Science) (SEM-III), Examination, Enrolment No. H-17671039 Roll No. 19YF611.

PUBLIC NOTICE
This is to inform that Sh. Vijay Kumar Agnihotri has agreed to create mortgage the described property in favour of my client Aadhar Housing Finance Limited, Laxmi Nagar Branch, Delhi, after execution of sale deed in his favour. Seller(s) Namely Smt. Meena Devi has agreed to sell their property "Built Up House on Free Hold Vacant Plot Area Measuring 50 Sq. Yds., Out of Khasra No.400, Situated at Azad Vihar, Khoda Colony, Pargana Loni, Tehsil and District Ghaziabad U.P.". Hence any other co-sharer(s) namely Sh. Surender, Sh. Rajesh Kumar, Sh. Brij Lal, Sh. Ajit Kumar, Sh. Rajesh Kumar, Sh. Brijender Singh, Sh. Sudhir Kumar Gupta or any previous owners of the property, having any claim against or in respect of the said property or any part thereof by way of sale, exchange mortgage (equitable or deposit of title deed otherwise), gift, trust, inheritance, family arrangement, maintenance, bequest, partnership, possession, lease, Sub- lease, tenancy, license, lien, charge, pledge, easement or otherwise howsoever are hereby requested to notify the same in writing to the Undersigned with supporting documentary evidence at the address mentioned herein below within 7 days, from the date hereof, falling which the claim or claims, if any, of such person(s) shall be considered to have been waived and / or abandoned any my client shall proceed with the disbursement of loan and creation of mortgage on the property.
Dated : 29-05-2024
Place : Delhi
Advocate Ghanshyam Singh, Ch. E-713 Karkardooma Courts, Delhi-110032; Ph-8810212071.

NAME CHANGE
It is for general information that I SHUBHAM RAJ S/o SATISH KUMAR R/o RZ-371/4, First Floor, Gali No.-10, Raj Nagar-2, Palam Colony, New Delhi-110077 declare that name of my mother has been wrongly written as KIRAN SINHA in my 10th and 12th educational documents and Passport No. X4993746. The actual name of my mother is KIRAN KUMARI.

NAME CHANGE
I, Akram Parvez s/o Aas Mohammad R/o 2239, Gali Dakotan Wali, Turkman Gate, Delhi-110006 have changed my name to Mohd Akram Parvez permanently

NAME CHANGE
I, Shabana w/o Mohd Akram Parvez R/o 2239, Gali Dakotan Wali, Turkman Gate, Delhi-110006 have changed my name to Rahmat permanently

PUBLIC NOTICE
To Whom so ever it may concern
That my client Sarfuddin S/o Niyazuddin R/o E-137/2, Street No.27, Abul Fazal Enclave-2, Jamia Nagar, South Delhi, Delhi-110025 have severed all relations with his brother named Muzammil Alam S/o Niyazuddin R/o E-136/2, Abul Fazal Enclave-2, Jamia Nagar, South Delhi, Delhi-110025 along-with his wife due to their bad temperaments and disobedient habits. My above-named client has also disowned and debarred the above-mentioned individuals from all of their movable and immovable properties in all manners possible. Anyone dealing with 1 them will do at his/her own risk and responsibility. My client will not be responsible for any act and deed done by any of the above-mentioned individuals.
A. F. Faizi Advocate
Ch. No. 295, Patiala House Court New Delhi 110001

PUBLIC NOTICE
General public is hereby informed that my client Munni Devi, W/o. Lt. Ashok Kumar, 14/199, Dakshin Puri Extension, Pushpa Bhawan, S.O, South Delhi, Delhi 110062., has served all her relations with her son i.e., Amit Kumar and his wife Rakhi and also debarred/disowned them socially, morally and from her properties due to their misbehaviour, cruelty and non- compliance towards my client. Anybody dealing with Amit Kumar and his wife Rakhi will do so at his/her/their own risk and responsibilities and my clients will not be responsible for any act, deed or dealing done by Amit Kumar and his wife Rakhi.
SUDHIR KUMAR CHOUDHARY
ADVOCATE
Seat No 59, Civil Bar Room No.1, Tis-Hazari Courts, Delhi-54

सार्वजनिक सूचना
आम जनता को सूचित किया जाता है कि श्रीमती आशा पत्नी श्री बलदेव एक भूमि जिसका क्षेत्रफल 0 कनाल 15 मरला 180 यानी (450 वर्ग गज), खेवट नंबर 57, खाता नंबर 63, मुस्तलिल नंबर 35, किला नंबर 11/3(0-15), गांव स्वामीका, तहसील हथीन और जिला पलवल, हरियाणा में स्थित है और उक्त संपत्ति डॉवेल फिस्कल सर्विसेज प्रा. लिमिटेड कि शाखा पलवल के द्वारा वित्तपोषित की जाएगी और उक्त संपत्ति के मूल पंजीकृत वसीयत दिनांक 09.03.2004 पंजीकृत संख्या 145 खो गई है और जिसका ऑनलाइन एफआईआर आवेदन संख्या 13260042240053 को हरियाणा पुलिस में दर्ज की गई है यदि किसी व्यक्ति(ओं) के पास उक्त मूल बिक्री दस्तावेज़ है, तो कृपया निम्नलिखित पते पर इस सूचना की तारीख से 07 दिनों के भीतर मूल संपत्ति दस्तावेज़ के साथ अधीनस्थ व्यक्ति से संपर्क करें, अन्यथा, उक्त विक्रय दस्तावेज़ के आधार पर विषयवस्त संपत्ति के संबंध में दावा नाकारात्मक और अमान्य ठहराया जाएगा।
[ASHWANI KUMAR] Advocate
Chamber No. 122, Tehsil Compound, Ghaziabad, U.P.

NAME CHANGE
I, Rahul Gudimani S/o Abhijit Shivappa Gudimani R/o D-38,1St Floor, Golf Course Road, Suncity, Sector, Gurgaon, Haryana-122011, Have Changed My Name To Rahul Grewal Gudimani For All Future Purpose

NAME CHANGE
I, NISHANT KALIYA, S/o. SHRI RAJEEV KALIA, R/o. FLAT NO. A-803, CROWN APARTMENT, PLOT NO-18-B, SECTOR-7, DWARKA, NEW DELHI-110075, have changed my name from NISHANT KALIYA to NISHANT KALIA for all future purpose.

सार्वजनिक सूचना
आम जनता को यह जानकारी दी जाती है कि हमारी ग्राहक श्री राज कुमार फ्रोहोल्ड आवासीय संपत्ति संख्या जे-281/39, क्षेत्रफल 60 वर्ग गज, खसरा संख्या 764 के मालिक हैं, जो ग्राम घोंडा गुजरान खादर में, गली नंबर 6, जे-ब्लॉक, विजय कॉलोनी, करतार नगर, दिल्ली-110053 की आबादी में स्थित है। नोटरीकृत फैमिली जीपीए के आधार पर दिनांक 20.09.2011 और वसीयत का पंजीकृत विलेख दिनांक 20.09.2011 को एसआर-IV, सीलमपुर, नई दिल्ली के कार्यालय में विधिवत पंजीकृत, दस्तावेज़ संख्या 799, खंड संख्या 3485, पुस्तक संख्या 3, पृष्ठ 178 पर। -179,. अब हमारा ग्राहक घोषणा कर रहा है कि किसी अन्य व्यक्ति का उक्त संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं है, और संपत्ति भी श्री अरुण कुमार बेची गई है, जिसे पीरामल कैपिटल एंड हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड शाखा- रोहिणी, दिल्ली द्वारा वित्तपोषित किया गया है। यदि किसी भी व्यक्ति को उक्त संपत्ति में अधिकार@स्वामित्व या हित के संबंध में कोई आपत्ति या दावा है तो इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 07 दिनों के भीतर हमसे संपर्क करें या उसी को संपर्क करें। यदि किसी को मिला तो अधोहस्ताक्षरित। इसके बाद किसी भी दावे पर विचार नहीं किया जाएगा।
Naveen Kumar Verma (advocate)
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

पर्यावरण संरक्षण के लिए जीव सुरक्षा भी अत्यंत आवश्यक : बिश्नोई

एजेंसी

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय ने गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांत के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए 'पक्षियों को पानी की सेवा' अभियान चलाया है। विश्वविद्यालय में यह अभियान यूथ रेडक्रॉस के सौजन्य से चलाया गया। अभियान की शुरुआत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की। कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए जीव सुरक्षा भी अत्यंत आवश्यक है। जीवों में भी पक्षी पर्यावरण के मित्र हैं तथा विपरीत मौसम व बदलती वातावरणीय परिस्थितियों में पक्षियों व जानवरों की सुरक्षा की महत्ता और अधिक बढ़ जाती है। उन्होंने कहा कि बढ़ती हुई गर्मी से चाहे मनुष्य या पक्षी या अन्य जानवर हो, सभी पर प्रभाव पड़ता है। ऐसे में यदि पानी की उचित व्यवस्था हो जाए तो विशेषकर पक्षियों एवं जानवरों के लिए बहुत अच्छा होगा जिससे वे इस गर्मी में राहत महसूस करेंगे।कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार, स्वयंसेवकों तथा अभियान से जुड़े सदस्यों को अपने घरों तथा आसपास पक्षियों व जानवरों के लिए दाना-पानी रखने के लिए भी प्रोत्साहित किया। उन्होंने इस अभियान के लिए यूथ रेडक्रॉस की सराहना की। उन्होंने सकोरों में पानी डालकर इस पुण्य अभियान की शुरुआत की।

बडौली ने अपनी ही पार्टी नेताओं पर भीतरघात का आरोप लगाया

सोनीपत। लोकसभा सोनीपत के भाजपा के उम्मीदवार मोहनलाल बडौली ने जिला अध्यक्ष कार्यालय में पत्रकार वार्ता करके अपनी ही पार्टी के नेताओं पर भीतरघात का आरोप लगाया। पार्टी के ही लोगों ने पार्टी के खिलाफ जाकर कांग्रेस के लिए काम किया है। उन्होंने कहा कि समय आने पर भीतरघात करने वालों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई होगी। नेताओं की ऑडियो वीडियो सामने आई हैं और उन्होंने भाजपा पार्टी में रहते हुए कांग्रेस से कार्यकर्ता के रूप में काम किया है। उन्होंने दावा किया है कि है कि पार्टी के खिलाफ विधायक, सांसद और अधिकारियों, नौकरशाहों ने भी कांग्रेस की मदद की है। पांच अधिकारियों की पहचान की जा चुकी है। पूरे मामले को लेकर प्रदेश के मुख्यमंत्री के सामने समीक्षा बैठक के यह सबूत के साथ रखी जाएगी। देश में नेहरू और जिन्ना दो प्रधानमंत्री बनना चाहते थे और उस वक्त देश का बंटवारा हुआ था। इंडिया गठबंधन पर मोहनलाल बडौली ने कहा अभी तक के प्रधानमंत्री का चेहरा तय नहीं कर पाए हैं।ज्यादा से ज्यादा मतदान करने के लिए प्रयास करने वाली संस्थाओं और राजनीति लोगों अभी आभार व्यक्त किया है। मोहनलाल बडौली ने कहा कि सभी पार्टी के लोगों का धन्यवाद करता हूं कि मर्यादित ढंग से लोकतंत्र के चुनाव में अपनी हिस्सेदारी की है।

रबड़ फैक्ट्री में आग, छह कर्मचारी झुलसे

सोनीपत। सोनीपत के राई औद्योगिक क्षेत्र में एक रबड़ फैक्ट्री में आग लगने से छह कर्मचारी झुलस गए। कर्मचारियों को सोनीपत के नागरिक अस्पताल लाया गया है। जहां उनकी हालत गंभीर बनी हुई है। राई औद्योगिक क्षेत्र में आज शाम करीब चार बजे एक फैक्ट्री में सिलेंडरों के धमाके के साथ भीषण आग लग गई। फैक्ट्री में काम कर रहे कर्मचारी इसमें फंस गए। फैक्टरी में पड़े सिलेंडरों में लगातार धमाके होते रहे। जिससे आसपास के लोगों में भगदड़ मच गई। घटना की सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की कई गाड़ियां मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाने में लगी हैं। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार फैक्टरी में दोपहर के भोजनावकाश के बाद कर्मचारी काम कर रहे थे। पूरे परिसर में रबड़ भरी होने के कारण आग तेजी से फैल गई और कर्मचारियों को बाहर निकलने का मौका नही मिला। मौके पर पहुंचे दमकल कर्मियों ने घायलों को निकालकर अस्पताल में भर्ती कराया। घटनास्थल पर राहत कार्य जारी हैं।

मतगणना के लिए रैंडमाइजेशन से हुआ ड्यूटी निर्धारण

सिरसा। जिला निर्वाचन अधिकारी आर.के. सिंह की अध्यक्षता में सिरसा लोकसभा चुनाव की मतगणना के लिए ड्यूटी निर्धारण के लिए स्थानीय लघुसचिवालय स्थित एनआईसी के वीडियो कॉफ्रेंस रूम में प्रथम रेंडमाइजेशन प्रक्रिया सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर एआरओ रानियां सुरेश कुमार, सीटीएम पारस, डीआईओ सिकंदर, तहसीलदार चुनाव रोहित मौजूद थी। रेंडमाइजेशन उपरांत जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी एआरओ, ड्यूटी मजिस्ट्रेट, सहित संबंधित विभागों अधिकारियों को मतगणना प्रक्रिया संबंधी आवश्यक दिशा-निर्देश के साथ-साथ मतगणना प्रक्रिया के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों बारे अवगत करवाया। बैठक में पुलिस अधीक्षक सिरसा विक्रांत भूषण, अतिरिक्त उपायुक्त डा. विवेक भारती, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दीप्ति गर्ग सहित संबंधित विधानसभा के एआरओ व अन्य अधिकारी मौजूद रहे। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि लोकसभा आम चुनाव 2024 की मतगणना 4 जून को की जाएगी। इसी कड़ी में सिरसा लोकसभा क्षेत्र के सभी पांचों विधानसभा क्षेत्रों के मतों की गणना चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय में की जाएगी।

मकान में रखे छोटे गैस सिलेंडर में लगी आग, पांच झुलसे

एजेंसी

हिसार। सदर क्षेत्र के गांव सलेमगढ़ में मकान में रखा छोटा गैस सिलेंडर लीक होने के बाद लगी आग में दो परिवारों के पांच सदस्य गंभीर रूप से झुलस गए। दंपति की हालत गंभीर व चिंताजनक होने के चलते एम्स रैफर किया गया है, जबकि तीन अन्य को कैमरी रोड स्थित निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया है।

ग्रामीणों ने बताया कि गांव में निहाल सिंह जांगड़ा का मकान है। इनके मकान के बाहरी कमरे में पांच किलो का छोटा गैस सिलेंडर रखा था। सोमवार रात को अचानक उससे गैस लीक होने पर आग लग गई। परिवार ने शोर मचाना शुरू किया तो पड़ोसी दीपचंद सोनी (67), इनका बेटा दिनेश सोनी (48), इसकी पत्नी सुलोचना (40) बचाने के लिए आए थे। तभी अचानक सिलेंडर में ब्लास्ट हो गया। इसमें इन तीनों सहित निहाल सिंह का पुत्र कुलदीप उर्फ बिल्लू (45) व पुत्रवधू मीरा (43) बुरी तरह झुलस गए। चीख-पुकार सुनकर ग्रामीण मदद के लिए आए।

पांचों झुलसे लोगों को उपचार के हिसार के निजी अस्पताल में दाखिल करवाया। यहां कुलदीप और मीरा 90 फीसद से अधिक झुलसे हुए थे, जिससे जान को अधिक खतरा देखकर एम्स रेफर कर दिया। बाकी तीनों सदस्यों की हालत गंभीर हैं। ग्रामीणों ने बताया कि मकान में नुकसान ज्यादा नहीं हुआ है, लेकिन जिंदगियां खतरे में होने से गांव में मायूसी है। घटना का पता चलने पर सदर थाना से पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच की।

लोकसभा चुनाव के दौरान हरियाणा में 75.44 करोड़ की शराब व 76.74 करोड़ कैश जब्त

वर्ष 2019 लोकसभा चुनाव में जब्त हुई थी 18.36 करोड़ की नकदी

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा में लोकसभा आम चुनाव 2024 के दौरान प्रवर्तन एजेंसियों ने लगातार कार्रवाई कर अवैध शराब, मादक पदार्थ व नकद राशि जब्त की गई है। 28 मई तक राज्य में कुल 76.74 करोड़ रुपये की नगद राशि, अवैध शराब, मादक पदार्थ व कीमती वस्तुएं जब्त की गई है, जोकि जोकि पिछले लोकसभा चुनाव की तुलना में कहीं अधिक है। लोकसभा आम चुनाव 2019 की चुनाव अवधि के दौरान कुल 18.36 करोड़ रुपये की नकदी, अवैध शराब, मादक पदार्थ, व कीमती वस्तुएं जब्त की गई थी।

हरियाणा के मुख्य निर्वाचन अधिकारी अनुराग अग्रवाल ने यह जानकारी देते हुए बताया कि राज्य में पुलिस, आयकर विभाग, आबकारी एवं कराधान विभाग तथा राजस्व आसूचना निदेशालय (डीआरआई)

लगातार कार्रवाई कर रही है। अभी तक मुख्य रूप से पुलिस ने 724.80 लाख रुपये, आयकर विभाग ने 938.69 लाख रुपये तथा डीआरआई ने 278 लाख रुपये की नकद राशि जब्त की है। इसके अलावा अन्य एजेंसियों ने भी नगदी जब्त की है। उन्होंने बताया कि विभिन्न एजेंसियों ने कुल 13.50 करोड़ रुपये की कीमत की 4.10 लाख लीटर से अधिक अवैध शराब पकड़ी गई है। इसमें मुख्य रूप से पुलिस ने 951.33 लाख रुपये की कीमत की 300833 लीटर तथा आबकारी विभाग ने 409 लाख रुपये की कीमत की 1,09,583 लीटर अवैध शराब पकड़ा जाना शामिल है। अग्रवाल ने बताया कि एजेंसियों ने कुल 14.08 करोड़ रुपये की कीमत के मादक पदार्थ जब्त किए गए हैं। पुलिस ने 13.99 करोड़ रुपये की कीमत के मादक पदार्थ जब्त किए गए हैं। इसके अलावा, एनसीबी ने भी 2 किलोग्राम मादक पदार्थ पकड़े हैं, जिनकी कीमत 4 लाख रुपये है। इतना ही नहीं, 26.12 करोड़ रुपये के कीमती सामान और 3.49 करोड़ रुपये की अन्य वस्तुओं को भी जब्त किया गया है।

नफे सिंह राठी हत्याकांड में सात आरोपियों के विदेश जाने पर रोक

एजेंसी

झज्जर। केंद्रीय जांच ब्यूरो की टीम नफे सिंह राठी हत्या के मामले की जांच जारी है। टीम ने मामले में आरोपी भारतीय जनता पार्टी के पूर्व विधायक नरेश कौशिक समेत सात आरोपियों से बहादुरगढ़ में पूछताछ की। जिन आरोपियों से पूछताछ की गई उनमें नगर परिषद की अध्यक्ष सरोज राठी के पति रमेश राठी, उनके बेटे कमल राठी और सरोज राठी के चचिया ससुर पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष कर्मवीर राठी भी शामिल हैं। सीबीआई की टीम ने सभी आरोपियों को मामले की जांच पूरी होने तक विदेश न जाने को कहा है। सीबीआई की टीम ने उपरोक्त के अलावा पूर्व मंत्री मांगेराम राठी के पुत्र सतीश राठी और सतीश राठी के भाई जगदीश नंबरदार के पुत्र गौरव राठी व राहुल को भी पूछताछ के लिए बहादुरगढ़ के लोक निर्माण विभाग विश्राम गृह में बुलाया। सभी से करीब 3 घंटे तक पूछताछ की गई। सभी को यह हिदायत दी गई कि वे फिलहाल देश

छोड़कर किसी अन्य देश में न जाएं। सभी के पासपोर्ट नंबर भी सीबीआई की टीम ने ले लिए हैं। आरोपियों की बैंक डिटेल भी सीबीआई की टीम ने ले ली है। पूछताछ के बाद सभी आरोपियों ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि सीबीआई की टीम ने उनसे जितने भी, जो भी सवाल पूछे सभी का उन्होंने जवाब दे दिया। उनका इस मामले से कोई लेना देना नहीं है। बता दें कि इंडियन नेशनल लोकदल के प्रदेश अध्यक्ष पूर्व विधायक नफे सिंह राठी की गत 25 फरवरी को बहादुरगढ़ में बराही रोड रेलवे फाटक के पास गोलियां मारकर हत्या कर दी गई थी। हमलावरों में चार युवक शामिल थे। इस मामले में पुलिस ने मृतक नफे सिंह के पुत्र जितेंद्र के बयान के आधार पर 12 लोगों के खिलाफ प्राथमिक सूचना रिपोर्ट दर्ज की थी। शुरुआत में इस मामले की जांच बहादुरगढ़ पुलिस ने की। एसआईटी का गठन भी किया गया। लेकिन पीड़ित परिजनों की मांग पर राज्य सरकार ने यह केस जांच के लिए सीबीआई को सौंप दिया। जिस पर करीब 3 सप्ताह से सीबीआई इस मामले की जांच में लगी है।

पूर्व विधायक नरेश कौशिक ने कहा कि उनका नफे सिंह राठी या उनके परिजनों से कभी किसी तरह का विवाद नहीं हुआ। लेकिन पीड़ित परिजनों ने राजनीतिक विरोधी होने के कारण उनका नाम भी आरोपियों में शामिल कर दिया। कौशिक ने कहा कि राठी की हत्या बेहद निंदनीय है। इस मामले में सीबीआई निष्पक्ष रूप से जांच कर रही है और जो भी अपराधी होगा उसे सजा अवश्य मिलेगी। पूछताछ के बाद आरोपी रमेश राठी और सतीश नंबरदार ने भी मामले में पत्रकारों के समक्ष अपना पक्ष रखा।

प्रदेशवासियों को अभी नहीं मिलेगी हीट वेव व लू से राहत

एजेंसी

हिसार। प्रदेश के नागरिकों को अभी भीषण गर्मी, हीट वेव व लू से राहत मिलने की सभावना नहीं है। अभी आगामी चार दिनों तक ऐसा ही मौसम रहने का अनुमान है। जून की शुरूआत में इससे कुछ राहत मिल सकती है। प्रदेश में इस समय अधिकतर जिले हीट वेव की चपेट में है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मौसम विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. मदन खिचड़ ने बताया कि प्रदेश में मौसम आमतौर पर 31 मई तक खुश्क व गर्म रहने की संभावना है।

राज्य के सिरसा जिले का तापमान 49 डिग्री को पार कर गया है, वहीं हिसार का तापमान 46 डिग्री पार हो चुका है। अभी प्रदेश में ऐसी ही स्थिति बनी रहने की संभावना है। मौसम वैज्ञानिकों ने संभावना जताई है कि 31 मई तक ऐसा ही मौसम रहेगा। इस दौरान दिन का तापमान बढ़ेगा, लू भी चलेगी। इसके साथ ही धूल भरी हवाएं भी चलेगी।

इस दौरान दिन के तापमान में बढ़ोतरी जारी रहने तथा दिन के समय गर्म पश्चिमी हवाएं अर्थात लू चलने की संभावना है। इस दौरान तापमान बढ़ने से बीच बीच में हल्के बादल तथा धूल भरी हवाएं चलने की संभावना है। उन्होंने बताया कि एक पश्चिमी विक्षोभ के आंशिक प्रभाव से 31 मई रात्रि से मौसम में बदलाव संभावित है। इससे एक व दो जून को राज्य में आंशिक बादलवाई, हवाएं चलने तथा कुछ एक स्थानों पर गरज चमक के साथ छिटपुट बूंदाबांदी की भी संभावना है जिससे दिन के तापमान में हल्की गिरावट संभावित है।

चुनाव ड्यूटी की मानदेय राशि उपलब्ध करवाने में देरी करने पर नपेंगे अधिकारी

एजेंसी

हिसार। जिला निर्वाचन अधिकारी प्रदीप दहिया ने कहा है कि चार जून को निष्पक्ष एवं पारदर्शी तरीके से मतगणना कार्य संपन्न करवाया जाएगा। इस उद्देश्य को लेकर जिला प्रशासन द्वारा तमाम पुख्ता प्रबंध किए जा रहे हैं। वे लघु सचिवालय परिसर स्थित वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग हाल में आयोजित अधिकारियों की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हिसार संसदीय क्षेत्र में लोकसभा चुनाव पूरी तरह से निष्पक्ष, पारदर्शी एवं शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुआ है। इसके लिए उन्होंने चुनाव ड्यूटी पर तैनात सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों की कार्यप्रणाली की सराहना करते हुए कहा कि इसी प्रकार से चार जून को होने वाले मतगणना कार्य को भी संपन्न करवाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि हिसार संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले नौ विधानसभा क्षेत्रों में से सात विधानसभा क्षेत्र के मतों की गणना का कार्य यहां के महावीर स्टेडियम एवं पंचायत भवन में किया जाएगा। इसके लिए अलग-अलग मतगणना केंद्र स्थापित किए गए हैं। जिला निर्वाचन अधिकारी प्रदीप दहिया ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि वह मतगणना केंद्रों के बाहर सुरक्षा के लिहाज से पर्याप्त सीसीटीवी कैमरे लगाना सुनिश्चित करें। सभी मतगणना केंद्रों पर पर्याप्त, स्वच्छ, ठंडा पेयजल व निर्बाध बिजली की आपूर्ति व मोबाइल टॉयलेट की व्यवस्था होनी चाहिए। इन व्यवस्थाओं के अलावा मतगणना केंद्रों पर फायर ब्रिगेड तथा एंबुलेंस की गाड़ी डॉक्टरों सहित उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए ताकि किसी भी विपरीत परिस्थिति से निपटा जा सके। जिला निर्वाचन अधिकारी प्रदीप दहिया ने बताया कि 4 जून को सुबह 8 बजे मतों की गणना का कार्य शुरू होगा। हर मतगणना केंद्र में 14-14 टेबलें लगाई जाएंगी।

मतगणना ड्यूटी स्टाफ की प्रथम रेंडमाइजेशन प्रक्रिया संपन्न, 30 मई को होगी ट्रेनिंग

एजेंसी

झज्जर। जिला प्रशासन ने रोहतक लोकसभा क्षेत्र के झज्जर जिला की मतगणना को लेकर तैयारी शुरू कर दी हैं। जिले के सभी एआरओ व अन्य संबंधित अधिकारियों की मौजूदगी में मतगणना में कार्यरत कर्मचारियों व अधिकारियों की प्रथम रेंडमाइजेशन का कार्य संपन्न हुआ। नियमानुसार रेंडमाइजेशन का कार्य पूरा करवाते हुए लिस्ट को लॉक कर दिया गया।

जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी कैप्टन शक्ति सिंह ने बताया कि लोकसभा चुनाव के लिए मतदान प्रक्रिया शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न होने के बाद राजकीय नेहरू पीजी कॉलेज में ईवीएम एवं वीवीपैट मशीनों को स्ट्रांग रूम में रखा गया है। 4 जून को

मतगणना का कार्य संपन्न होगा। मतगणना के लिए जिन अधिकारियों को ड्यूटी लगाई गई है उनका चुनाव आयोग के निर्देशानुसार प्रथम रेंडमाइजेशन का कार्य किया गया है। विधानसभा के अनुसार होगी व आखिरी रेंडमाइजेशन टेबल के अनुसार की जाएगी। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि प्रत्येक विधानसभा अनुसार 15 टेबल लगाई जाएंगी। सुबह ठीक आठ बजे मतगणना का कार्य शुरू हो जाएगा।

मतगणना के कार्य के लिए जिन अधिकारियों को ड्यूटी लगाई गई है उनकी 30 मई को ट्रेनिंग करवाई जाएगी। सहायक रिटर्निंग अधिकारी भी इस दौरान मौजूद रहेंगे व विस्तार पूर्वक अधिकारियों को ट्रेनिंग दी जाएगी। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि मतगणना प्रक्रिया सुगम तरीके से संपन्न करवाने के लिए पूरी व्यवस्था की गई है। अभी दो रेंडमाइजेशन की प्रक्रिया और होंगी। पहली रेंडमाइजेशन पूल के अनुसार हुई है व दूसरी

जींद व सफीदों विस के मतों की गणना 14-14 राउंड में होगी

एजेंसी

जींद। चार जून को मतगणना कार्य के दौरान काउंटिंग हॉल में केवल अधिकृत व्यक्ति ही प्रवेश करेगा। अनाधिकृत व्यक्ति किसी भी सूरत में प्रवेश न कर पाए। अधिकृत व्यक्ति के पास उसका पहचान पत्र होना चाहिए। मतों की गणना में किसी स्तर पर कोई चूक न हो। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त मोहम्मद इमरान रजा ने कहा कि पहले राउंड का परिणाम क्लीयर होने के बाद ही दूसरे राउंड के लिए मशीन टेबल पर लाई जाए। मतगणना के पूरे कार्य की वीडियोग्राफी की जाएगी। प्रत्येक राउंड का परिणाम संबंधित विधानसभा का एआरओ ही घोषित करेगा।

जिला निर्वाचन अधिकारी मोहम्मद रजा स्थानीय लघु सचिवालय स्थित सभागार में काउंटिंग टीमों के रेंडेमाइजेशन के दौरान जींद जिला की सभी विधानसभा क्षेत्रों के एआरओ को निर्देश दे रहे थे। रेंडेमाइजेशन वीसी के माध्यम से सोनीपत लोकसभा क्षेत्र के आरओ डा. मनोज कुमार के मार्गदर्शन में किया गया। दूसरा रेंडेमाइजेशन 30 मई को किया

जाएगा। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि सभी काउंटिंग टीमों को जरूरी प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि काउंटिंग टीमों में काउंटिंग, सुपरवाईजर, काउंटिंग असिस्टेंट और माईक्रो ऑब्जर्वर भी शामिल हैं। काउंटिंग हाल में जाने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों की पुलिस वेरीफिकेशन करवाई जाएगी।

प्रत्येक राउंड का परिणाम बोर्ड पर अंकित किया जाएगा

उन्होंने निर्देश देते हुए कहा कि प्रत्येक टेबल पर एक चार्ट लगाया जाए, जिस पर राऊंड के हिसाब से आने वाली मशीन को दर्शाया गया हो ताकि काउंटिंग एजेंट को पता चलता रहे कि अब कौन सी मशीन आने वाली है। इससे मतगणना कार्य में और अधिक पारदर्शिता आएगी। इसके साथ-साथ उन्होंने कहा कि स्ट्रॉग रूम से ईवीएम लाने वाले कर्मचारी इस कार्य में पूर्ण से कुशल होने चाहिए।

काउंटिंग एजेंट को मौके पर मिलेंगे कागज व पेंसिल

जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त मोहम्मद इमरान रजा ने निर्देश देते हुए बताया कि सभी पार्टियों के काउंटिंग एजेंट को काउंटिंग हॉल में कागज व पेंसिल दिए जाएंगे। बाहर से कोई चीज लाने की अनुमति नही होगी। एजेंट के साथ-साथ किसी भी कर्मचारी को अपने साथ मोबाइल ले जाने की अनुमति नही होगी।

मतों की गणना के लिए लगाई जाएंगी 14 टेबल

नायब तहसीलदार प्रदीप सरोहा ने बताया कि लोकसभा के मतों की गणना के लिए 14-14 टेबल लगाई जाएंगी। जुलाना विधानसभा के मतों की गणना 15 राऊंड में होगी। जींद व सफीदों विधानसभा के मतों की गणना 14 राउंड में होगी। इसी प्रकार से उचाना व नरवाना विधानसभा क्षेत्रों के मतों की गणना 16-16 राउंड में होगी।

लू से बचने के लिए स्वास्थ्य विभाग की ओर से जारी सावधानियां बरतें नागरिक: प्रदीप दहिया

एजेंसी

हिसार। उपायुक्त एवं जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के चेयरमैन प्रदीप दहिया ने जिले के नागरिकों से अपील की है कि वे तेज गर्मी व हीट वेव के दृष्टिगत इस मौसम में जरूरी सावधानी बरतें। नागरिक गर्मी के प्रकोप से बचने के लिए सुरक्षात्मक उपाय अपनाएं और खासकर बच्चों का विशेष ख्याल रखें। उपायुक्त प्रदीप दहिया ने कहा कि हीट वेव से शारीरिक तनाव हो सकता है और यहां तक कि मनुष्य की जान तक जा सकती है। जान को खतरा बनने वाली हीट वेव से बचने के लिए सावधानियां बरतनी जरूरी हैं। उन्होंने राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग की ओर से गर्मी व लू से बचने के संबंध में जारी हिदायतों बारे जानकारी देते हुए बताया कि नागरिक दोपहर के समय बाहर जाने से बचें। तापमान अधिक होने की स्थिति में श्रमयुक्त कार्य न करें। इसके अलावा, शरीर में पानी की कमी करने वाले चाय, कॉफी और कार्बोनेटेड शीतल पेय जैसे पदार्थों के सेवन से बचना चाहिए। उच्च प्रोटीन युक्त व बासी भोजन न खाएं।

नागरिक लू से बचाव के लिए अपनाएं ये उपाय

उपायुक्त प्रदीप दहिया ने आमजन से आह्वान किया कि वे राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग की ओर से जारी की गई एडवाइजरी की पालना करें और लू से बचे रहें। उन्होंने बताया कि लू से बचाव के लिए स्थानीय मौसम संबंधी खबरों के लिए रेडियो सुनें, टीवी देखें, समाचार पत्र पढ़ें, गर्मी में हल्के रंग के ढीले सूती कपड़े पहनें, अपना सिर ढककर रखें, कपड़े, हैट अथवा छतरी का उपयोग करें, पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं-भले ही प्यास न लगी हो, ओआरएस (ओरल रीहाइड्रेशन सॉल्यूशन), घर में बने पेय जैसे लस्सी, तोरानी (चावल का मांड) नींबू पानी, छाछ आदि का सेवन कर तरोताजा रहें।

जानवरों का लू से कैसे बचाव के उपाय

उपायुक्त ने बताया कि जानवरों को लू से बचाने के लिए छाया में रखें और उन्हें पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी दें, उन्हें घर के भीतर रखें, पीने के पानी के दो बाउल रखें

ताकि एक में पानी खत्म होने पर दूसरे से वे पानी पी सकें, यदि उन्हें घर के भीतर रखा जाना संभव न हो तो उन्हें किसी छायादार स्थान में रखें, जहां वे आराम कर सकें। ध्यान रखें कि जहां उन्हें रखा जाए वहां दिनभर छाया रहे, अपने पालतू जानवर का खाना धूप में न रखें, जानवरों को किसी बंद जगह में न रखें।

मतगणना के लिए रेंडमाइजेशन से हुआ ड्यूटी निर्धारण

एजेंसी

सिरसा। जिला निर्वाचन अधिकारी आर.के. सिंह की अध्यक्षता में मंगलवार को सिरसा लोकसभा चुनाव की मतगणना के लिए ड्यूटी निर्धारण के लिए स्थानीय लघुसचिवालय स्थित एनआईसी के वीडियो कॉफ्रेंस रूम में प्रथम रेंडमाइजेशन प्रक्रिया सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस अवसर पर एआरओ रानियां सुरेश कुमार, सीटीएम पारस, डीआईओ सिकंदर, तहसीलदार चुनाव रोहित मौजूद थी। रेंडमाइजेशन उपरांत जिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी एआरओ, ड्यूटी मजिस्ट्रेट, सहित संबंधित विभागों अधिकारियों को मतगणना प्रक्रिया संबंधी आवश्यक दिशा-निर्देश के साथ-साथ मतगणना प्रक्रिया के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों बारे अवगत करवाया। बैठक में पुलिस अधीक्षक सिरसा विक्रांत भूषण, अतिरिक्त उपायुक्त डा. विवेक भारती, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दीप्ति गर्ग सहित संबंधित विधानसभा के एआरओ व अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

हांसपुर में पीने के पानी से सब्जियों में करते थे सिंचाई, विभाग ने 14 कनेक्शन काटे

एजेंसी

फतेहाबाद। गर्मी के मौसम में पानी की डिमांड काफी बढ़ गई है। कुछ लोगों द्वारा पेयजल कनेक्शनों पर सर्विस स्टेशन चला रहे हैं, वहीं कुछ लोग इस पानी का प्रयोग हरा-चारा, सब्जी आदि फसलों में कर रहे हैं। ऐसे लोगों की पहचान को लेकर जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा जिले के शहरों में डोर टू डोर सर्वे करवाया जा रहा है। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग फतेहाबाद के जिला सलाहाकार शर्मा चंद लाली ने बताया कि जिले के सभी शहरों में विभाग द्वारा टीम लगाकर घर घर सर्वे करवाया जा रहा है। इस दौरान जिसने भी पीने के पानी पर सर्विस स्टेशन, हरा चारा सब्जी लगा रखी है, उनके कनेक्शन तुंरत प्रभाव से काटे जा रहें हैं। इसके साथ विभाग उनकी सूची भी तैयार कर रहा है, जिनके बिल बकाया है। उनको भी नोटिस दिया जाएगा यदि फिर भी बिल का भुगतान नहीं करते हैं तो उनके भी कनेक्शन काटे जायेंगे। उन्होंने कहा कि हर घर को पीने का पानी मिल सके, इसमें सभी जिलावासी विभाग का सहयोग करे। कनिष्ठ अभियंता छोटू राम ने आज ग्राम पंचायत हांसपुर में ऐसे 14 कनेक्शन काटे गए हैं, जिन्होंने पीने के पानी पर हरा चारा सब्जी लगा रखी थी। यह अभियान जिले के सभी शहरों व सभी ग्राम पंचायतों में चलाया जाएगा ताकि सभी को स्वच्छ जल मुहैया करवाया जा सके। शर्मा चंद ने बताया कि पीने के पानी से संबंधित जो भी समस्याएं हैं उन सभी समस्याओं को चिह्नित करके तुरंत प्रभाव से ठीक किया जाएगा ताकि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में किसी भी घर को पीने के पानी की कोई दिक्कत न आए। उन्होंने बताया की ग्रामीण क्षेत्र में कुछ घरों ने पीने के पानी पर हरा चारा सब्जी, सर्विस स्टेशन लगा रखे है जिस कारण गांव के कुछ घरों में पीने का पानी नही पहुंच रहा है, पूरे जिले में ऐसे सभी घरों को चिन्हित करके विभाग की तरफ से उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएंगी। जिले के पीने के पानी के सभी घरों का सर्वे भी किया जाएगा।

कच्चा तेल 85 डॉलर प्रति बैरल के करीब, पेट्रोल-डीजल की कीमत स्थिर

एजेंसी

नई दिल्ली। अंतरराष्ट्रीय बाजार में आज कच्चे तेल की कीमत में कुछ तेजी है। ब्रेंट क्रूड का मूल्य 85 डॉलर और डब्ल्यूटीआई क्रूड 81 डॉलर प्रति बैरल के करीब है।

सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने बुधवार को पेट्रोल-डीजल के मूल्य में कोई फेरबदल नहीं किया है। इस हफ्ते के तीसरे दिन शुरुआती कारोबार में ब्रेंड क्रूड 0.17 डॉलर यानी 0.20 फीसदी की उछाल के साथ 83.30 डॉलर प्रति बैरल के स्तर पर ट्रेंड कर रहा है। वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड भी 0.29 डॉलर यानी 0.35 फीसदी बढ़कर 80.11 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये, डीजल 87.62 रुपये, मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये, डीजल 92.15 रुपये, कोलकाता में पेट्रोल 103.94 रुपये, डीजल 90.76 रुपये, चेन्नई में पेट्रोल 100.75 रुपये और डीजल 92.34 रुपये प्रति लीटर की दर पर उपलब्ध है।

भारत में स्कोडा कोडियाक एसयूवी की बुकिंग निलंबित कर दी गई

एजेंसी

नई दिल्ली। स्कोडा ने भारत में कोडियाक एसयूवी के लिए ऑनलाइन आरक्षण बंद कर दिया है। यह स्पष्ट नहीं है कि यह अस्थायी या स्थायी परिवर्तन है। हालाँकि, कुछ डीलर अभी भी चुनिंदा रंगों और वेरिएंट में 2023 मॉडल के लिए ऑफ़लाइन बुकिंग ले रहे हैं। हालाँकि कोई आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है, लेकिन ऐसा लग रहा है कि स्कोडा मौजूदा मॉडल की बुकिंग बंद करके नए मॉडल के लिए रास्ता बना रही है। नई कोडियाक, जिसे पिछले साल वैश्विक स्तर पर पेश किया गया था, में एक तेज डिजाइन, अधिक शानदार इंटीरियर और बेहतर विशेषताएं हैं। इसके जल्द ही भारत में लॉन्च होने की उम्मीद है, जिसकी कीमत लगभग 40 लाख रुपये (एक्स-शोरूम) से शुरू होगी। अपडेटेड स्कोडा कोडियाक, जिसने पिछले अक्टूबर में वैश्विक स्तर पर शुरुआत की थी, इस साल के अंत में भारतीय बाजार में आने की उम्मीद है। इस नए संस्करण में स्कोडा की मॉडर्न सॉलिड डिज़ाइन भाषा है, जिसे 2022 विज़न 7स कॉन्सेप्ट में पेश किया गया है। मुख्य संवर्द्धन में चौकोर पहिया मेहराब, एक प्रबुद्ध पट्टी के साथ एक बड़ा ग्रिल, और एलईडी मैट्रिक्स हेडलाइट्स के साथ एक क्राउन-हेडलाइट सेटअप शामिल है जो 15व अधिक रोशनी प्रदान करता है। नए कोडियाक में नए बंपर, एयरोडायनामिक विंग मिरर और नए डिज़ाइन वाले पहिये भी हैं। एमक्यूबी-ईवीओ प्लेटफॉर्म पर निर्मित, एसयूवी अब 61 मिमी लंबी है, जो अधिक विशाल और परिष्कृत ड्राइविंग अनुभव प्रदान करती है।

मृणालिनी श्रीनिवासन नया सीएफओ किया नियुक्त

नई दिल्ली। पी एंड जी हाइजीन एंड हेल्थ केयर ने मृणालिनी श्रीनिवासन को नया सीएफओ नियुक्त किया है प्रॉक्टर एंड गैंबल (पीएंडजी) हाइजीन एंड हेल्थ केयर ने मंगलवार को 29 जून से मृणालिनी श्रीनिवासन को कंपनी का मुख्य वित्तीय अधिकारी नियुक्त करने की घोषणा की। वह प्रशांत भटनागर से यह भूमिका संभालेंगी, जो लगभग 28 साल की सेवा के बाद कंपनी छोड़ देंगे। श्रीनिवासन ने एक बयान में कहा, ÷यह भूमिका मुझे हमारी एकीकृत विकास रणनीति को जीवन में लाने और हमारे उपभोक्ताओं को बेहतर प्रस्तावों से प्रसन्न करने के लिए विभिन्न हितधारकों के साथ काम करने का अवसर देती है। मैं भारत में पी एंड जी के विकास में योगदान देने के लिए उत्सुक हूं।अपने 16 साल के करियर में, मृणालिनी ने विभिन्न प्रकार की वित्तीय भूमिकाएँ निभाई हैं। कंपनी ने कहा कि वह 2008 में पीएंडजी में शामिल हुईं और तीन भौगोलिक क्षेत्रों - सिंगापुर, भारत और दुबई में काम किया, परिवर्तनकारी परियोजनाओं का नेतृत्व किया और कई महत्वपूर्ण पीएंडजी व्यवसायों के लिए उत्कृष्ट परिणाम दिए।

अदानी एंटरप्राइजेज फंड जुटाने को मंजूरी दी

मुंबई। अदानी एंटरप्राइजेज फंड जुटाने को मंजूरी दी अदानी समूह- अरबपति गौतम अदानी के समूह की प्रमुख कंपनी अदानी एंटरप्राइजेज लिमिटेड ने कहा कि उसके बोर्ड ने शेयर बिक्री के माध्यम से 16,600 करोड़ रुपये (लगभग 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर) जुटाने की मंजूरी दे दी है। यह घोषणा समूह की उपयोगिता अदानी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड द्वारा योग्य संस्थागत प्लेसमेंट (क्यूआईपी) या किसी अन्य अनुमेय मोड के माध्यम से 12,500 करोड़ रुपये तक जुटाने के लिए समान प्राधिकरण प्राप्त करने के एक दिन बाद आई। स्टॉक एक्सचेंज फाइलिंग में, अदानी एंटरप्राइजेज ने कहा कि फंड जुटाना एक या अधिक चरणों में हो सकता है। दोनों व्यवसायों को शेयरधारकों सहित अन्य मंजूरी की आवश्यकता होगी। जबकि अदानी एंटरप्राइजेज लिमिटेड ने फंड जुटाने को मंजूरी देने के लिए 24 जून को शेयरधारक बैठक बुलाई है, अदानी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड की वार्षिक आम बैठक (एजीएम) अगले दिन होने वाली है।

एफटीए वार्ता के लिए मानक संचालन प्रक्रिया पर काम कर रहा है वाणिज्य मंत्रालय

एजेंसी

नई दिल्ली। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय मुक्त व्यापार समझौता वार्ता (एफटीए) के लिए मानक संचालन प्रक्रिया पर काम कर रहा है। मंत्रालय ने एफटीए के लिए रणनीति बनाने और इनके अंतर्गत अन्य संबंधित मुद्दों के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) तैयार करने को लेकर विशेषज्ञों, पूर्व अधिकारियों और विभिन्न विभागों के साथ विचार-विमर्श किया है।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने जारी एक बयान में बताया कि एफटीए पर रणनीति बनाने और एसओपी को लेकर राजस्थान के नीमराणा में 16 एवं 17 मई को एक चिंतन शिविर आयोजित किया गया। इस चिंतन शिविर में एफटीए का आर्थिक मूल्यांकन और मॉडलिंग, एफटीए में सेवाएं और डिजिटल व्यापार, और एआई, महत्वपूर्ण खनिजों जैसे उभरते क्षेत्रों को संबोधित करने के लिए भारत

के एफटीए का लाभ उठाने पर चर्चा की गई। राजस्थान के नीमराणा में आयोजित चिंतन शिविर में वाणिज्य सचिव सुनील बर्थवाल ने विचार-विमर्श की अगुवाई की। इसमें एफटीए वार्ता में भारत की भविष्य की भागीदारी के लिए एक रणनीतिक व्यवस्था तैयार करने की मांग भी की गई। शिविर में भारत के मुक्त व्यापार समझौतों की बातचीत, उसकी स्थिति और ऐसी वार्ता के लिए अपनाई जाने वाली रणनीति से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई।

एसबीआई ने चौथी तिमाही में आर्थिक वृद्धि दर 7.4 फीसदी रहने का जताया अनुमान

एजेंसी

नई दिल्ली। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) ने वित्त वर्ष 2023-24 की (जनवरी-मार्च) चौथी तिमाही में देश की आर्थिक वृद्धि दर 7.4 फीसदी रहने का अनुमान जताया है। एसबीआई ने 31 मार्च को समाप्त वित्त वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 8 फीसदी रहने की बात कही है।

एसबीआई रिसर्च की जारी एक रिपोर्ट के मुताबिक वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में भारत की जीडीपी 7.4 फीसदी रहने की संभावना है, जबकि पूरे वित्त वर्ष में कुल जीडीपी वृद्धि 8 फीसदी तक पहुंचने की संभावना है। राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) 31 मई को बीते वित्त वर्ष 2023-24 के लिए चौथी तिमाही के लिए जीडीपी आंकड़े का अनंतिम अनुमान जारी करेगा। रिजर्व बैंक ऑफ (इंडिया) का वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में वास्तविक जीडीपी की वृद्धि दर 7.3 फीसदी और पूरे वित्त वर्ष में 7.6 फीसदी रहने का अनुमान जताया है। मुख्य आर्थिक सलाहकार वी अनंत नागेश्वरन ने भी कहा था कि वित्त वर्ष 2023-24 में भारत की आर्थिक वृद्धि दर 8 फीसदी तक पहुंचने की संभावना है।

ज्यादा टीडीएस कटौती से बचने के लिए 31 मई तक पैन को आधार से जोड़ें करदाता: आयकर विभाग

एजेंसी

नई दिल्ली। आयकर विभाग ने करदाताओं को ऊंची दर पर कर कटौती से बचने के लिए 31 मई, 2024 तक स्थायी खाता संख्या (पैन) को आधार से जोड़ने की सलाह दी है।

आयकर विभाग ने एक्स पोस्ट पर जारी एक बयान में कहा, ''ऊंची दर पर कर कटौती से बचने के लिए कृपया 31 मई, 2024 से पहले अपने स्थायी खाता संख्या (पैन) को आधार से जोड़ें, यदि आपने पहले से नहीं किया है।'' आयकर नियम के मुताबिक यदि पैन बायोमेट्रिक आधार से जुड़ा नहीं है, तो लागू दर से दोगुनी दर पर टीडीएस काटा जाना आवश्यक है।विभाग ने एक अन्य पोस्ट में बैंकों, विदेशी मुद्रा डीलर सहित रिपोर्टिंग संस्थाओं को दंड से बचने के लिए 31 मई, 2024 तक निर्दिष्ट वित्तीय लेनदेन का विवरण

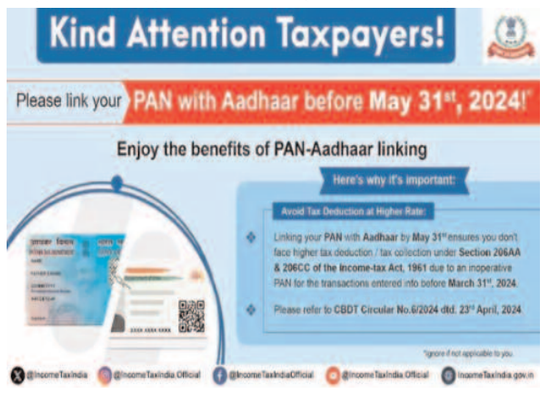

(एसएफटी) दाखिल करने को भी कहा है। आयकर विभाग ने कहा कि एसएफटी दाखिल करने की अंतिम तिथि 31 मई निर्धारित है। ऐसे में सही और समय पर दाखिल अपना एसएफटी दाखिल कर दंड से बचें।

क्या होता है टीडीएस

स्रोत पर कर कटौती (टीडीएस) किसी व्यक्ति के खाते में राशि जमा होने से पहले उसके वेतन से काटा गया टैक्स है। इसको सरल शब्दों में आप कह सकते हैं कि टीडीएस एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें किसी व्यक्ति से उसके वेतन या अन्य आय के स्रोत पर कर लिया जाता है। टीडीएस का उद्देश्य आयकर का संग्रह करना और कर चोरी को रोकना है।

उल्लेखनीय है कि आयकर विभाग ने पिछले महीने एक परिपत्र जारी किया था, जिसमें कहा गया था कि यदि निर्धारित तारीख 31 मई, 2024 तक अपने पैन को आधार से जोड़ा जाता है तो कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी। इसके साथ ही एसएफटी अंतिम तिथि 31 मई, 2024 तक दाखिल करने की अपील की थी।

एस्टर डीएम हेल्थकेयर ने 250 करोड़ रुपये की विस्तार योजना की घोषणा की

एजेंसी

मुंबई। भारत में सबसे बड़े एकीकृत स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं में से एक, एस्टर डीएम हेल्थकेयर ने बेंगलुरु के एक प्रमुख मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल, एस्टर सीएमआई अस्पताल के लिए अपनी विस्तार योजना की घोषणा की है। यूनिट में 300,000 वर्ग फुट का अतिरिक्त बुनियादी ढांचा विस्तार होगा, जिससे इसकी बिस्तर क्षमता मौजूदा 500 बिस्तरों से बढ़कर 850 बिस्तर हो जाएगी। इस विकास के साथ, कंपनी बेंगलुरु में अपनी उपस्थिति को और मजबूत कर रही है, 1602 बिस्तरों की संचयी बिस्तर क्षमता तक पहुंच रही है, जिससे यह शहर में सबसे बड़े स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं में से एक बन गई है। कंपनी करीब 50 करोड़ रुपये का निवेश करेगी. मौजूदा सुविधा को अपग्रेड करने के लिए 250 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे और वित्त वर्ष 2027 तक इसके चालू होने की उम्मीद है।हेब्बाल, बैंगलोर में 4.45 लाख वर्ग फुट के क्षेत्र में फैला, एस्टर सीएमआई अस्पताल, समकालीन अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ अग्रणी सुपर-स्पेशियलिटी अस्पतालों में से एक है, जो चतुर्थांतुक देखभाल सेवाओं के लिए व्यापक प्राथमिक देखभाल प्रदान करता है। 2016 में अपनी शुरुआत के बाद से, अस्पताल ने आज देश के सर्वश्रेष्ठ मल्टीस्पेशलिटी अस्पतालों में से एक के रूप में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया है - जो देश में नैदानिक मानकों के स्तर को लगातार बढ़ाने के अस्पताल के समर्पण का एक प्रमाण है। एस्टर डीएम हेल्थकेयर के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. आज़ाद मूपेन ने कहा, हमारा चरण-वार विस्तार उन्नत और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के हमारे दृष्टिकोण के अनुरूप है।

सर्राफा बाजार में तेजी, सोना 500 रुपये तक महंगा हुआ

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज मजबूती नजर आ रही है। देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट और 22 कैरेट सोने के भाव में पिछले दिन के मुकाबले 500 रुपये प्रति 10 ग्राम तक की तेजी दर्ज की गई है। इस तेजी के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना आज 73,320 रुपये से लेकर 72,720 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी आज 67,210 रुपये से लेकर 66,600 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। सोने की तरह ही आज चांदी के भाव में भी मजबूती आई है। आज की तेजी के कारण आज दिल्ली सर्राफा बाजार में चांदी 93,100 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 72,870 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 66,810 रुपये प्रति 10

ग्राम दर्ज की गई। इसी तरह मुंबई में 24 कैरेट सोना 72,720 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 66,660 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जबकि चेन्नई में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 73,320 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 67,210 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा अहमदाबाद में 24 कैरेट सोना आज 72,770 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 66,710 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में 24 कैरेट सोना 72,720 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 66,600 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर पहुंचा हुआ है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 72,870 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 66,810 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। वहीं पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 72,770 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई है, जबकि 22 कैरेट सोना 66,710 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह जयपुर में 24 कैरेट सोना 72,870 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 66,810 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी सोने की कीमत में आज तेजी आई है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 72,720 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। वहीं इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 66,600 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

कोयला से रसायन व्यवसाय नई शाखा गठन

एजेंसी

नई दिल्ली।राज्य के स्वामित्व वाली कोल इंडिया ने कोयला-से-रसायन व्यवसाय शुरू करने के लिए एक सहायक कंपनी, भारत कोल गैसीफिकेशन एंड केमिकल्स लिमिटेड (बीसीजीसीएल) को शामिल करने की घोषणा की। कोयला दिग्गज ने बीएसई को सूचित किया कि नई इकाई में कोल इंडिया (सीआईएल) की बहुमत हिस्सेदारी 51 फीसदी है, जबकि शेष 49 फीसदी हिस्सेदारी बीएचईएल के पास है। कोल इंडिया ने फरवरी में कोयला-से-रसायन व्यवसाय शुरू करने के लिए भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (बीएचईएल) के साथ एक संयुक्त उद्यम समझौते पर हस्ताक्षर किए। फाइलिंग में कहा गया है, भारत कोल गैसीफिकेशन एंड केमिकल्स लिमिटेड को कोयला से रसायन व्यवसाय के लिए मध्यवर्ती उत्पादों के रूप में अमोनिया और नाइट्रिक एसिड और अंतिम उत्पाद के रूप में अमोनियम नाइट्रेट का उत्पादन करने के लिए शामिल किया गया है।÷ इस बीच, सीआईएल ने 13,052 करोड़ रुपये की अनुमानित परियोजना लागत पर बर्दवान जिले में ईस्टर्न

कोलफील्ड्स लिमिटेड (ईसीएल) के सोनपुर बाजारी क्षेत्र में कोयला-से-सिंथेटिक प्राकृतिक गैस परियोजना की स्थापना के लिए गेल के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए थे। घरेलू कोयला उत्पादन में कोल इंडिया का योगदान 80 प्रतिशत से अधिक है। अस्वीकरण- यह कहानी सीधे एजेंसी फीड से प्रकाशित की गई है। कोई बदलाव नहीं किया गया है.

आरबीआई रिटेल फिनटेक रिपोजिटरी लॉन्च

एजेंसी

मुंबई। व्यापार में आसानी के लिए प्रवाह पोर्टल, आरबीआई रिटेल डायरेक्ट मोबाइल एप्लिकेशन और फिनटेक रिपोजिटरी लॉन्च किया गया आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने भारतीय रिजर्व बैंक की तीन प्रमुख पहलों की शुरुआत की जिसमें प्रवाह पोर्टल, रिटेल डायरेक्ट मोबाइल ऐप और फिनटेक रिपोजिटरी शामिल हैं।

आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने भारतीय रिजर्व बैंक की तीन प्रमुख पहलों की शुरुआत की जिसमें प्रवाह पोर्टल, रिटेल डायरेक्ट मोबाइल ऐप और फिनटेक रिपोजिटरी शामिल हैं।

प्रवाह पोर्टल किसी भी व्यक्ति या संस्था के लिए विभिन्न नियामक अनुमोदनों के लिए निर्बाध तरीके से ऑनलाइन आवेदन करना सुविधाजनक बना देगा। आरबीआई के एक बयान के अनुसार, यह पोर्टल रिजर्व बैंक द्वारा विनियामक अनुमोदन और मंजूरी देने से संबंधित विभिन्न प्रक्रियाओं की दक्षता को भी बढ़ाएगा। रिटेल डायरेक्ट मोबाइल ऐप खुदरा निवेशकों को रिटेल डायरेक्ट प्लेटफॉर्म तक निर्बाध और

सुविधाजनक पहुंच प्रदान करेगा और सरकारी प्रतिभूतियों (जी-सेक) में लेनदेन में आसानी प्रदान करेगा। रिटेल डायरेक्ट मोबाइल ऐप के लॉन्च के साथ, खुदरा निवेशक अब अपने स्मार्टफोन पर मोबाइल ऐप का उपयोग करके सरकारी प्रतिभूतियों में लेनदेन कर सकते हैं।

मोबाइल ऐप को एंड्रॉइड उपयोगकर्ताओं के लिए प्ले स्टोर और आईओएस उपयोगकर्ताओं के लिए ऐप स्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है। मोबाइल ऐप को निम्नलिखित क्त्र कोड का उपयोग करके भी डाउनलोड किया जा सकता है। फिनटेक रिपॉजिटरी में नियामक दृष्टिकोण से क्षेत्र की बेहतर समझ और उचित नीति दृष्टिकोण डिजाइन करने की सुविधा के लिए भारतीय फिनटेक फर्मों पर डेटा के विस्तृत भंडार की जानकारी शामिल होगी। इन तीन पहलों की घोषणा पहले क्रमशः अप्रैल 2023, अप्रैल 2024 और दिसंबर 2023 में विकास और नियामक नीतियों पर आरबीआई के द्विमासिक वक्तव्य के हिस्से के रूप में की गई थी।

कमजोरी के साथ बंद हुआ शेयर बाजार, मजबूती के बाद लुढ़के सेंसेक्स और निफ्टी

एजेंसी

मुंबई । मुनाफावसूली के दबाव के कारण घरेलू शेयर बाजार लगातार तीसरे कारोबारी दिन गिरावट के साथ बंद हुआ। आज के कारोबार की शुरुआत मजबूती के साथ हुई थी। बाजार खुलने के कुछ देर बाद ही मंदड़ियों ने अपना दबाव बना दिया, जिसकी वजह से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांक गिरते चले गए। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.29 प्रतिशत और निफ्टी 0.19 प्रतिशत की गिरावट के साथ बंद हुए।

आज के कारोबार के दौरान एफएमसीजी और फार्मास्यूटिकल सेक्टर के शेयरों में खरीदारी होती नजर आई। दूसरी ओर पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज, रियल्टी और एनर्जी सेक्टर के शेयरों में जम कर बिकवाली होती रही। इसी तरह इंफ्रास्ट्रक्चर और मेटल इंडेक्स भी गिरावट के साथ बंद हुए। ब्रॉडर मार्केट में भी आज लगातार बिकवाली होती रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.63 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 1.09 प्रतिशत की गिरावट के साथ आज के कारोबार का अंत किया।

आज बाजार की कमजोरी के

कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में सवा तीन लाख करोड़ रुपये से अधिक की कमी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद घट कर 416.62 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। पिछले कारोबारी दिन यानी सोमवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 419.95 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 3.33 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हो गया। आज दिन भर के कारोबार में बीएसई में 3,933 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 1,322 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 2,501 शेयरों में गिरावट का रुख रहा, वहीं 110 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,262 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 633 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 1,629 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 12 शेयर बढ़त के साथ और 18 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। निफ्टी में शामिल शेयरों में से 21 शेयर हरे निशान में और 29 शेयर लाल निशान में बंद हुए। बीएसई का सेंसेक्स आज 194.90 अंक की मजबूती के साथ 75,585.40 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरुआत होते ही मंदड़ियों ने दबाव बना दिया, जिसकी वजह से इस सूचकांक में गिरावट आने लगी। बीच-बीच में खरीदार भी लिवाली का जोर बनाने की कोशिश करते रहे, जिसके कारण इस सूचकांक की चाल में उतार-चढ़ाव भी होता रहा। पूरे दिन के कारोबार के दौरान ज्यादातर समय बिकवाली का दबाव ही बना रहा। लगातार हो रही बिकवाली के कारण ये सूचकांक 307.28 अंक की कमजोरी के साथ 75,083.22 अंक तक लुढ़क गया। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 220.05 अंक की गिरावट के साथ 75,170.45 अंक के स्तर पर बंद हुआ। सेंसेक्स की तरह ही एनएसई के निफ्टी ने आज 44.70 अंक की तेजी के साथ 22,977.15 अंक के स्तर से कारोबार की शुरुआत की। शुरुआती कारोबार में खरीदारी का सहारा मिलने के कारण ये सूचकांक उछल कर 22,998.55 अंक तक पहुंचर गया। इसके बाद मुनाफावसूली शुरू हो जाने की वजह से इस सूचकांक की चाल में गिरावट आ गई। लगातार हो रही बिकवाली के कारण ये सूचकांक 73.95 अंक टूट कर 22,858.50 अंक के स्तर तक गिर गया। दिन भर के कारोबार के बाद निफ्टी 44.30 अंक की कमजोरी के साथ 22,888.15 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

पूरे दिन हुई खरीद-बिक्री के बाद स्टॉक मार्केट के दिग्गज शेयरों में से डिवीज लेबोरेट्रीज 3.22 प्रतिशत, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस 2.88 प्रतिशत, एचडीएफसी लाइफ 2.52 प्रतिशत, ग्रासिम इंडस्ट्रीज 2.08 प्रतिशत और हीरो मोटोकॉर्प 1.97 प्रतिशत की मजबूती के साथ आज के टॉप 5 गेनर्स की सूची में शामिल हुए। दूसरी ओर, अडाणी पोर्ट्स 2.18 प्रतिशत, पावर ग्रिड कॉरपोरेशन 1.62 प्रतिशत, बीपीसीएल 1.46 प्रतिशत, कोल इंडिया 1.38 प्रतिशत और अडाणी एंटरप्राइज 1.37 प्रतिशत की गिरावट के साथ आज के टॉप 5 लूजर्स की सूची में शामिल हुए।

रत विनिर्माण नीतियों के साथ लाभ पहुंचाएगा

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत, वियतनाम प्रमुख लाभार्थी हैं क्योंकि वैश्विक कंपनियाँ चीन के बाहर आपूर्ति श्रृंखलाओं की तलाश कर रही हैं :नोमुराया जैसा कि बहुराष्ट्रीय कंपनियां आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने के महत्व को पहचानती हैं, भारत और वियतनाम प्रमुख लाभार्थी हैं क्योंकि वैश्विक कंपनियां चीन के बाहर आपूर्ति श्रृंखला विकल्पों की तलाश कर रही हैं, वैश्विक निवेश बैंक नोमुरा की एक नई रिपोर्ट में इस बात पर जोर दिया गया है। जैसा कि बहुराष्ट्रीय कंपनियां आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने के महत्व को पहचानती हैं, भारत और वियतनाम प्रमुख लाभार्थी हैं क्योंकि वैश्विक कंपनियां चीन के बाहर आपूर्ति श्रृंखला विकल्पों की तलाश कर रही हैं, वैश्विक निवेश बैंक नोमुरा की एक नई रिपोर्ट में इस बात पर जोर दिया गया है। वैश्विक ब्रोकरेज के अनुसार, भारत अपनी मजबूत विनिर्माण नीतियों के साथ और वियतनाम को लाभ पहुंचाएगा क्योंकि कंपनियां चीन के लिए आपूर्ति श्रृंखला विकल्प तलाश रही हैं। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला स्थापित करने के लिए भारत की स्वाभाविक पसंद होने का एक प्रमुख कारक सरकार द्वारा प्रदान किया गया अनुकूल विनिर्माण वातावरण है, चाहे वह इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, सेमीकंडक्टर या रक्षा और दवा क्षेत्र हो। नोमुरा के अनुमान के अनुसार, इस प्रवृत्ति से 10 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) पर भारत का निर्यात 2023 में 431 बिलियन डॉलर से बढ़कर 2030 तक 835 बिलियन डॉलर हो जाने की संभावना है। देशों और क्षेत्रों में इक्विटी के कई अवसर हैं, लेकिन हम भारत को लेकर सबसे अधिक उत्साहित हैं। निवेशकों को अल्पावधि में धैर्य रखने की जरूरत है, लेकिन हम समय के साथ बुनियादी बातों पर बड़े प्रभाव और अधिक अवसरों की उम्मीद करते हैं।÷ संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, भारत पश्चिमी कॉर्पोरेट दिग्गजों के लिए एक गर्म निवेश स्थल बन गया है। टेक दिग्गज उसके आपूर्तिकर्ताओं का लक्ष्य अगले दो से तीन वर्षों के भीतर भारत में सालाना 50 मिलियन से अधिक निर्माण करना है। फॉक्सकॉन भारत में और अधिक संयंत्र स्थापित करके विनिर्माण का विस्तार भी कर रही है।

इन वजहों से पुरुषों के मुकाबले महिलाएं होती है हार्ट प्रॉब्लम्स का ज्यादा शिकार

हार्ट प्रॉब्लम दुनियाभर में होने वाली मौतों की सबसे बड़ी वजहों में से एक है लेकिन क्या आप जानते हैं हृदय से जुड़ी बीमारियों का खतरा पुरुषों से ज्यादा महिलाओं को होता है। इसकी एक नहीं कई सारी वजहें हैं। जिसमें सबसे बड़ी वजह है मानसिक तनाव। 28 मई को मनाए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का उद्देश्य उन्हें उनकी सेहत के प्रति जागरूक करना है।

भारत में हृदय रोग (कार्डियोवस्कुलर डिजीज) महिलाओं में होने वाली मृत्यु की एक प्रमुख वजह बनता जा रहा है। खराब लाइफस्टाइल और डाइट को हार्ट प्रॉब्लम्स का सबसे बड़ा जिम्मेदार माना जाता है। शहरी क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं के लिए इन दोनों चीजों पर ध्यान दे पाना मुश्किल होता है जिस वजह से उनमें हृदय रोग की संभावना ज्यादा होती है, लेकिन आपको बता दें कि ग्रामीण महिलाओं में भी इसका खतरा कुछ खास कम नहीं है।

हृदय रोग के कई कारण हैं, जिनमें उच्च रक्तचाप, हाई कोलेस्ट्रॉल, डायबिटीज, धूम्रपान, शराब का सेवन, अनहेल्दी डाइट, फिजिकल एक्टिविटी न के बराबर और मानसिक तनाव प्रमुख हैं।

महिलाओं में बढ़ते हार्ट प्रॉब्लम्स की वजह

डॉ. सुखबिंदर सिंह सीबिया, कार्डियोलॉजिस्ट और डायरेक्टर, सीबिया मेडिकल सेंटर, लुधियाना का कहना है कि, %महिलाओं में हृदय रोग के बढ़ते मामलों की एक बहुत बड़ी वजह जरूरत से ज्यादा जिम्मेदारियों का बोझ उठाना है। जो स्ट्रेस बढ़ाने का काम करता है। परिवार और ऑफिस के बीच बैलेंस बनाने की कोशिश में वो अपनी सेहत को इग्नोर करती रहती हैं। बढ़ती उम्र में सेहतमंद रहने के लिए खानपान पर ध्यान देने के साथ ही समय-समय पर हेल्थ चेकअप्स भी कराते रहना जरूरी है। इससे कई बीमारियों का समय रहते पता चल जाता है और जरूरी उपचार से इसे ठीक किया जा सकता है।

हृदय रोग के लक्षण

महिलाओं में हृदय रोग के लक्षण पुरुषों की तुलना में अलग हो सकते हैं, जैसे कि सीने में दर्द की बजाय थकान, सांस लेने में परेशानी, पीठ या जबड़े में दर्द। जिसे आम समस्या समझकर नजरअंदाज कर दिया जाता है। इस वजह से भी कई बार हृदय रोगों का समय रहते पता नहीं चल पाता।

हृदय रोग से बचाव के उपाय

खानपान पर दें ध्यान

महिलाओं में हृदय रोग के जोखिम को कम करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं। इसके लिए सबसे पहले खानपान पर ध्यान देना जरूरी है। डाइट में मौसमी फल व सब्जियो के साथ साबुत अनाज और लो फैट डेयरी प्रोडक्ट्स को शामिल करें। इसके साथ सैचुरेटेड और ट्रांस फैट, सोडियम और शुगरी प्रोडक्ट्स का सेवन कम करके बैड कोलेस्ट्रॉल और ब्लड प्रेशर को कंट्रोल में रखा जा सकता है और दिल की बीमारियों से बचे रहा जा सकता है।

फिजिकल एक्टिविटी है जरूरी

दूसरा महत्वपूर्ण कदम नियमित फिजिकल एक्टिविटी है। रोजाना कम से कम 30 मिनट एक्सरसाइज जरूर करें। वॉकिंग, जॉगिंग, साइकिल चलाना, कार्डियो हार्ट को हेल्दी रखने में मददगार होते हैं। वर्कआउट करने से वजन कंट्रोल में रहता है। इससे हार्ट प्रॉब्लम्स के साथ डायबिटीज का भी खतरा कम हो जाता है।

धूम्रपान से कर लें तौबा

धूम्रपान और शराब के सेवन को नियंत्रित करना भी बहुत जरूरी है। धूम्रपान की लत छोड़कर आप हार्ट से जुड़ी बीमारियों का खतरा काफी हद तक कम कर सकती हैं। इसके अलावा, शराब का भी सेवन सीमित मात्रा में करें, अत्यधिक शराब पीने से ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है और इससे हृदय रोग का जोखिम भी।

स्ट्रेस से रहें दूर

महिलाओं को मानसिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना चाहिए, क्योंकि तनाव और अवसाद हृदय रोग के जोखिम को बढ़ा सकते हैं। नियमित योग, ध्यान और पर्याप्त नींद मानसिक तनाव को कम करने में मदद कर सकते हैं।

नियमित रूप से हेल्थ चेकअप और स्क्रीनिंग भी हृदय रोगों की रोकथाम में महत्वपूर्ण है। ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल और ब्लड शुगर की जांच कराते रहें और डॉक्टर के निर्देशानुसार दवाओं का सेवन करें।

कैसे करें किसानी

अपनी खेती की ज़मीन को बचाना है तो प्रयास करना होगा। चुनावी घोषणाओं की गारंटी और मौसम का कोई भरोसा नहीं है, इसलिए मुगालते में न रहें। किसानों की एकजुटता और बहुफसली प्रणाली ही समस्या का समाधान है। गेहूं और धान के अधिकाधिक उत्पादन से समस्या और विकराल हो जाएगी, इसलिए समय रहते इन फसलों का रकबा कम करते जाएं और अन्य फसलों का रकबा बढ़ाते जाएं।कई राज्यों में भारी बारिश और ओलावृष्टि ने किसानों की खड़ी फसल को हाल में काफी नुकसान पहुंचाया है और मौसम विभाग के अनुसार अभी आगे भी मौसम के तेवर यूं ही सख्त बने रहने की संभावना है। भले ही किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य% (एमएसपी) का कानून न मिले, भले ही खराब हुई फसलों का मुआवजा न मिले, परंतु किसानों को सरकार और मौसम की मार मिलना तय है। किसानों पर दोहरी मार पड़ने की परंपरा बहुत पुरानी है। एक तो फसलों के सही दाम नहीं मिलते और ऊपर से अब तो लगभग हर साल ही मौसम की मार किसानों को झेलनी पड़ रही है।देश में महंगाई का बोलबाला है, परंतु किसानों की फसलों के दाम वैसे नहीं बढ़ते जैसे सरकारी कर्मचारियों के महंगाई भत्ते और सैलरी बढ़ती है, जैसे देश के माननीय सांसदों और विधायकों की सैलरी बढ़ती है? आखिर देश के करोड़ों लोगों का पेट और व्यापारियों के वेयर हाऊस भरने वाले किसानों को अपनी उपज का दाम मिलने में इतनी परेशानी क्यों है? क्या कारण है कि सरकार इनकोएमएसपी भी नहीं दे पा रही है? एक तरफ तो सरकार कह रही है कि किसानों की आमदनी दुगुनी हो गई है, दूसरी तरफ उन्हें 6000 रुपये सालाना किसान सम्मान निधिभी दी जा ही है।जब सरकार को किसानों की इतनी ही चिंता है तो फिर स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट के अनुसार एमएसपी% पर सी 2+50फीसदी फॉर्मूले के मुताबिक एमएसपी क्यों नहीं दे देती? यदि इस हिसाब से किसानों को अपनी फसल के दाम मिलने लगेंगे तो किसानों को %किसान सम्मान निधि% की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। %स्वामीनाथन आयोग% की रिपोर्ट में कहा गया है कि सरकार को %एमएसपी% को उत्पादन की औसत लागत से कम-से-कम 50प्रतिशत अधिक बढ़ाना चाहिए। इसे %सी2+50प्रतिशत% फॉर्मूले के नाम से भी जाना जाता है। इस फॉर्मूले में किसानों को 50प्रतिशत रिटर्न देने के लिए पूंजी की अनुमानित लागत और भूमि का किराया (जिसे सी-2 कहा जाता है) शामिल है।

यदि सरकार चौधरी चरण सिंह जी और स्वामीनाथन जी को भारतरत्न दे सकती है तो फिर किसानों को उन्हीं की रिपोर्ट के अनुसार %एमएसपी% क्यों नहीं दे सकती? आश्चर्य की बात तो यह है कि चुनाव के समय में भी सरकार की तरफ से कोई नरमी नहीं बरती जा रही। इस बार के चुनावी अंतरिम बजट में सभी वर्गों एवं किसानों को बड़ी उम्मीदें थीं, परंतु किसी को कुछ हाथ नहीं लगा। उल्टा कृषि बजट में कटौती कर दी गई। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने हेतु बजट में कोई प्रावधान नहीं रखे गए।

प्रश्न उठता है कि देश के किसानों के हालातों में कैसे सुधार आएगा? एक तरफ किसानों की लागत में लगातार बढ़ोतरी हो रही है, लागत के अनुपात में फसलों के दाम नहीं मिल रहे, वहीं दूसरी तरफ मौसम के कारण फसलों को जो नुकसान होता है उसका मुआवज़ा और बीमा भी समय पर नहीं मिलता। किसानों की परेशानी कम होने का कोई रास्ता निकलता नहीं दिख रहा है। किसानों को बीमा तथा मुआवजा समय पर मिलें, इसके लिए भी ठोस कदम उठाना चाहिए। दृढ़ निश्चय, ईमानदारी और सही नीयत के साथ यदि काम किया जाएगा तो इस कार्य को करने में कोई कठिनाई नहीं है।

दूसरी ओर किसानों को भी प्रयास करना चाहिए कि वे एकल फसल पद्धति छोड़कर अन्य फसलों का भी रकबा बढ़ाएं, ताकि उत्पादन को नियंत्रित करके फसलों के सही दाम लिए जा सकें। इसे हम एक उदाहरण से समझते हैं। मान लेते हैं कि एक 5 एकड़ का किसान रबी सीज़न में गेहूं की फसल से 100 क्विंटल उत्पादन लेता है, जबकि खरीफ सीज़न में धान लगाकर 75 क्विंटल उत्पादन लेता है। दोनों फसलों से किसान को 175 क्विंटल उत्पादन प्राप्त हुआ। अब किसान के पास भंडारण की व्यवस्था नहीं है, इसलिए यह माल बेचना उसकी मजबूरी हो जाएगी। यदि किसान इस 5 एकड़ में रबी सीजन् में सरसों, चना, मसूर,अलसी, जौ, धनिया इत्यादि फसलों का रकबा बढ़ा दे और गेहूं सिर्फ एक एकड़ में लगाए तो उसको सिर्फ 20 क्विंटल गेहूं मिलेगा। बाकी 4 एकड़ में दूसरी फसलों से उसे उसकी ज़रूरत का सामान भी मिलेगा और गेहूं की अपेक्षा अधिक दाम भी मिलेगा, खर्च भी कम होगा और मजबूरी में बेचने की समस्या से भी निजात मिलेगी। किसान ने हर फसल का सीमित उत्पादन किया है जिसे वह साल भर अपने हिसाब से बेच सकता है।

इन फसलों के अलावा भी बहुत सारी फसलें हैं जिन्हें अपने खेत में लगाया जा सकता है। कुल मिलाकर, यदि अधिक-से-अधिक फसलें अपने खेत में उत्पादित करें तो सरकारों और व्यापारियों के आगे हाथ फैलाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। दो एकड़ से लेकर 15 एकड़ वाले छोटे किसान यह कर सकते हैं कि वे अपनी ज़मीन में अपनी ज़रूरत की सभी चीज़ों का थोड़ा-थोड़ा उत्पादन लें और सीधे ग्राहकों को बेचें। सरकार और व्यापारियों के भरोसे खेती न करें, बल्कि अपने ग्राहकों के भरोसे खेती करें। सरकार चाहे %एमएसपी% की गारंटी न दे, परंतु यदि आप अपने ग्राहकों को भरोसे की गारंटी देने में कामयाब हो गए तो आपको कर्ज से भी मुक्ति मिलेगी और मंडियों के चक्करों से भी। काम कोई ज़्यादा कठिन नहीं है, बस अपनी पढ़ाई-लिखाई का इस्तेमाल करके योजनाबद्ध तरीके से काम करने से इस समस्या का हल निकल आएगा।यदि आपको अपनी खेती की ज़मीन को बचाना है

तो प्रयास करना होगा। चुनावी घोषणाओं की गारंटी और मौसम का कोई भरोसा नहीं है, इसलिए मुगालते में न रहें। किसानों की एकजुटता और बहुफसली प्रणाली ही समस्या का समाधान है। गेहूं और धान के अधिकाधिक उत्पादन से समस्या और विकराल हो जाएगी, इसलिए समय रहते इन फसलों का रकबा कम करते जाएं और अन्य फसलों का रकबा बढ़ाते जाएं। पहले अपने परिवार का पेट भरने के बारे में सोचें, न कि सरकार और व्यापारियों के वेयरहाउस भरने का। इसी तरीके से जलवायु तथा मौसम में हो रहे बदलाव के प्रति अनुकूलित हुआ जा सकता है।

संपादकीय

विपक्ष को धमकाने के मायने

लोकसभा चुनाव का प्रचार करते हुए भारतीय जनता पार्टी के दोनों स्टार प्रचारकों, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह जिस प्रकार से विरोधी दलों एवं उनके नेताओं को धमका रहे हैं, उससे यह फिर से साबित हुआ है कि भाजपा को लोकतांत्रिक मूल्यों में कतई आस्था नहीं है। अपने दस वर्षों के शासन काल में मोदी ने विपक्ष मुक्तभारत बनाने के लिये देश के लोकतांत्रिक व संवैधानिक ढांचे को ध्वस्त तो किया ही है, दोनों की हालिया धमकियां बताती हैं कि वे किसलिये तीसरी बार सरकार बनाने के लिये बेतरह उतावले हैं। साफ है कि अब तक वे जिस प्रकार से प्रतिपक्ष को कुचलते आये हैं, उसी बचे-खुचे काम को अबकी बार 400 पार का लक्ष्य पाकर करना चाहते हैं। मोदी-शाह अपनी धमकियों को किस प्रकार से अंजाम देते हैं, इसके लिये उन्हें तीसरी मर्तबा चुनाव बड़े बहुमत से जीतना होगा जिसके संकेत तो दिखलाई नहीं देते परन्तु ये धमकियां बताती हैं कि उनके जीतने पर स्थिति बदतर ही होंगी।

बिहार के काराकट की प्रचार सभा में शनिवार को मोदी ने कहा कि हैलीकॉप्टर में राइड करने का समय पूरा होने के बाद ये आरजेडी वालों को नौकरी के बदले जमीन मामले में जेल जाना होगा। उनका आशय राष्ट्रीय जनता दल के तेजस्वी यादव (बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री) एवं उनके पिता लालू प्रसाद यादव (पूर्व मुख्यमंत्री-बिहार) की ओर था। पिछले कुछ समय से मोदी व भाजपा इस मुद्दे को लेकर तेजस्वी पर हमलावर हैं। वैसे पलटवार करते हुए तेजस्वी ने रविवार को कहा कि एक 74 वर्ष का नेता उनके राज्य में आकर उन्हें जेल भेजने की धमकी दे रहा है। उन्होंने साफ किया कि वे इन गीदड़ भभकियों से डरते नहीं और बतलाया कि- यह झारखंड नहीं बिहार है। उन्हें हाथ लगाया तो पटना से दिल्ली तक आंदोलन होगा। इस बात को लेकर मोदी की जबर्दस्त घेराबन्दी हुई है। ये तो रही मोदी की बात, उधर अमित शाह ने पंजाब के लुधियाना की एक सभा में जनता से कहा कि %आप कुछ लोगों को इधर भेजो, चुनाव के बाद आम आदमी पार्टी की सरकार गिर जायेगी।% उधर एक दिन पहले ही मोदी ने अपने एक और भाषण में अपनी मुफ्त राशन योजना को वोट से जोड़ते हुए अप्रत्यक्ष रूप से कह दिया कि लाभार्थियों को उन्हें वोट देना चाहिये ताकि उन्हें पुण्यमिल सके। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि राशन देने वाले (यानी वे स्वयं) को जो वोट नहीं देगा वह पाप करेगा।पाप-पुण्य की बात तो अवधारणात्मक है अत- उस पर चर्चा फिजूल है, लेकिन जो दो अन्य धमकियां मोदी व शाह ने दी हैं (तेजस्वी को जेल भेजने एवं पंजाब सरकार को गिराने की) वे बहुत गम्भीर प्रकृति की हैं। मोदी ने तेजस्वी को जेल भेजने की धमकी देकर यह साबित कर दिया है कि वे चाहें केवल कार्यपालिका प्रमुख हों लेकिन वे न्यायिक शक्तियां भी रखते हैं। कायदे से किसी को जेल भेजने या न भेजने का निर्णय कोर्ट करती हैं। पुलिस या अन्य जांच एजेंसियां केवल अभियोजन पेश करती हैं। यहां तक कि दोषियों को जांच एजेंसियों की हिरासत में रखना है या न्यायिक हिरासत में, या छोड़ देना है-यह तय करने का भी काम न्यायपालिका का है, न कि पुलिस या कार्यपालिका के किसी भी अंग का- चाहे वह कितने भी ऊंचे पद पर क्यों न हो। मोदी ने जिस कथित आरोप में लालू परिवार के सदस्यों को (जिनमें तेजस्वी भी शामिल हैं) जेल भेजने की बात कही, उसकी कई बार जांच हुई और हर बार फाइल बन्द हुई है। मोदी का किसी बन्द हो चुके मामले को लेकर किसी को धमकाना बेहद शर्मनाक है, वह भी केवल इसलिये क्योंकि वह उनके विरोधी दल का है।

मोदी की धमकी यह भी दर्शाती है कि वे जिसे चाहें उसे जेल भेज सकते हैं। यानी उनके लिये अपराध का स्वरूप, उसकी वास्तविकता, अपराध संहिता या न्यायिक प्रक्रिया का कोई महत्व या मायने नहीं है। उनकी बात यह भी संकेत देती है कि उनके कार्यकाल में बगैर अपराध बड़ी संख्या में लोगों को विभिन्न तरह के मामलों में जेल भेजा गया है वे मामलों के गुण-दोषों के आधार पर नहीं बल्कि मोदी की मर्जी से भेजे गये हैं। इनमें केवल प्रतिपक्षी नेता नहीं बल्कि सरकार की आलोचना करने वाले मानवाधिकार कार्यकर्ता, वकील, पत्रकार, लेखक, बुद्धिजीवी आदि शामिल हैं। ऐसे वक्त में जब चुनाव का आखिरी चरण बचा है और नतीजे आने में मात्र एक ही हफ्ता शेष है, मोदी की धमकी बतलाती है कि भाजपा की जमीन खिसकी हुई है और मोदी को विपक्ष की गम्भीर चुनौती मिल रही है।शाह द्वारा लोकसभा चुनाव के बाद पंजाब सरकार को गिराने की धमकी किसी निर्वाचित सरकार को गैर लोकतांत्रिक तरीके से गिराने के उनके इरादे और अभी से तैयारी की ओर इशारा है। वैसे तो 2014 में केन्द्र की सत्ता में आई भाजपा अपने दोनों कार्यकालों में यही काम मनोयोग से करती आई है। विपक्ष की बहुमत वाली राज्य सरकारें वह विधायकों को खरीदकर या धमकाकर तोड़ती-गिराती आई है। उन्हें हटाकर भाजपा की सरकारें बिठाने को ऑपरेशन लोटस जैसा नाम दिया गया है।

बड़े खिलाड़ी बनकर उभरे अखिलेश

समाजवादी पार्टी को मूलरूप से पिछड़ों, किसानों और नौजवानों की पार्टी माना जाता था। बसपा से गठबंधन टूटने के बाद अखिलेश यादव ने समाजवादी पार्टी का विस्तार करने का प्रयास किया। दलित समाज को जोड़ने के लिए सपा कार्यालय में अम्बेडकर जयंती मनाने की शुरुआत हुई। डॉ राममनोहर लोहिया के साथ अब डॉ अम्बेडकर का चित्र भी सपा कार्यालय में लगा दिया गया। दलित वोटर तक पहुंच बढ़ाने के लिए अखिलेश यादव ने लोहिया वाहिनी की तर्ज पर बाबा साहब वाहिनी का गठन किया।2024 के लोकसभा चुनाव में देश के सबसे बड़े सूबे उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव एक बड़े खिलाड़ी के तौर पर उभरे हैं। इस चुनाव में अखिलेश यादव पीडीए फार्मूला लेकर आए हैं-पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक। पीडीए दरअसल कांशीराम के 15 बनाम 85 की राजनीति का ही नया संस्करण है। अखिलेश यादव की रैलियों में बढ़ती भीड़ से ऐसा लगता है कि समाजवादी पार्टी में लोगों का विश्वास लौट रहा है। अखिलेश यादव के टिकट वितरण के सामाजिक समीकरण की तारीफ हो रही है। महंगाई और बेरोजगारी से पीड़ित देश का जनमानस इस समय विपक्ष इंडिया गठबंधन की तरफ देख रहा है। खास बात यह है कि इंडिया गठबंधन जनता के मूल मुद्दों को लगातार उठा रहा है। 80 लोकसभा सीटों वाले सबसे बड़े सूबे उत्तर प्रदेश पर पूरे देश की निगाहें लगी हुई हैं। आज उत्तर प्रदेश में भाजपा के सामने सबसे बड़ी ताकत अखिलेश यादव हैं। पिछली तीन असफलताओं के बावजूद इस चुनाव में उनका पीडीए फार्मूला कारगर होते हुए दिख रहा है।ऑस्ट्रेलिया से पढ़ाई करके लौटे अखिलेश यादव पिता मुलायम सिंह यादव का साथ देने के लिए राजनीति में आ गए। सपा के नौजवानों में %अखिलेश भैया% तेजी से लोकप्रिय हो गए। पहली बार अखिलेश यादव 2010-11 में तब सुर्खियों में आए जब उन्होंने साइकिल से यात्रा करते हुए पूरे प्रदेश का दौरा किया। मायावती के कथित भ्रष्टाचार के खिलाफ अखिलेश यादव की साइकिल यात्रा से समाजवादी पार्टी को नई ऊर्जा मिली। 2012 के विधानसभा चुनाव में बसपा को हराकर सपा ने 403 की विधानसभा में 224 सीटें जीतकर पूर्ण बहुमत हासिल किया। उम्र की ढलान पर पहुंच चुके पिता मुलायम सिंह यादव ने तब उत्तर प्रदेश की बागडोर अपने नौजवान बेटे अखिलेश यादव को सौंप दी।2012 से 2017 के बीच अखिलेश यादव यूपी के सबसे युवा मुख्यमंत्री रहे। कुछ गलतियों और अनेक उपलब्धियों के साथ अखिलेश यादव को मीडिया में बहुत तवज्जो नहीं मिली। सवर्ण मीडिया लगातार उनकी खिल्ली उड़ाता रहा। यूपी में साढ़े तीन मुख्यमंत्री का मेटाफर प्रयोग करते हुए मीडिया अखिलेश यादव को आधा मुख्यमंत्री बताकर कटाक्ष करता रहा। पार्टी, सरकार और प्रशासन में ज्यादातर सवर्णों के इर्द गिर्द रहे अखिलेश यादव को शायद पिछड़े होने का एहसास नहीं था। लेकिन 2017 का चुनाव हारने के बाद जब अखिलेश यादव ने अपना मुख्यमंत्री आवास खाली किया तो उसी मीडिया के जरिए अखिलेश यादव को %टोंटी चोर% कहकर प्रचारित किया गया। लेकिन इसे राजनीतिक आलोचना का एक हिस्सा मानकर शायद अखिलेश यादव ने भुला दिया। हालांकि आज भी सवर्ण मीडिया और भाजपा की ट्रोल आर्मी अखिलेश यादव को %टोंटी चोर% कहने से गुरेज नहीं करती। जाहिर तौर पर समय बदल गया है। सामाजिक संरचना भी बदली है। लेकिन सवर्ण सामन्तों के भीतर भरी हुई नफरत और हिकारत पीढ़ी दर पीढ़ी चली जा रही है। इसलिए गालियों की जगह सिर्फ शब्द बदले हैं। दरअसल, अपमानजनक शब्दों के जरिए पिछड़ों और दलितों को उनकी %हैसियत% बताने की कोशिश की जाती है। उनके हौंसले को तोड़ा जाता है। इससे उनके भीतर हीनताबोध पैदा होता है। सवर्ण वर्चस्ववादियों के लिए चुना हुआ मुख्यमंत्री हो या चयनित आईएएस अथवा प्रोफेसर, सब निम्न और घृणास्पद हैं। हिंदुत्व के नाम पर आरएसएस और भाजपा इसी वर्चस्ववाद को पोसती है। उनके भीतर के जातिवादी अभिमान और श्रेष्ठताबोध को बढ़ावा देती है। लोकतंत्र और संविधान के बावजूद उनके भीतर का यह भेदभाव समाप्त नहीं हुआ है। सत्ता मिलते ही यह वर्चस्ववाद और श्रेष्ठताभाव कुलाचें भरने लगता है।पिछड़े या शूद्र होने का एहसास अखिलेश यादव को पहली बार शायद तब हुआ जब मुख्यमंत्री आवास से निकलने के बाद 5, कालिदास मार्ग को धोया गया। 2017 का विधानसभा चुनाव जीतकर भाजपा ने गोरखपुर स्थित गोरखनाथ मठ के महंत योगी आदित्यनाथ को उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया। मुख्यमंत्री आवास में प्रवेश करने से पहले 5, कालिदास मार्ग को गंगाजल से धोया गया और मंत्रोच्चार के जरिए पवित्र किया गया। अखिलेश यादव के लिए यह बेहद अपमानजनक था। इसके बाद भी भाजपा की ट्रोल आर्मी द्वारा लगातार उनके खिलाफ भद्दे-भद्दे कमेंट किए जाते रहे।अखिलेश यादव ने 2019 के लोकसभा चुनाव में बसपा के साथ गठबंधन किया। इस गठबंधन के लिए अखिलेश यादव ने खुद पहल की। बसपा सुप्रीमो के घर जाकर उन्होंने मायावती का सम्मान किया। चुनाव के दरम्यान कन्नौज की सभा में अखिलेश यादव की पत्नी डिंपल यादव ने मंच पर मायावती के पैर छूकर आशीर्वाद लिया। हालांकि डिंपल यादव गठबंधन प्रत्याशी के तौर पर चुनाव हार गयीं। चूंकि 2019 का लोकसभा चुनाव पुलवामा में हुए आतंकवादी हमले और

पीओके में भारतीय सेना द्वारा एयर स्ट्राइक के कारण राष्ट्रवाद के मुद्दे पर केंद्रित हो गया। इसके अलावा सपा और बसपा के कार्यकर्ताओं में तालमेल की कमी के कारण गठबंधन को सिर्फ 15 सीटों पर सफलता मिली। चुनाव के बाद मायावती ने सपा के वोट ट्रांसफर नहीं होने का आरोप लगाकर एक तरफा गठबंधन तोड़ दिया।समाजवादी पार्टी को मूलरूप से पिछड़ों, किसानों और नौजवानों की पार्टी माना जाता था। बसपा से गठबंधन टूटने के बाद अखिलेश यादव ने समाजवादी पार्टी का विस्तार करने का प्रयास किया। दलित समाज को जोड़ने के लिए सपा कार्यालय में अम्बेडकर जयंती मनाने की शुरुआत हुई। डॉ राममनोहर लोहिया के साथ अब डॉ अम्बेडकर का चित्र भी सपा कार्यालय में लगा दिया गया। दलित वोटर तक पहुंच बढ़ाने के लिए अखिलेश यादव ने लोहिया वाहिनी की तर्ज पर बाबा साहब वाहिनी का गठन किया। डॉ अम्बेडकर की जयंती के अवसर पर अखिलेश यादव ने अपने पिता मुलायम सिंह यादव की मौजूदगी में 14 अप्रैल 2021 को बाबा साहब वाहिनी बनाने का ऐलान किया। पार्टी के संविधान में संशोधन करके बाबा साहब वाहिनी को सपा का एक फ्रंटल ऑर्गेनाइजेशन घोषित किया गया। इसके राष्ट्रीय और प्रदेश अध्यक्ष पद पर दलित समाज को नेतृत्व दिया गया।अखिलेश यादव ने अपनी पार्टी के दरवाजे बसपा के नेताओं के लिए खोल दिए। परिणामस्वरूप कई पुराने नेता बसपा छोड़कर समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए। लालजी वर्मा, स्वामी प्रसाद मौर्य, रामअचल राजभर, राजाराम पाल, इंद्रजीत सरोज, रामप्रसाद चौधरी जैसे कई नेता अखिलेश यादव के साथ आ गए। 2022 के विधानसभा चुनाव से पूर्व अखिलेश यादव का कुनबा और मजबूत हो गया। अपना दल (कमेरवादी) की पल्लवी पटेल, सुभास्पा के ओम प्रकाश राजभर, महान दल के केशवदेव मौर्य, जनवादी क्रांति पार्टी के संजय चौहान आदि पिछड़ा और अति पिछड़ा समाज से आने वाले नेता और दल समाजवादी पार्टी से जुड़ गए। 2022 के विधानसभा चुनाव से पहले सपा की स्थिति काफी मजबूत दिख रही थी। लेकिन ध्रुवीकरण की राजनीति और बेहतरीन चुनावी प्रबंधन के जरिए भाजपा फिर से चुनाव जीतने में कामयाब हो गई। अलबत्ता, अखिलेश यादव को एहसास हो गया था कि यूपी में आगे की राजनीतिक लड़ाई दलित और पिछड़ों के मुद्दों के आधार पर ही जीती जा सकती है। 2022 के विधानसभा चुनाव में अखिलेश यादव ने सपा पर यादव मुस्लिम पार्टी होने के आरोप से पीछा छुड़ाने की कोशिश की थी। अखिलेश यादव ने विधानसभा चुनाव में पिछड़ों की एक मजबूत जाति कुर्मी-पटेल को दो दर्जन से अधिक टिकट दिए थे, जिसमें 14 जीतकर आए। इसी तरह उन्होंने अन्य पिछड़ी जातियों को भी कमोबेश प्रतिनिधित्व देने की कोशिश की थी।2021 में बिहार में नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव ने जाति जनगणना की मांग को लेकर प्रधानमंत्री से मुलाकात की। बिहार के भाजपा नेता इसके विरोध में आ गए। इसका असर देश व्यापी पिछड़े समाज पर हुआ। इसीलिए कोरोना के बहाने नरेंद्र मोदी ने जनगणना ही कराने से इनकार कर दिया। नीतीश सरकार ने 2023 में जातिगत जनगणना करके आंकड़े जारी कर दिए। अब एक बार फिर जातिगत जनगणना और पिछड़ा विमर्श राजनीतिक चर्चा का केंद्र बिंदु बन गया। भाजपा और मोदी सरकार इस मुद्दे पर बुरी तरह से घिर गई। जमीन पर चल रहे सामाजिक आंदोलन और जाति जनगणना के प्रभाव को पहचानते हुए अखिलेश यादव ने भी जाति जनगणना की मांग उठाई। इसी दरमियान उन्होंने अपना पीडीए समीकरण दिया और ऐलान किया कि पीडीए ही एनडीए को हराएगा।जनवरी 2024 में हुए राज्यसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के कई सवर्ण विधायकों ने भाजपा का समर्थन किया। मनोज पांडे, विनोद चतुर्वेदी, राकेश प्रताप सिंह और अभय सिंह आदि विधायकों ने क्रॉस वोटिंग की। इसका अखिलेश यादव पर बड़ा प्रभाव पड़ा। पीडीए पर उनका विश्वास और मजबूत हो गया। लेकिन इस दरमियान ओमप्रकाश राजभर, संजय चौहान, केशव देव मौर्य और जयंत चौधरी भाजपा के साथ लौट गए। पल्लवी पटेल और स्वामी प्रसाद मौर्य ने भी अलग रास्ता अख्तियार कर लिया। अखिलेश यादव ने बेहद शालीनता से इस स्थिति का सामना किया। लोकसभा चुनाव के ठीक पहले उन्होंने कांग्रेस के साथ गठबंधन किया। कांग्रेस को 17 सीटें मिलीं। 63 सीटों पर समाजवादी पार्टी ने अपने प्रत्याशी उतारे।

अजब-गज़ब जीव-जंतु

दुनिया में बहुत सारे ऐसे जीव-जन्तु हैं, जो अलग हैं। किसी में सूंघने की गजब की क्षमता होती है तो कुछ काफी समय तक बर्फ के अन्दर जीवित रह सकते हैं। इन्हीं खूबसूरत और आकर्षक प्राणियों की दुनिया में चलते हैं...

स्नोई आउल

बर्फ जैसे सफेद रंग में रंगे इस आउल को इसी रंग की वजह से स्नोई आउल कहा जाता है। यह हमेशा बर्फीले इलाके और टुंड्रा प्रदेश में पाया जाता है। खासतौर से आर्कटिक, कनाडा, उत्तरी अमेरिका, यूरोप और एशिया में यह मिलता है।

स्नोई आउल है खास

- सामान्य रूप से इसका आकार 52 से 71 सेमी का होता है।
- मादा स्नोई आउल की अपेक्षा नर अधिक सफेद और सुंदर दिखता है।
- सामान्य तौर पर उल्लू दिन में सोता है और रात को जागता है, लेकिन स्नोई आउल को दिन में भी आसानी से दिखाई देता है और यह पूरे दिन आसानी से अपना सभी काम करता है।
- यह अपनी एक्सलेंट आईसाइट (देखने की क्षमता) की वजह से एक अलग पहचान रखता है।

अंगोरा रैबिट

अंगोरा रैबिट सबसे पुराने पालतू खरगोशों में से एक है। इसके शरीर पर सफेद रंग के काफी बड़े-बड़े घने मुलायम और सिल्की रोएं होते हैं। रोएं इतने बड़े और घने होते हैं, जिनकी वजह से इसका पूरा शरीर उन्हीं से ढंका रहता है।

अंगोरा है सबसे प्यारा

- इसकी कई प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें से जिआंट, सैटिया, इंग्लिश और फ्रेंच अंगोरा रैबिट सबसे अधिक पाए जाते हैं।
- अंगोरा रैबिट का वजन 2 से 5.5 कि.ग्रा. तक होता है।
- इसके रोएं से सिल्की कपड़े और शॉल बनाए जाते हैं।
- घने और बड़े रोएं की वजह से अंगोरा रैबिट टैडी बियर के जैसा दिखता है।
- अंकारा में ये सबसे पहले मिले। अंकारा को पहले अंगोरा नाम से जाना जाता था, इसी वजह से इसे अंगोरा कहा जाता है।

भोजन साफ करने के बाद ही खाता है रैकून

पनामा तथा दक्षिण कनाडा में पानी के समीप जंगलों, झीलों व झरनों के किनारों पर पाए जाने वाले जानवर 'रैकून' में कई ऐसी विशेषताएं देखने को मिलती हैं, जो इसे दूसरे जानवरों से अलग श्रेणी में रखती हैं। विश्वभर में इस अनोखे जानवर पर अब तक अनेक शोध हो चुके हैं और वैज्ञानिक आज भी इस पर लगातार शोध कर रहे हैं किन्तु अभी तक वैज्ञानिक रैकून के बारे में ज्यादा कुछ पता लगाने में सक्षम नहीं हो पाए हैं। रैकून नामक इस जानवर की एक खासियत तो यह है कि यह रात के समय जागता है और दिन में सोता है लेकिन इसकी सबसे बड़ी विशेषता इसका भोजन करने का सभ्य तरीका है। यह अपने भोजन को पटक-पटक कर साफ करने के बाद ही खाता है। रैकून के आगे के पैर इंसानों के पैरों की भांति ही होते हैं और अपने इन्हीं पैरों का प्रयोग रैकून भोजन को साफ करने के लिए करते हैं। रैकून का पसंदीदा भोजन मछली तथा मेंढक हैं किन्तु पसंदीदा भोजन उपलब्ध न होने पर यह छोटे स्तनधारी पक्षी, उनके अंडों तथा जंगल में पाए जाने वाले फल-फूलों को भी अपना आहार बना लेता है।

इसकी एक और खासियत यह है कि आप इस जानवर को पालतू बना सकते हैं। आप कहेंगे कि इसमें भला विशेषता कैसी क्योंकि इंसान ने तो शेर-चीते जैसे खूंखार जानवरों तक को पालतू बना डाला लेकिन रैकून की खासियत है कि पालतू बनाने के बाद इसकी देखभाल बिल्कुल एक छोटे बच्चे की तरह करनी पड़ती है क्योंकि अगर आपका व्यवहार इसके प्रति ठीक न हो तो समझ लीजिए कि आपकी खैर नहीं! दरअसल रैकून जितना शांत दिखता है, यह उतना ही गुस्सैल भी है। रैकून की नाक तीखी तथा कान छोटे होते हैं। ज्यादातर स्थानों पर प्राय: भूरे रंग के रैकून ही मिलते हैं, पर कहीं-कहीं काले रंग के रैकून भी पाए जाते हैं किन्तु यह प्रजाति दुर्लभ है। रैकून की पूंछ करीब 25 सेंटीमीटर लम्बी होती है जिस पर एक बहुत ही सुंदर निशान होता है। पूंछ सहित रैकून की लंबाई करीब 1 मीटर होती है और इसका वजन करीब 15 किलोग्राम होता है। इतनी विचित्र खूबियों वाले इस अनोखे जानवर का जीवनकाल ज्यादा लम्बा नहीं है। रैकून की औसत आयु 5 से 8 साल के बीच ही होती है।

सीधा ऊपर क्यों जाता है रॉकेट

रॉकेट में पंख नहीं होते और इसलिए उन्हें ऊपर उठने के लिए जरूरी धक्का उनके इंजन से ही मिलता है। प्लेन ज्यादा भारी होता है और उसे ऊपर उठने के लिए हवा को बहुत तेज गति से पीछे छोड़ना पड़ता है। इसलिए वह पहले रनवे पर कुछ दूर चलकर पंखों से हवा को ठेलने जितना बल प्राप्त करता है। रॉकेट को जमीन पर दौड़ने और फिर आसमान में धक्का देने के बजाय उसे सीधे हवा में उठा देने का काम इंजन आसानी से कर पाता है। रॉकेट और एरोप्लेन दोनों एक ही सिद्धांत पर काम करते हैं। दोनों गैसें पीछे छोड़ते हैं और उससे उन्हें आगे जाने का धक्का मिलता है।

किसी भी विमान को ऊपर उठने के लिए धक्के की जरूरत पड़ती है। एरोप्लेन, पक्षी और उड़ने वाले कीट के पंखों से जब हवा टकराती है तो इस हवा को पंखों से पीछे ठेलकर वे ऊपर उठते हैं।

दूर का दिखाने वालीदूरबीन

चिड़िया देखना हो या फिर तारे। एक दूरबीन से दो काम बहुत अच्छे से हो सकते हैं। अपनी पॉकेट मनी बचाकर अगर ऐसी कोई चीज खरीदते हो तो वह जिंदगीभर काम आएगी। दूरबीन दूर की दुनिया को तुम्हारे पास ले आएगी। जाड़े के दिनों में तो प्रकृति को, पंछियों और तारों को दूरबीन से घंटों देखा जा सकता है। जन्मदिन पर तुम पापा-मम्मी से कोई बड़ी चीज मांगने के बजाय दूरबीन की जिद भी कर सकते हो। उन्हें भी दूरबीन दिलाने में कोई परेशानी नहीं होगी। दूरबीन से देखने पर नई दुनिया खुल जाती है। दूर की कौड़ी को पास लाने वाली दूरबीन अगर तुम्हारी दोस्त बन जाए तो क्या बात है। तो ले आओ दूर की चीजों को पास, एक दूरबीन के साथ।

मैंडरिन फिश

मछलियों की खूबसूरत और आकर्षक प्रजातियों में से एक है मैंडरिन फिश। दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया में इसकी उत्पत्ति का स्थान है। नीले और हरे रंग की मछली के ऊपर नारंगी रंग की धारी से सजी खूबसूरती और चमकीले लाल रंग की पूंछ को देखकर कोई भी इसकी खूबसूरती का कायल बन जाता है।

क्यों है मैंडरिन अलग

- मैंडरिन फिश में नर फिश मादा से बड़ी होती है।
- यह जोड़े या समूह में पाई जाती है।
- इसका आकार काफी छोटा होता है। सामान्य रूप से 6 से.मी. के आकार की मछली पाई जाती है।
- इस खूबसूरत मछली को कम ही देखा जाता है। पानी की गहराइयों में रहने की वजह से यह कम ही दिखाई पड़ती है।
- अपनी खूबसूरती और अलग रंग की वजह से यह समुद्र में अन्य मछलियों के साथ होते हुए भी आसानी से पहचान में आ जाती है।

स्नो लेपर्ड

यह लेपर्ड बर्फीले इलाके में पाया जाता है। वैसे तो यह बर्फीले इलाके में रहना पसंद करता है, लेकिन ठंड के दिनों में बर्फीले इलाके से सटे जंगलों की ओर भी रुख कर लेता है। वैसे तो यह मांसाहारी प्राणी है और अपने शिकार के रूप में जीव-जंतुओं को खाता है, लेकिन कभी-कभी जरूरत पड़ने पर यह घास को भी अपना भोजन बनाता है।

यह इसलिए है खास

- सामान्य तौर पर इसका वजन 27 से 55 किग्रा तक होता है। कुछ गिने-चुने स्नो लेपर्ड का वजन 75 किग्रा तक होता है। इसकी पूंछ 75 से 130 सेमी लंबी होती है।
- सामान्य तेंदुआ या बाघ दहाड़ के लिए जाने जाते हैं, लेकिन स्नो लेपर्ड दहाड़ नहीं सकता है।

लिलेक-ब्रेस्टेड रोलर

दुनिया की सबसे खूबसूरत चिड़ियों में से एक है लिलेक-ब्रेस्टेड रोलर। यह रोलर फैमिली ऑफ बर्ड्स की सदस्य है। अफ्रीका, पूर्वी और दक्षिणी अरब, इथोपिया, उत्तर पश्चिमी सोमालिया में यह काफी संख्या में पाई जाती है। रोल-रोल डांस करने की वजह से ही इसे लिलैक-ब्रेस्टेड रोलर बर्ड कहा जाता है। सूखे पेड़ों की ऊंचाई पर रहना इसे पसंद है। हरे और पीले रंगों में रंगे इस पक्षी के स्कल्पचर और पीठ का रंग भूरा और बैंगनी होता है।

लिलेक की खूबियां

- सामान्य आकार में यह 14.5 इंच की पाई जाती है। इसका सिर बड़ा, गर्दन और पैर छोटे होते हैं।
- यह उड़ते हुए बेहद खास तरीके से घूम-घूमकर (रोल-रोल) बेले डांस करती है।
- बोत्सवाना और केन्या की राष्ट्रीय पक्षी है यह। यह अपना घोंसला खुद नहीं बनाती। या तो सूखे पेड़ की कोटरों में रहती है या किंगफिशर और कठफोड़वे द्वारा बनाए हुए घोंसले में रहती है।

विराट प्रकृति — सुदर्शनजी महराज

पतंजलि ने अपने योग सूत्र में लिखा है कि कान को अगर सूक्ष्म बना लिया जाए तो वह आकाश को भी सुन सकती है। मनुष्य का शरीर जब कभी सूक्ष्म बन जाता है या मनुष्य का सूक्ष्म शरीर जब सक्रिय हो जाता है तो वह सूर्यमंडल निहारिका अथवा आकाशगंगा से आसानी से जुड़ पाता है। ज्योंही वह अंतरिक्ष से जुड़ता है, उसे अनहदनाद सुनाई पड़ता है। कबीरदास जी इसी अनहद की चर्चा करते हैं। प्रश्न है कि हम अपने शरीर को कितनी सावधानी से नक्षत्रों से जोड़ सकते हैं। जीव परमात्मा से जुड़ा है लेकिन पंचभूतों के कारण अलग महसूस करता है। ज्योंही वह पंचभूत से बाहर निकलता है, वह परमात्मा से जुड़ जाता है। यह परमात्मा कुछ और नहीं परमतत्व है, महाशून्य है। इस विद्या का ज्ञान हमारे संतों को बहुत पहले ही हो चुका है इसीलिए हमारे संत ''अहं ब्रह्मास्मि' मैं ब्रह्म हूं की घोषणा करते हैं। यह सारा ब्रह्मांड उसी महाशून्य की अभिव्यक्ति है। वहीं से प्राण ऊर्जा का प्रवाह होता है। जिससे पंचभूतों वाले जीव स्वरूप ग्रहण करते हैं। यह जो संसार दिख रहा है वह सब उसी महाशून्य की अभिव्यक्ति है, जिसका कोई रूप नहीं है। शायद इसीलिए ''मूलडॉल' नामक वैज्ञानिक ने ''द प्रोजेक्शन ऑफ एस्ट्रल बॉडी' नाम की पुस्तक लिखी। यह जो हमारा शरीर है वह दिव्य शक्तियों का प्रोजेक्शन है। इसी पृवी को अभी बहुत लोग क्रिएशन कहते हैं। लेकिन यह क्रिएशन नहीं है, पृवी भी प्रोजेक्शन है। क्योंकि इस प्राण शक्ति से सम्पूर्ण ब्रह्मांड जुड़ा है। एक बहुत बड़े वैज्ञानिक एक्सेल पारसे ने यहां तक कहा है कि क्वांटम किरण प्रकाश की गति से चलती है। उसकी फ्रीक्वेंसी एक अरब हर्ट्ज की होती है। उसी गति के कारण जीव अंतरिक्ष से जुड़ा है। इसलिए अब इस बात को विज्ञान भी मानने लगा है कि अंतरिक्ष और जीव अलग नहीं है। फ्रांसीसी थाम्पसन ने तो यहां तक कह दिया कि अगर पृवी पर तुम एक फूल तोड़ते हो तो उससे अंतरिक्ष प्रभावित होता है। यह बात ठीक लगती है कि अगर हम ग्रहों से प्रभावित होते हैं, शनि ग्रह से हम प्रभावित होते हैं तो हमसे भी शनि प्रभावित होते हैं। क्योंकि यह विज्ञान का नियम है कि किसी क्रिया की प्रतिक्रिया भी होती है। न्यूटन का गति सिद्धांत अंतरिक्ष पर भी तो लागू हो सकता है। सूक्ष्मता के कारण सबकुछ जुड़ा हुआ है। जिस दिन हम अपनी स्थूलता को छोड़ देंगे, उस दिन परमात्मा में मिल जाएंगे।

खबरें जरा हटके

जागी भूखी शेरनी की ममत, बख्श दी हिरण के बच्चे की जान

नई दिल्ली। इंसानों में ही नहीं जानवरों में भी ममता का भाव होता है। कमसे कम इस किस्से को सुनने के बाद तो आप यही कहेंगे। इन दिनों एक वीडियो वायरल हो रहा है। यह वीडियो साउथ अफ्रीका के क्रजर नेशनल पार्क का है। एक भूखी शेरनी के हाथ आया एक नन्हा सा हिरण का बच्चा, लेकिन इस शेरनी ने जो किया वह काबिले तारीफ था।

नेशनल पार्क में हिरण का छोटा सा बच्चा रास्ता भटक कर शेरनी के पास पहुंच गया था। हिरण का बच्चा शेरनी के मुंह के पास जैसे ही पहुंचा पहले तो शेरनी ने उसे खाने की कोशिश, लेकिन फिर अचानक उसे छोड़ दिया। हिरण के बच्चे की हरकतें देखकर शेरनी का भी दिल पिघल गया और वह हिरण के बच्चे के साथ खेलने लगी।

जो शेरनी उसे खाने वाली थी, अब वही उसकी रक्षक बन गई। हिरण जैसे ही शेरनी से दूर जाने की कोशिश करता, शेरनी उसे पकड़कर चाटने लगती। इसके बाद शेरनी उसके साथ खेलने लगी, लेकिन तभी किसी दूसरे शेर ने उस बच्चे को देख उसका शिकार करने की कोशिश की, लेकिन रखवाला बनी शेरनी ने उसे बचा लिया।

शेरनी ने दूसरे शेर पर हमला बोल कर हिरण के बच्चे को बचा लिया। शेरनी को हिरण के बच्चे की रखवाली करते देख दूसरा शेर वहां से चला गया। वहां मौजूदा लोगों ने इस घटना का वीडियो बना लिया और इसे सोशलम मीडिया पर डाल दिया।

हनीमून मनाने गया था यह कपल, एक गलती ने पहुंचा दिया जेल

नई दिल्ली। शादी के बाद हनीमून पीरियड हर कपल के लिए स्पेशल होता है। इस नई जिंदगी की शुरुआत के लिए वो बहुत से सपने सजाते हैं, लेकिन जरा सोचिए कि एक गलती से अगर हनीमून की जगह कपल पुलिस स्टेशन पहुंच जाए तो। दरअसल दिल्ली के रहने वाले नीरज ठाकुर के साथ कुछ ऐसा ही हुआ। वे पत्नी के साथ हनीमून पर निकले थे, लेकिन उनकी एक गलती ने उन्हें सलाखों के पीछे पहुंचा दिया।

दरअसल यह दंपत्ति ट्रेन पकड़ने के लिए रेलवे स्टेशन पहुंचे ही थे। कि गलती से उन?होंने दूसरे का बैग उठा लिया और ट्रेन में चढ़ने लगे, तभी दूसरे यात्री की नजर अपने सामान पर पड़ी और उसने पुलिस बुला ली। नव दंपत्ति को तुरंत ट्रेन से उतारकर जीआरपी थाने ले जाया गया। पुलिस पूछताछ में नीरज ने बताया कि उसकी एक महीने पहले ही शादी हुई थी। और वह हनीमून मनाने ऊटी जा रहा था। और उसने गलती से दूसरा बैग उठा लिया। हालांकि सीसीटीवी में नीरज को बैग उठाते देखा गया है। इसके बाद जब जीआरपी ने ये मामला कैमरे में देखा को दंपत्ति को स्टेशन पर ही गिरफ्तार कर सारा सामान बरामद किया। इसके बाद उनको मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया जहां से दोनों को जेल भेज दिया गया।

सेहत

गर्मी में ज्यादा पनपते हैं फूड पॉइजनिंग के बैक्टीरिया

फूड पॉइजनिंग क्या है?
यह बैक्टीरिया जनित रोग है जो पुराने, खराब या दूषित भोजन से होता है। बैक्टीरिया या उसके विषैले तत्व जब हमारे पेट में जाकर आंतों में संक्रमण फैलाते हैं तो फूड पॉइजनिंग की समस्या होती है।

इसका कारण क्या है?
दूषित भोजन, गंदे हाथों से सब्जियां काटना और पकाना इसकी मुख्य वजह है। बिना ढका खाना खाने से भी फूड पॉइजनिंग हो सकती है।

प्रमुख लक्षण क्या हैं?
जी घबराना, पेटदर्द, उल्टी, दस्त और डिहाइड्रेशन। लेकिन जब सामान्य लक्षणों के अलावा बेहोशी, सुस्ती, ब्लड प्रेशर और डिहाइड्रेशन की वजह से पेशाब कम आने लगे तो फौरन डॉक्टर से संपर्क करें।

ये बैक्टीरिया कब सक्रिय होते हैं?
गर्मी के मौसम में ये बैक्टीरिया और वायरस सबसे ज्यादा सक्रिय होते हैं। इसकी वजह वातावरण में मौजूद मक्खी व मच्छर हैं।

इसका इलाज क्या है?
ज्यादातर मामलों में फूड पॉइजनिंग की समस्या थोड़े समय बाद अपने आप ठीक हो जाती है। लेकिन कई बार स्थिति गंभीर भी हो सकती है। जिसके लिए डॉक्टर तुरंत राहत के लिए ओआरएस (ओरल रीहाइड्रेशन सोल्यूशन) का घोल और जरूरत पडने पर एंटीबायोटिक दवाएं देते हैं।

बचाव के लिए किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
हमेशा ताजा और गर्म खाना खाएं। जहां तक संभव हो घर का बना भोजन करें। खाना बनाने और खाने से पहले व बाद में हाथों को अच्छी तरह साबुन से धोएं। बाजार की चाट, जूस या कटे हुए फलों से परहेज करें। फ्रिज में रखे खाने को गर्म करने के बाद ही प्रयोग में लेना चाहिए।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष — चू चे चो ला ली लू ले लो आ

निकटस्थ व्यक्ति का सहयोग काम को गति दिला देगा। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। शुभांक-1-3-5

वृष — इ उ ए ओ वा वी वू वे वो

अपने हित के काम सुबह-सबेरे निपटा लें। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम पर पैनी नजर रखिए। विरोधी नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। शुभांक-2-4-6

मिथुन — का की कू घ ङ छ के को हा

अपने काम को प्राथमिकता से करें। बुरी संगति से बचें। आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। निर्मूल शंकाओं के कारण मनस्ताप भी पैदा हो सकते है। भय तथा शत्रुहानि की आशंका रहेगी। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। हाथ-पैरों में पीड़ा हो सकती है। शुभांक-4-7-9

कर्क — ही हू हे हो डा डी डू डे डो

दूसरों के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सबेरे ही निपटा लें। रुपए पैसों की सुविधा मिल पाएगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। शुभांक-2-4-5

सिंह — मा मी मू मे मो टा टी टू टे

मान-सम्मान में वृद्धि होगी। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। यात्रा शुभ रहेगी। सुविधाओं में बाधा आएगी। चिंतनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी। शुभांक-4-5-6

कन्या — टो पा पी पू ष ण ठ पे पो

संतोषजनक सफलता मिलेगी। निष्ठा से किया गया कार्य पराक्रम व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला होगा। मेहमानों का आगमन होगा। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। वाहन चालन में सावधानी बरतें। आय के अच्छे योग बनेंगे। शुभांक-2-4-7

तुला — रा री रु रे रो ता ती तू ते

परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। शुभांक-5-6-9

वृश्चिक — तो ना नी नू ने नो य यी यू

अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। शुभांक-3-6-8

धनु — ये यो भा भी भू धा फा ढा भे

शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। व्यवसाय में प्रतिद्वंद्वी परेशान कर सकते हैं। समय व्ययकारी सिद्ध होगा। वैचारिक उत्तेजना पर नियत्रंण रखें। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। अपनी परिसंपत्ति को संभालकर रखें। शुभांक-3-5-7

मकर — भे जा जी खी खू खे खो गा गी

व्यापार में वृद्धि व उत्तम लाभ मिलेगा। मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा। नौकरी क्षेत्र में कुछ उलझनें रहेंगी। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। मेहमानों का आगमन होगा। शुभांक-4-6-8

कुंभ — गू गे गो सा सी सू से सो दा

महत्त्वपूर्ण निर्णय के लिए दूरदर्शिता से काम लें। कोष में कमी व व्यय की अधिकता से परेशान होंगे। किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा। जल्दबाजी में कोई भूल संभव है। कार्य भार बढ़ेगा। जरा-सी लापरवाही आपको परेशानी में डाल सकती है। सलाह उपयोगी सिद्ध होगी। शुभांक-2-6-9

मीन — दी दू थ झ ञ दे दो चा ची

प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच अप्रत्याशित विघ्न पैदा होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। शुभांक-5-6-8

लॉफिंग ज़ोन

संता: 'बचपन में मैं एक बार दूसरी मंजिल से नीचे गिर गया था।'

बंता: 'फिर क्या हुआ ? तुम मर गए या जिंदा बचे ?'

संता: 'बहुत पुरानी बात है यार ... अब याद नहीं।'

□ □ □

संता – बंता एक कार में बम लगा रहे थे।

संता: 'अगर बम लगाते समय यह फट गया तो ?'

बंता: 'अरे तो क्या हुआ मेरा पास एक और बम है।'

□ □ □

पत्नी- घर में सिर्फ1 चम्मच चीनी पडी है और तुम दोस्त के लिए चाय बनाने को कह रहे है।

पति- कोई बात नही, तुम मेरी चाय में चीनी मत डालना।

बस 1 किस दे देना, चाय मीठी हो जाएगी।

पत्नी- आइडिया अच्छा है। मै दोनों ही कंपो में चीनी नही डालूगी।

□ □ □

शादी पर शहनाई बज रही थी। संतो ने संता से पूछा, ये कौन सी धून बज रही है।

संता बोला, वही जो तूफान के आने से पहले बजाई जाती है।

काकुरो पहेली - 4069

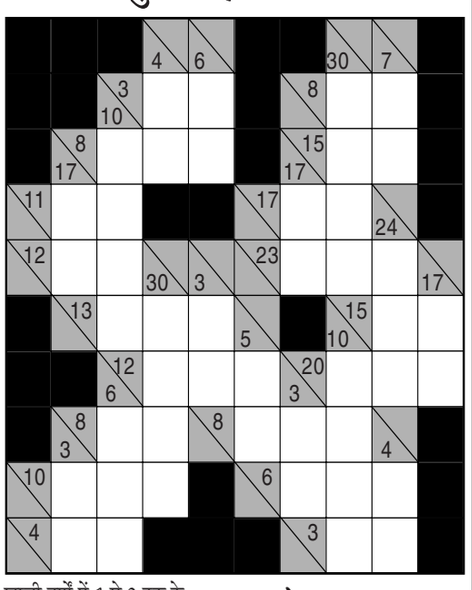

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

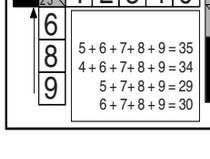

काकुरो -4068 का हल

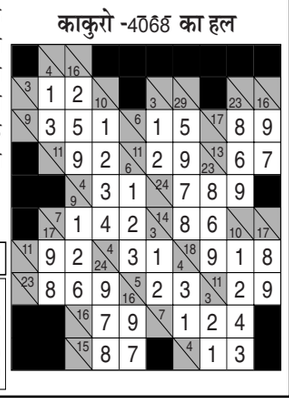

फिल्म वर्ग पहेली- 4069

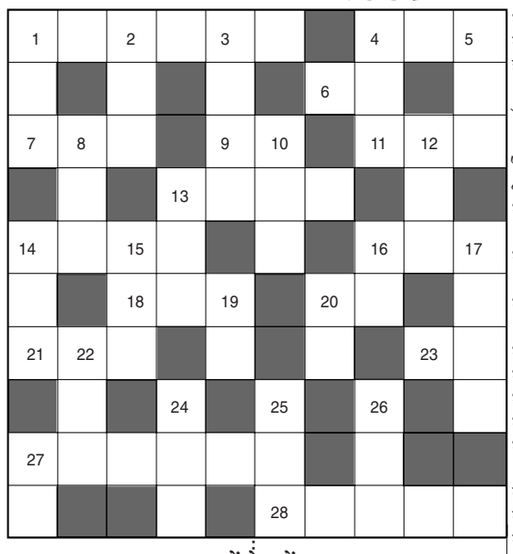

बायें से दायें:-

१. अभिषेक, सुनील, ऐश, शबाना की 'बहका दिया' गीत वाली फिल्म-४,२
४. 'दोस्ती हो गई रे' गीत वाली सुनील शेट्टी, सुष्मिता, नम्रता की फिल्म-३
६. 'छोड़ो मुझे' गीत वाली फिल्म 'जानू' में जैकी के साथ नायिका कौन थी-२
७. 'दिल खुश है आज उनसे' गीत वाली सुनीलदत्त, मीना कुमारी की फिल्म-३
९. फिल्म 'प्यार का साया' में राहुलराय के साथ नायिका कौन थी-२
११. एम. एफ. हुसैन की फिल्म 'गजगामिनी' में मुंशी प्रेमचंद की 'निर्मला' की भूमिका किसने की है-३
१३. राजेंद्रकुमार, बबीता की 'रिमझिम के गीत सावन गाए' गीतवाली फिल्म-४
१४. 'रामजी की निकली सवारी' गीतवाली ऋषिकपूर, जयाप्रदा की फिल्म-४
१६. कमल हासन, श्रीदेवी की 'ऐ जिंदगी गले लगा ले' गीत वाली फिल्म-३
१८. 'चोरी चोरी तेरे संग' गीत वाली मिथुन, आयशा जुल्का की फिल्म-३
२०. लकी अली, गौरी कार्णिक की 'कभी शाम ढले तू मेरे' गीत वाली फिल्म-२
२१. 'हमें से मोहब्बत हमीं से' गीत वाली दिलीपकुमार, वैजयंती की फिल्म-३
२३. अनिलकपूर, माधुरी की 'एक बात मान लो तुम' गीत वाली फिल्म-२
२७. 'फूल सा चेहरा चाँद सी' गीत वाली प्रदीपकुमार, नर्गिस की फिल्म-२,२,२
२८. देव आनंद, गिरीश, टीना मुनीम की 'आवाज सुरीली का' गीत वाली फिल्म-५

ऊपर से नीचे:-

१. सतीश, सुभाष घई, अर्चना की फिल्म-३
२. 'चलती है पुरवाई' गीत वाली फिल्म-३
३. 'तेरी चाहत में दीवाना हूँ' गीत वाली फरदीन खान, सेलिना की फिल्म-४
४. संजयदत्त, अतुल, खीना, करिश्मा की 'काश तुम मुझसे एक' गीत वाली फिल्म-३
५. राजेश खन्ना, ऋषिकपूर, पूनम की फिल्म-३
८. 'तुम भी चलो हम' गीत वाली फिल्म-३
१०. फारूख शेख, नसीरूद्दीनशाह, स्मिता पाटिल की फिल्म-३
१२. अक्षयकुमार, खीना टण्डन की 'एक लड़की एक लड़का' गीत वाली फिल्म-३
१३. फिल्म 'पुष्पक' में कमल हासन के साथ नायिका कौन थी-३
१४. प्रदीपकुमार, कल्पना की फिल्म-३
१५. 'उड़ जा काले कावां' गीतवाली फिल्म-३
१६. नसीर, अतुल अग्निहोत्री की फिल्म-२
१७. शशि कपूर, शर्मिला टैगोर की फिल्म-२,२
१९. अनिलकपूर, जैकी, अजय, मनीषा, माधुरी, सोनाली, रेखा की फिल्म-२
२०. 'मेरा सेहरा तू है' गीत वाली फिल्म-२
२२. सनी देओल, मीनाक्षी की फिल्म-३
२४. 'चढ़ती जवानी मेरी चाल' गीत वाली फिल्म-३
२५. फिल्म 'अजूबा' में 'शहजादी हिना' की भूमिका किसने की थी-३
२६. 'तू लाली है सवेरे वाली' गीत वाली फिल्म-३
२७. फिल्म 'शर्मीली' में शशिकपूर के साथ नायिका कौन थी-२

फिल्म वर्ग पहेली- 4068

क	ल	यु	ग		जा	न	ए	म	न
भी		वा		दि	ल		ला		या
अ	क्ष		शि	वा		खा	न	दा	न
ल		ठि	का	ना		मो			शा
वि			र		आ	शी	र्वा	द	
दा	मि	नी		भा	ई			ह	स्ती
ना		ल	क्ष्य		ना	ला	य	क	
क	स	म		स		ट			मं
ह			दौ	ड़		सा	थ	सा	थ
ना	स्ति	क		क	री	ब			न

सूडोकु -4069

6	3	7		1	5	4		9
	8						2	
		1		4	8			6
	6			9	7	1		
7	2						5	3
		5	6	3			9	
5			8	2		3		
	4						7	
1		3	7	5		2	6	8

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -4068 हल

5	9	4	1	7	2	6	3	8
6	8	1	4	3	5	2	7	9
2	3	7	8	9	6	1	4	5
9	2	3	7	5	1	4	8	6
4	7	6	9	2	8	5	1	3
1	5	8	3	6	4	9	2	7
8	6	2	5	4	3	7	9	1
7	1	5	2	8	9	3	6	4
3	4	9	6	1	7	8	5	2

शब्द पहेली - 4069

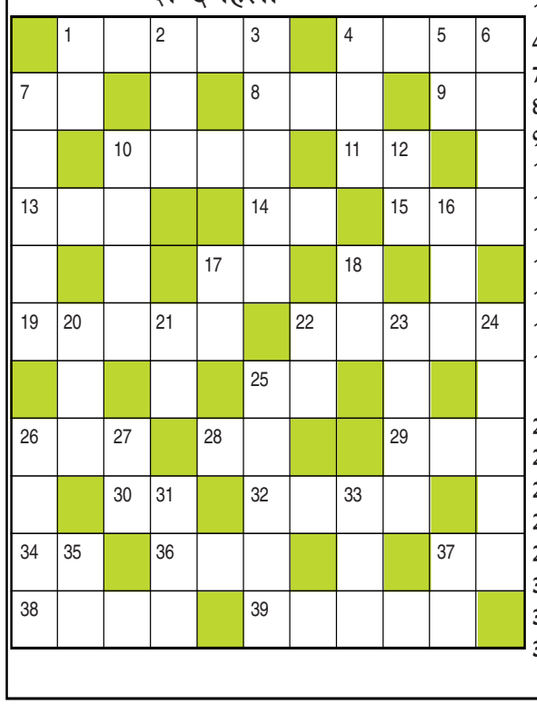

बाएँ से दाएँ
1.राजा का पुत्र-5
4.मन को हरने वाला-4
7.काल,समय,पीरियड-2
8.खोदना-3
9.मोटा आटा-2
10.पशु,मवेशी-4
11.जलापूर्ति का साधन-2
13.पुत्र,बेटा-3
14.क्षार,खारा-2
15.दर,मूल्य-3
17.नौका-2
19.नारायण-नारायण रटनेवाले देवर्षि-5
22.लालन-पालन-5
25.अच्छा,भला-2
26.पूर्ण करना-3
28.गोष्ठी,सम्मेलन-2
29.हुनरमंद-3
30.पिता का भाई -2
32.कुरुपता-4
34.इसाई साध्वी -2
36.टेंशन,परेशानी-3
37.खुजली -2
38.अशक्त,निर्बल-4
39.नगर में रहनेवाला-5

ऊपर से नीचे
1.झगड़ा, बैर,द्वेष-2
2.सदपुरुष,अच्छे कुल का-3
3.सार-संभाल-2,3
4.विचार करना-3
5.प्रत्येक-2
6.परंपरा,धर्मविधी-4
7.आवास, गरीबखाना-5
10.संपत्ति-4
12.भाग्यशाली (अंग्रेजी-2)
16.भालू-बंदर नचाने वाला-3
17.मां की मां-2
18.भय,खौफ-2
20.वेग,गति-3
21.मुंह,चेहरा-2
22.पैर,ओहदा-2
23.वर्धनशील,बढ़नेवाला-4
24.शकरगंजी,कंद-5
25.सभागार,सभाकक्ष-5
26.भयंकर,खतरनाक-4
27.मोड़-2
31.कायर,डरपोक-3
33.तीन घंटे का समय,प्रहर-3
35.भीगा हुआ-2
37.नौकरानी-2

शब्द पहेली -4068 का हल

	रा	ज	क	पू	र		अ	च	र	ज
ज	य		रा		क्षि	ति	ज		त	ला
ना		अ	मा	न	त		र	वा		व
न	सी	ह	त		व	ह		म	का	न
खा		म		र	न	र			ल	
ना	म	क	र	ण		स	ला	ह	का	र
	हा			बी	रा	ना		र		ज
का	न	न		र	ज		अ	जा	ग्र	त
म		र	ज		घ	ब	रा	ना		प
का	र		ग	ज	रा		ज		प	ट
ज	न	म	त		ना	ट	क	का	र	

पंजाब में खनन माफिया के एक दर्जन ठिकानों पर ईडी का छापा, तीन करोड़ जब्त

एजेंसी

चंडीगढ़। पंजाब में ईडी के अधिकारियों ने बुधवार को खनन माफिया के एक दर्जन से अधिक स्थानों पर छापे मारकर तीन करोड़ रुपये तथा तमाम दस्तावेज बरामद किए हैं। ईडी के अधिकारियों ने जब्त की गई जमीनों पर खनन होने की जानकारी के बाद पंजाब के रूपनगर तथा होशियारपुर जिलों में खनन माफिया के ठिकानों पर छापा मारा। ईडी के अधिकारियों ने एक दर्जन स्थानों पर छापा मारकर तीन करोड़ रुपये तथा तमाम दस्तावेज बरामद किए हैं। जिस जमीन पर अवैध खनन हो रहा था, वह जमीन ड्रग स्मगलिंग से जुड़े जगदीश सिंह उर्फ भोला के मनी लॉन्ड्रिंग की जांच के दौरान सामने आई थी। जिसे ईडी ने जब्त कर लिया था, लेकिन इसके बाद यहां अवैध खनन शुरू हो गया। पंजाब में भोला ड्रग्स केस से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग का यह मामला साल 2013-14 के दौरान सामने आया था। इसके बाद ईडी ने पंजाब पुलिस की एफआईआर के आधार पर मुकदमा दर्ज किया था। जनवरी 2014 में जांच एजेंसी ने भोला को गिरफ्तार कर लिया था। लंबी कार्रवाई के बाद ईडी को जांच में पता चला था कि भोला ने ड्रग्स के पैसों से जमीनें खरीदी गई हैं, जिन्हें जब्त कर लिया गया था। ईडी की यह कार्रवाई लगातार जारी है।

मोहन यादव ने छिंदवाड़ा घटना की दिए जांच के निर्देश

भोपाल। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने छिंदवाड़ा की घटना को दुखद और सभी झकझोर देने वाली घटना बताते हुए आज कहा कि दुख की इस घड़ी में वे प्रभावित परिवार के साथ हैं। इस घटना की जांच करायी जाएगी। डॉ यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट किया कि छिंदवाड़ा के थाना माहुलझीर के अंतर्गत जंगल में स्थित जनजातीय बाहुल्य ग्राम बोदलकछार में मानसिक रूप से अस्वस्थ दिनेश उर्फ भूरा गोंड द्वारा अपने परिवार के 08 सदस्यों की कुल्हाड़ी से हत्या करने और उसके बाद स्वयं फांसी लगाकर जान देने का समाचार अत्यंत दुखदायक एवं हृदय विदारक है। बाबा महाकाल से दिवंगतों की पुण्य आत्मा को शांति प्रदान कर अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करते है। इस हमले में घायल 10 वर्षीय बालक इशू गोंड के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना करते हैं। सरकार हर संभव मदद करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि कैबिनेट में साथी मंत्री श्रीमती संपतिया उइके को घटना स्थल पर पहुंचने के निर्देश दे दिए हैं। इसके साथ ही डॉ यादव ने छिंदवाड़ा में हुई घटना पर जांच के निर्देश दिए गए हैं।

बीजेपी सांसद बृजभूषण शरण सिंह के बेटे के काफिले की कार से एक्सीडेंट, 2 की मौत

गोंडा। हरियाणा की पहलवानों के शोषण को लेकर पिछले दिनों विवाद में आए बीजेपी सांसद बृजभूषण शरण सिंह के बेटे और बीजेपी प्रत्याशी करन भूषण शरण सिंह के काफिले की कार से बड़ा एक्सीडेंट हुआ है। दरअसल, फॉर्च्यूनर कार ने 3 बच्चों को कुचल दिया है। इस हादसे में 2 बच्चों की मौत हो गई है और एक घायल है। यह हादसा उत्तर प्रदेश में गोंडा के कर्नलगंज हुजूरपुर मार्ग पर बैकुंठ डिग्री कालेज के पास हुआ है। दुर्घटना स्थल पर भारी भीड़ जमा हो गई है और ग्रामीणों ने फॉर्च्यूनर कार को कब्जे में ले लिया है। मौके पर भारी संख्या में पुलिस बल पहुंचा गया है। बच्चों के शव को कब्जे में ले लिया गया है। ग्रामीणों से समझाइश करके बच्चों का पोस्टमार्टम करवाए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। लेकिन, लोग काफी आक्रोश में बताए जा रहे हैं।

पानी, बिजली और हीट वेव को लेकर सीएम भजनलाल लेंगे 31 मई को अफसरों की बैठक

एजेंसी

जयपुर। तेज गर्मी के कारण जल संकट, बिजली संकट और स्वास्थ्य सेवाएं चरमरा जाने से भजनलाल सरकार में हड़कंप मचा हुआ है। जलदाय मंत्री कन्हैया लाल चौधरी और ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर पहले ही विवादित बयान देकर भजनलाल सरकार की मीडिया में सरेआम किरकिरी करवा चुके है । वहीं मुख्य सचिव सुधांश पंत ने एसी में बैठकर मीटिंग-मीटिंग का बहाना करने वाली ब्यूरोक्रेसी को अपने प्रभार वाले जिलों में दो दिन के लिए भेजकर बिजली, पानी, और चिकित्सा सेवाओं को लेकर रिपोर्ट मांगी है । इसके बाद 31 मई को सीएम भजनलाल शर्मा प्रदेश की प्रशासनिक मशीनरी को बड़ी बैठक करने जा रहे है । बैठक के एजेंडे में ई-फाइल का औसत निस्तारण, जन अभियोग निस्तारण की प्रगति, जल संरक्षण, जल संचयन के कार्यों की समीक्षा, वृक्षारोपण कार्यों की प्रगति की समीक्षा, बिजली, पानी, हीट वेव, मौसमी बीमारियों को लेकर समीक्षा की सीएम भजनलाल शर्मा करेंगे । सीएम भजनलाल शर्मा ने संबंधित विभागीय प्रशासनिक अधिकारियों से पीपीटी के जरिये ईफाइलिंग, जन अभियोग निस्तारण, जल संरक्षण, वृक्षारोपण, बिजली, पानी, हीट वेब और मौसमी बीमारियों को लेकर सूचना 30 मई तक मांगी है ।

केजरीवाल की अंतरिम जमानत बढ़ाने की याचिका सूचीबद्ध करने से सुप्रीम कोर्ट रजिस्ट्री का इनकार

एजेंसी

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय रजिस्ट्री ने दिल्ली आबकारी नीति से संबंधित धनशोधन के एक मामले के आरोपी मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की एक जून को समाप्त होने वाली अंतरिम जमानत अवधि सात दिन बढ़ाने के लिए दायर उनकी याचिका सूचीबद्ध करने से इनकार कर दिया है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार, रजिस्ट्री ने कहा कि न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और दिपांकर दत्ता की पीठ ने मुख्यमंत्री केजरीवाल को अंतरिम जमानत देने के साथ ही नियमित जमानत के लिए निचली अदालत में जाने की भी छूट दी थी, इसलिए उनकी यह याचिका (अंतरिम जमानत बढ़ाने की याचिका) विचार करने के योग्य नहीं है।

शीर्ष अदालत के एक अधिकारी ने यह भी कहा कि गिरफ्तारी के खिलाफ उनकी याचिका पर फैसला पहले ही सुरक्षित रखने के कारण उनकी वर्तमान याचिका का अदालत के समक्ष विचाराधीन मामले से कोई संबंध नहीं है।

न्यायमूर्ति जे के माहेश्वरी और न्यायमूर्ति के वी विश्वनाथन की अवकाशकालीन पीठ ने याचिकाकर्ता की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता ए एम सिंघवी से कहा था कि (केजरीवाल के) आवेदन को सूचीबद्ध करने के संबंध मुख्य न्यायाधीश कोई फैसला कर सकते हैं।न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दिपांकर दत्ता की पीठ ने 10 मई को केजरीवाल को लोकसभा चुनाव के प्रचार अभियानों में भाग लेने के लिए एक जून तक अंतरिम जमानत दी थी और दो जून को उन्हें जेल प्रशासन के समक्ष आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया गया था। दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल तिहाड़ केंद्रीय कारागार में न्यायिक हिरासत में बंद थे।

शीर्ष अदालत ने 21 मार्च को

केजरीवाल की गिरफ्तारी और उसके बाद ईडी की हिरासत को चुनौती देने वाली उनकी अपील पर 17 मई को अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था।

दिल्ली आबकारी नीति से संबंधित धनशोधन के एक मामले के आरोपियों में शामिल श्री केजरीवाल ने अपनी याचिका में दावा किया था कि गिरफ्तारी के बाद उनका वजन सात किलोग्राम कम हो गया है।उनका %कीटोन लेवल% बहुत ज्यादा है, जो किसी गंभीर बीमारी का लक्षण हो सकता है। उन्होंने अपनी याचिका में कहा था, वर्तमान में उनका इलाज कर रहे मैक्स अस्पताल के संबंधित डॉक्टरों ने कुछ जांच करने की सलाह दी है, जिसके लिए सात दिनों का समय चाहिए।याचिका में कहा गया था कि के उन्हें पीईटी-सीटी स्कैन और अन्य जांच करने की सलाह दी गई है।

आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक श्री केजरीवाल को दिल्ली आबकारी नीति -2021-22 (जो विवाद के बाद रद्द कर दी गई थी) में कथित घोटाले में ईडी ने गत 21 मार्च को गिरफ्तार किया था।

श्री केजरीवाल को गिरफ्तार करने वाली केंद्रीय जांच एजेंसी प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने उन पर मुख्य साजिशकर्ता होने का आरोप लगाया है। उन पर पूर्व के गोवा विधानसभा चुनाव प्रचार के लिए 100 करोड़ रुपये गलत तरीके से हासिल करने का आरोप है।श्री केजरीवाल ने ईडी की ओर से अपनी गिरफ्तारी की वैधता को चुनौती दी है।इस मामले में उन्हें शीर्ष अदालत की ओर से अंतरिम जमानत दे दी गई थी, लेकिन उन्होंने नियमित जमानत के लिए अब तक कोई याचिका दायर नहीं की है।

केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने 17 अगस्त 22 को अबकारी नीति बनाने और उसके कार्यान्वयन में की गई कथित अनियमितताओं का आरोप लगाते हुए एक आपराधिक मुकदमा दर्ज किया था। इसी आधार पर ईडी ने 22 अगस्त 22 को धनशोधन का मामला दर्ज किया था।ईडी का दावा है कि आम आदमी पार्टी के शीर्ष नेताओं दिल्ली के मुख्यमंत्री केजरीवाल, पूर्व उपमुख्यमंत्री सिसौदिया, राज्य सभा सांसद संजय सिंह सहित अन्य ने अवैध कमाई के लिए साजिश रची थी।इस मामले में पूर्व उपमुख्यमंत्री सिसौदिया फिलहाल न्यायिक हिरासत में तिहाड़ जेल में बंद हैं।

राजकोट गेम जोन अग्निकांड में 25 लोगों के डीएनए मैच, परिजनों को सौंपे गए शव

एजेंसी

राजकोट। राजकोट के टीआरपी गेम जोन में हुए अग्निकांड में 25 मृतकों के शव परिजनों को दे दिए गए हैं। प्रशासन ने अभी तक 28 लोगों की मौत की पुष्टि की है। गेम जोन में 3 करोड़ रुपये का निवेश करने वाले प्रकाश हिरण जैन की भी मौत होने की पुष्टि हुई है। सीसीटीवी फुटेज में वह आग बुझाने के दौरान दिख रहे थे, लेकिन बाद में उसे बाहर निकलते किसी ने नहीं देखा, जिससे उसकी मौत होने की आशंका पहले से थी।

राजकोट गेम जोन दुर्घटना में अग्निकांड के शिकार 28 लोगों के परिजनों के डीएनए सैम्पल गांधीनगर स्थित फॉरेंसिक साइंस लेबोरेटरी (एफएसएल) में भेजे गए थे, जिनमें 25 लोगों की रिपोर्ट आ चुकी है। डीएनए मैच होने के बाद परिजनों को शव सौंप दिए गए हैं। अभी तीन लोगों की जांच रिपोर्ट आना बाकी है। इसके अलावा कनाडा के युवक की आज डीएनए रिपोर्ट आ सकती है। घटना में एक महत्वपूर्ण खुलासे में

गेम जोन के मुख्य भागीदार प्रकाश हिरण जैन की मौत की पुष्टि हो गई है। हादसे के बाद से ही प्रकाश हिरण जैन का कोई अता-पता नहीं था। वह मूल राजस्थान का रहने वाला था, लेकिन पिछले कुछ सालों से वह राजकोट में रहने लगा था। गेम जोन को धवल कॉरपोरेशन के नाम से संचालित किया जा रहा था, लेकिन इसमें मुख्य निवेशक के तौर पर प्रकाश हिरण जैन का नाम लिया जा रहा था। सूत्रों के अनुसार प्रकाश ने कुल निवेश 5 करोड़ रुपये में अपनी ओर से 3 करोड़ रुपये का निवेश किया था।

हादसे के बाद प्रकाश के भाई ने स्थानीय थाने में अर्जी देकर अपने भाई प्रकाश के लापता होने की सूचना दी थी। उसने पुलिस को बताया कि उसके भाई का फोन बंद है और उसकी कार भी गेम जोन के बाहर ही खड़ी है। इसके बाद पुलिस ने प्रकाश की मां का डीएनए टेस्ट कराया, जो शवों में से एक से मैच हो गया। इसके बाद प्रकाश के शव को भी उनके परिजनों को सौंप दिया गया।

तटरक्षक बल ने एजेंसियों के साथ तालमेल कर चक्रवात से नुकसान को कम किया

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय तटरक्षक बल ने पश्चिम बंगाल में भीषण चक्रवाती तूफान 'रेमल' से उत्पन्न स्थिति का केंद्रीय और राज्य एजेंसियों के साथ मिलकर सफलतापूर्वक मुकाबला करते हुए जान माल के नुकसान को काफी हद तक कम कर दिया। यह चक्रवाती तूफान 22 मई को कम दबाव वाले क्षेत्र के रूप में उत्पन्न हुआ था और 26-27 मई की मध्यरात्रि को पश्चिम बंगाल तथा बांग्लादेश के तटों पर पहुंचने से पहले तेजी से भीषण चक्रवाती तूफान में तब्दील हो गया था। इसके बाद, तटरक्षक क्षेत्र (पूर्वोत्तर) मुख्यालय ने एहतियाती उपाय शुरू किए थे और विभिन्न केंद्रीय एवं राज्य स्तर की एजेंसियों के साथ समन्वय सुनिश्चित किया था, जिसके परिणामस्वरूप समुद्र में जान-माल का कोई नुकसान नहीं हुआ तथा स्थिति को प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया गया। भारतीय तटरक्षक बल ने चक्रवात को देखते

हुए तूफान के दौरान व्यापारिक बेड़े की सक्रिय निगरानी और रणनीतिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जहाजों, विमानों एवं तट-आधारित निगरानी प्रणालियों को तैनात किया। हल्दिया और पारादीप में भारतीय तटरक्षक बल के रिमोट ऑपरेटिंग स्टेशनों से समय-समय पर चेतावनी संदेश प्रसारित किए गए और मछली पकड़ने वाली नौकाओं एवं अन्य व्यापारिक जहाजों को आगाह किया गया। भारतीय तटरक्षक बल का जहाज वराद चक्रवाती तूफान के तट से टकराने के बाद का आकलन करने के लिए तुरंत पारादीप से रवाना हुआ। इसके अतिरिक्त, दो डोर्नियर विमानों ने भुवनेश्वर से उड़ान भरी और उत्तरी बंगाल की खाड़ी में व्यापक निगरानी की।

आरक्षण के नाम पर जनता को गुमराह करती है कांग्रेस: केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह

एजेंसी

देवरिया। भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बुधवार को एक चुनावी जनसभा में विपक्षी दलों पर तीखा हमला बोला। शाह ने कहा कि कांग्रेस ने पिछड़ों का आरक्षण काटकर मुस्लिमों को दिया। कांग्रेस झूठ के आधार पर राजनीति करती है। ये लोग आरक्षण के नाम पर जनता को गुमराह करते हैं। मोदी 10 साल से प्रधानमंत्री हैं। आरक्षण को हाथ नहीं लगाया। जब तक संसद में एक भी सांसद भाजपा का है गरीब आदिवासी व पिछड़े समाज के आरक्षण को कोई हाथ नहीं लगा सकता।

अमित शाह ने देवरिया के चीनी मिल ग्राउंड में भाजपा प्रत्याशी शशांक मणि त्रिपाठी के समर्थन में आयोजित जनसभा में कर्नाटक की कांग्रेस सरकार के फैसले का जिक्र कर कहा कि कांग्रेस ने तुष्टीकरण की राजनीति के लिए पिछड़ा समाज के

आरक्षण पर कैंची चलाने का काम किया। भाजपा नेता ने कहा कि उत्तर प्रदेश की जनता राम विरोधियों को नकार कर हर सीट पर कमल खिलाने जा रही है। यह चुनाव राम भक्तों पर गोली चलाने वालों और राम मंदिर बनाने वालों के बीच है। आप तय करो कि राम मंदिर बनाने वाले मोदी जी के साथ रहेंगे या फिर राम मंदिर बनने से रोकने वाली सपा व कांग्रेस वालों के साथ। संत देवरहा बाबा को नमन करते हुए शाह ने कहा कि देवरहा बाबा ने कहा था कि अयोध्या में राम मंदिर बनने से कोई रोक नहीं सकता। आज हम लोग देख रहे हैं कि राम मंदिर बन रहा है।

गृहमंत्री शाह ने कहा कि मोदी ने अनुच्छेद 370 को समाप्त किया है। कांग्रेस देश को डरा रही है कि पीओके की बात मत करो। पाकिस्तान के पास एटम बम है। हम भाजपा वाले एटम बम से नहीं डरते। पीओके भारत का था है और हम उसे लेकर रहेंगे। उन्होंने कहा कि मोदी ने देश से आतंकवाद को मुक्त किया है। कांग्रेस शासन में आतंकवादी घुस आते थे। पुलवामा में हमला हुआ तो भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक कर मुंहतोड़ जवाब दिया। अमित शाह ने कहा कि एक समय पूरा उत्तर प्रदेश माफिया और मच्छरों से घिरा हुआ था। योगी आदित्यनाथ ने मच्छर और माफिया दोनों का सफाया कर दिया। स्वच्छता कर के मच्छर को समाप्त किया और उनका एक स्टाइल है, जिससे उन्होंने माफिया को भी समाप्त कर दिया। उत्तर प्रदेश नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आगे बढ़ रहा है। भाजपा के वरिष्ठ नेता शाह ने कहा कि देवरिया चीनी का कटोरा माना जाता था। सपा-बसपा के शासन में चीनी मिलें बंद हुईं। मोदी ने को-ऑपरेटिव मंत्रालय चालू किया है। इस पूरे क्षेत्र के हर जिले में एक-एक बड़ी को-ऑपरेटिव चीनी मिल मोदी चालू करने वाले हैं।

भीषण गर्मी से राहत की उम्मीद, 1जून तक हो सकती बारिश

एजेंसी

देहरादून। उत्तराखंड में पड़ रही भीषण गर्मी को देखते हुए लोगों के लिए राहत की खबर है। क्योंकि अगले 2-3 दिन में मौसम बदलेगा और बारिश हो सकती है। इसकी पुष्टि मौसम विज्ञान केंद्र ने भी की है।

मौसम विज्ञान केंद्र के निदेशक डॉ. बिक्रम सिंह ने बताया कि एक जून तक मौसम में बदलाव की संभावना है। इसके तहत प्रदेश के कुमाऊं और गढ़वाल मंडल के अधिकांश जनपदों में बारिश की उम्मीद है। बारिश होने से तापमान में गिरावट देखने को मिलेगी, जिससे लोगों को राहत मिलेगी।

उल्लेखनीय है कि उत्तराखंड में इन दिनों भीषण गर्मी का प्रकोप देखने को मिल रहा है। पहाड़ से लेकर मैदानी क्षेत्रों तक लोग सूर्य की तपिश से परेशान हैं। तापमान में वृद्धि के कारण जनजीवन प्रभावित हो रहा है। हांलाकि मौसम विभाग ने आज से बारिश की संभावना जताई है, जिससे गर्मी से राहत मिलने की उम्मीद है।

बारिश होने से न केवल तापमान में गिरावट आएगी, बल्कि गर्मी से परेशान लोगों को भी राहत मिलेगी।

प्रदेशभर में मौसम के बदलने से जलवायु में भी सकारात्मक बदलाव आने की संभावना है। मौसम विज्ञान केंद्र देहरादून की इस भविष्यवाणी से लोगों को उम्मीद है कि आने वाले दिनों में उन्हें गर्मी से राहत मिलेगी।

देश की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करने वालों का 'राम-नाम सत्य', भारत शरीयत कानून से नहीं चलेगा : योगी

एजेंसी

कुशीनगर । लोकसभा चुनाव के मद्देनजर उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक चुनावी सभा को संबोधित किया। इस दौरान सीएम योगी ने केंद्र में मोदी सरकार और अपनी खुद की उपलब्धियां गिनाईं। सीएम ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि देश की सुरक्षा में अगर कोई खतरा बनता है तो उसका राम नाम सत्य है।

सीएम योगी ने प्रदेश की बेहतर शासन व्यवस्था का जिक्र करते हुए कहा कि एक दौर था जब पडरौना में डोल मेला पर सपा की सरकार रोक लगा देती थी। डोल मेला निकालने वाले लोगों को सपा की सरकार जेल में बंद कर देती थी, हम लोगों को इसके लिए लड़ाई लड़नी पड़ी थी। उन्होंने सवाल करते हुए कहा कि हाटा में हर बार दंगा होता था, लेकिन पिछले सात साल में आपने किसी को दंगा करते हुए देखा है क्या।

उन्होंने सवाल करते हुए कहा कि प्रदेश में कोई डोल यात्रा रोक पाएगा क्या? आज कोई गोकशी कर सकता है? आज किसी बेटी और व्यापारी की सुरक्षा पर कोई सेंध लगा सकता है? नहीं लगा पाएगा क्योंकि उसे पता

है कि अगर वह ऐसा करेगा तो उसे उसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। उसे मालूम है कि बेटी और व्यापारी की सुरक्षा की कीमत अब जेल नहीं जहन्नुम होता है। उसे मालूम है कि देश की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करने वालों का राम-नाम सत्य है की यात्रा भी निकलेगी। उन्होंने कहा कि देश में एक तरफ विकास के लिए समर्पित भाजपा की सरकार है तो वहीं, दूसरी तरफ बांटो और राज करो वाला कांग्रेस गठबंधन। इसने अपने घोषणापत्र में कहा है कि अगर हम सत्ता में आते हैं तो मुसलमानों को आरक्षण देंगे। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने कई बार कहा है कि आरक्षण होना चाहिए, लेकिन धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं हो सकता। ये लोग पर्सनल लॉ लागू करेंगे, पर्सनल लॉ का मतलब तालिबान शासन, जिसे हम लागू नहीं होने देंगे।उन्होंने कहा कि भाजपा की घोषणा है कि भारत की व्यवस्था बाबा साहब द्वारा बनाए गए संविधान से चलेगी, किसी शरीयत कानून से नहीं। कांग्रेस और समाजवादी पार्टी अपनी हार सुनिश्चित मानकर लोगों को गुमराह करने का प्रयास कर रहे हैं। इनकी मंशा कभी पूरी नहीं होगी। भारत की जनता बहुत जागरूक है और वह मोदी जी के नेतृत्व में फिर एक बार सरकार बनाएगी और अब तो जनता की ओर से ही आवाज आ रही है कि जो राम को लाए हैं हम उनको लाएंगे और राम भक्त ही राज करेगा दिल्ली के सिंहासन पर। स्वाभाविक रूप से मोदी जी ही परम राम भक्त और परम राष्ट्र भक्त हैं तो मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए और भारतीय जनता पार्टी प्रचंड बहुमत से सरकार बनाएगी और इस दिशा में हम आगे बढ़ चुके हैं। कांग्रेस और इंडी गठबंधन पर प्रहार करते हुए सीएम योगी ने कहा कि संविधान का सबसे ज्यादा मखौल कांग्रेस पार्टी और इंडी गठबंधन से जुड़े लोगों ने उड़ाया है और आज भी वह यही कर रहे हैं। देश के अंदर स्वतंत्र भारत में संविधान बना ही था कि बाबा साहब भीमराव आंबेडकर के विपरीत जाकर तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने धारा 370 को देश के संविधान में जबरन डालने का काम किया। कांग्रेस ने संविधान में कितने संशोधन किए यह किसी से छिपा नहीं हैं। कांग्रेस ने अपनी पहली ही सरकार में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को कैद करने का कार्य किया था तो 1975 में इमरजेंसी के माध्यम से संविधान का गला घोंटने का काम भी कांग्रेस ने ही किया था।

मोदी अब प्रधानमंत्री नहीं बन रहे: राहुल गांधी

एजेंसी

वाराणसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के 'अबकी बार 400 पार' नारे को संविधान बदलने का प्रयास करार देते हुये कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने दोहराया कि श्री नरेन्द्र मोदी इस बार प्रधानमंत्री नहीं बन रहे हैं और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) 143 सीटों में सिमटने जा रहा है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में समाजवादी पार्टी (सपा) अध्यक्ष अखिलेश यादव के साथ संयुक्त जनसभा को संबोधित करते हुये कहा श्री मोदी चाहते हैं कि देश में 22-25 लोग अमीर रहें और बाकी जनता गरीब रहें। हम चाहते हैं कि सभी को बराबर पैसा मिले कर्ज माफ हो, अमीरों का कर्जा माफ हो तो गरीबों का भी माफ हो, किसानों का भी माफ हो। भाजपा के नेताओं ने सबसे बड़ी गलती की है कि उन्होंने कहा 400 सीटें दो हम संविधान बदल देंगें।

उन्होने कहा 2024 का चुनाव एक अलग चुनाव है। पहली बार किसी राजनैतिक पार्टी ने, उनके नेताओं ने, साफ कह दिया है कि हम इस संविधान को खत्म कर देंगे। ये भाजपा के कई नेताओं ने कहा है, ये बीजेपी के नेताओं की सबसे बड़ी

गलती है, ये संविधान गांधी जी की, आंबेडकर जी की, जवाहरलाल नेहरू जी की और हिंदुस्तान के सारे के सारे नागरिकों की देन है। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या कोई शक्ति है दुनिया में, जो इसको मिटा सकती है।

श्री गांधी ने जनसमुदाय से कहा कि संविधान की रक्षा करनी है, क्योंकि ये आपकी आवाज है, ये आपका भविष्य है, इसमें आपकी सोच है। अगर संविधान समाप्त हो जाएगा, तो पब्लिक सेक्टर खत्म हो जाएगा, नौकरियां खत्म हो जाएंगी, महंगाई आसमान तक पहुंच जाएगी, रिजर्वेशन खत्म हो जाएगा। संविधान न रहा तो इसके बिना हिंदुस्तान में 22-25 अमीर लोगों के पास हक़ बचेंगे। किसानों के हक़, मजदूरों के हक़, युवाओं के हक़, माताओं-बहनों के हक़ सब छीन लिए जाएंगे।

उन्होने कहा नरेन्द्र मोदी जी ने 16 लाख करोड़ रुपया 22 लोगों का कर्जा माफ किया है। मतलब 24 साल का मनरेगा का पैसा मोदी जी ने 22 लोगों की जेब में डाल दिया। हमने कर्जामाफी की थी, 70 हजार करोड़ रुपए की, 24 साल अगर कर्जामाफी हो, तो उतना पैसा नरेन्द्र मोदी जी ने 22 लोगों का कर्जा माफ किया है। श्री गांधी ने कहा कि हमारी सरकार बनते ही बनारस के लोगों की और पूरे उत्तर प्रदेश के गरीब लोगों की लिस्ट बनेगी, हर गरीब परिवार में से एक महिला का नाम चुना जाएगा, एक महिला का नाम बैंक अकाउंट में साल का 10 हजार नहीं, 50 हजार नहीं, 70 हजार नहीं, 80 हजार नहीं, 90 हजार नहीं, साल का 1 लाख रुपया बैंक अकाउंट के अंदर। चार जुलाई से आपके बैंक अकाउंट में हर महीने 8,500 रुपए बैंक अकाउंट के अंदर होंगे।

उन्होने कहा हिंदुस्तान की हिस्ट्री में पहली बार जवानों को नरेन्द्र मोदी जी ने अग्निवीर योजना के माध्यम से मजदूर बनाया, उनको चार साल के बाद बाहर कर देंगे। मैं आपसे कह रहा हूँ, जैसे ही सरकार बनेगी,अग्निवीर योजना को उठाकर हम कूड़ेदान में फेंक देंगे।

जयपुर की होटल ट्रेवासा के एल्टोरो बार में नशे और हुक्का पार्टी में पुलिस की रेड, 44 युवक गिरफ्तार, 8 युवतियों पर जुर्माना

एजेंसी

जयपुर। जयपुर के श्याम नगर थाना क्षेत्र में देर रात पुलिस ने एक हाई-प्रोफाइल होटल में चल रही हुक्का और नशे की पार्टी पर छापा मारा, जिससे वहां हड़कंप मच गया। इस चौंकाने वाली कार्रवाई में 44 युवक गिरफ्तार हुए, जबकि 8 युवतियों से जुर्माना वसूला गया। पुलिस ने यह छापा अजमेर रोड स्थित होटल ट्रेवासा के बार एल्टोरो में रात करीब एक बजे यह कार्रवाई की गई। श्याम नगर थाने के SHO कैलाश चंद मीना को गुप्त सूचना मिली कि होटल ट्रेवासा के बार एल्टोरो में प्रतिबंध के बावजूद देर रात पार्टी हो रही है। उच्च अधिकारियों के निर्देश पर कार्रवाई की गई। जब पुलिस टीम बार के दरवाजे पर पहुंची, तो बार संचालक ने दरवाजा खोलने से इंकार कर दिया। पुलिस ने जबरन दरवाजा खुलवाया और अंदर का नजारा देखकर दंग रह गई। डीसीपी साउथ दिगंत आनंद के नेतृत्व में यह कार्रवाई की गई । बार के अंदर तेज म्यूजिक पर युवक-युवतियां झूम रहे थे।

चार जून को केंद्र में इंडिया गठबंधन बनाएगा सरकार – शशि थरूर

एजेंसी

शिमला । कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर ने शिमला में एक पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए मोदी सरकार पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि 4 जून को केंद्र में इंडिया गठबंधन की सरकार बनने वाली है। देश की जनता इस बार बदलाव के मूड में है। शशि थरूर ने कहा कि पीएम मोदी ने 2014 में देश की जनता से कई वादे किए थे, लेकिन, आज तक एक भी वादा पूरा नहीं कर पाए हैं। दो करोड़ नौकरी प्रतिवर्ष देने का वादा किया था, आज देश में बेरोजगारी और महंगाई अपने चरम पर है। किसानों की आय दोगुनी नहीं हुई है। आज किसान अपनी मांगों को लेकर धरना प्रदर्शन करने को मजबूर है। भाजपा मुद्दों की बात नहीं करती बल्कि देश को धर्म-जाति के नाम पर बांटने का काम करती है।उन्होंने कहा कि कांग्रेस सत्ता में आते ही देश की जनता को सामाजिक न्याय देगी। कांग्रेस ने 5 न्याय और 25 गारंटी मेनिफेस्टो में दी है, उसे पूरा किया जाएगा। हिस्सेदारी न्याय, किसान न्याय, नारी न्याय, युवा न्याय और श्रमिक न्याय के साथ 25 गारंटियां दी गई हैं। जिसे पूरा कर देश की जनता को समृद्ध और सशक्त किया जाएगा।थरूर ने कहा कि इस बार कांग्रेस और इंडिया गठबंधन बहुत आगे निकल गया है। इस बार हरियाणा में 5-7 सीटें, राजस्थान में 10-12 सीटें, कर्नाटक में 12-15 सीटें, केरल 15-17 सीटें, तेलंगाना में 10-12 सीटें कांग्रेस को मिलने जा रही है। जबकि, भाजपा पिछले बहुमत से बहुत नीचे जा रही है। इंडिया गठबंधन बिहार में तेजस्वी यादव के साथ आगे बढ़ रहा है।

जानवरों की दुनिया में भी होते हैं आलसी

दोस्तों, तुम 6-8 घंटे जरूर सोते होगे, जिसके बाद फ्रेश होकर अपने काम में जुट जाते होगे। तुमने अपने पेट्स और आसपास रहने वाले जानवरों को भी रात भर सोते हुए देखा होगा। यही नहीं, अगर मौका मिले तो वे दिन में भी सो जाते है, ऊंघते रहते हैं या आलसी बनकर पड़े रहते हैं। लेकिन क्या तुम दुनिया के ऐसे जानवरों के बारे में जानते हो, जो पूरे दिन का 60-80 प्रतिशत से भी अधिक समय सोने में खर्च करते हैं। यानी कई जानवर दिन भर में 16-22 घंटे सोते रहते हैं। इनमें कुछेक को छोड़ कर सभी आलसी होते हैं। वे खाते-पीते हैं और अपने जरूरी काम धीरे-धीरे निपटाकर दोबारा सो जाते हैं। तुम ऐसे जानवरों को लेजी, सोतूराम या आलसीराम नहीं कहोगे क्या? लेकिन ऐसा कर ये जानवर एक तो शिकारियों से अपना बचाव करते हैं, साथ ही लंबे समय तक अपनी एनर्जी भी बचाए रखते हैं।

कोआला

ऑस्ट्रेलिया में पाए जाने वाले कोआला आलसी जानवरों में पहले स्थान पर हैं। ये ज्यादातर नीलगिरी के पेड़ों पर समूह में रहते हैं और आसानी से उपलब्ध नीलगिरी के पत्ते, फल-फूल, पेड़ की छाल खाकर पेट भरते हैं। खाना ढूंढ़ने के लिए उन्हें कहीं जाने की भी जरूरत नहीं पड़ती। फाइबर से भरपूर ये पत्ते कोआला को ऊर्जा प्रदान करते हैं। कोआला नीलगिरी के पेड़ों पर बैठे-बैठे दिन में 22 घंटे सोते रहते हैं।

शेर

तुम्हें यह अटपटा जरूर लगेगा कि ताकतवर और जंगल का राजा शेर भी अधिक सोने वाले जानवरों की क्षेणी में आता है। यह अलग बात है कि नर शेर आलसी या कमजोर बिल्कुल नहीं हैं। ताकत से भरपूर और एक्टिव होने के कारण ही ये जंगल के दूसरे जानवरों पर अपना दबदबा बनाए रखते हैं। शिकार करके नर शेर के खाने-पीने का इंतजाम करने का जिम्मा भी जब मादा शेरनी का होता है तो ये दिन में 18-22 घंटे ऊंघने के अलावा करते ही क्या हैं। कभी-कभी तो ये नर शेर दिन में 24 घंटे सोते रहते हैं।

आर्माडीलो

ये एक दिन में 18-20 घंटे तक सोते हैं। अकेले रहने वाले आर्माडीलो रात के समय एक्टिव होते हैं और दिन में अपने बिल के अंदर जहां तक होता है, क्रॉल करते रहते हैं। ये कमजोर नजर वाले होते हैं। सूंघ कर अपने भोजन की तलाश करते हैं।

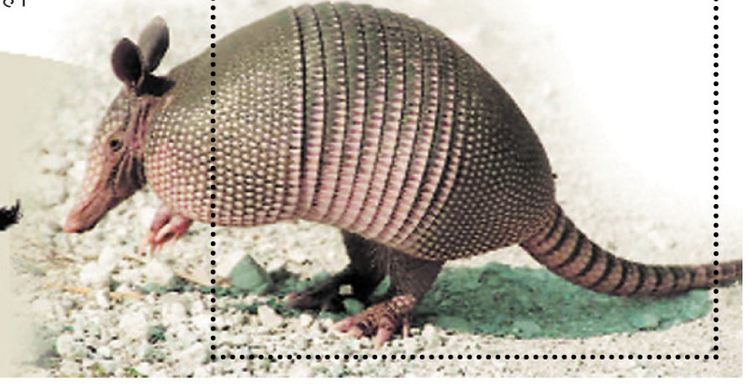

स्लोथ

दक्षिण और मध्य अमेरिका में पाए जाने वाले स्लोथ बहुत धीमी गति से अपने काम करते हैं। जमीन पर चलते और पेड़ पर चढ़ते वक्त ये एक मिनट में सिर्फ 15-20 सेमी ही आगे बढ़ पाते हैं। ये इतने आलसी होते हैं कि उनके आसपास क्या हो रहा है, इससे उन्हें फर्क नहीं पड़ता। स्लोथ दिन में अपने हाथों से पेड़ों की शाखाओं को घेरकर उलटे लटके रहते हैं। ऐसे ही ये लटके हुए 20 घंटे तक सोते रहते हैं।

ब्राउन बैट

ये उत्तरी अमेरिका में पाए जाते हैं। उलटे लटकने वाले ब्राउन बैट दिन में 20 घंटे सोते रहते है और रात को एक्टिव होते हैं।

गिलहरी

गिलहरी कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और वसा से भरपूर खाना खाती है, जिससे इसे नींद ज्यादा आती है। ये टहनियों, पत्तों, फर और पंखों जैसी नरम चीजों से बनाए घोंसले में रहती है और दिन में करीब 14 घंटे सोती है।

आउल मंकी

ये दक्षिण और मध्य अमेरिका के जंगलों में पाए जाते हैं और समूह में रहते हैं। आउल मंकी एक दिन में 17 घंटे सोते रहते हैं। ये रात के समय एक्टिव रहकर अपने सारे काम निपटा लेते हैं।

दरियाई घोड़े

अफ्रीका में पाए जाने वाले हिप्पो ऊंघने में मास्टर होते हैं। समूह में रहने वाले हिप्पो दिन के समय गर्मी से बचने के लिए पानी के नीचे या जमीन पर, जहां भी मौका मिलता है, झपकी ले लेते हैं। अपने समूह के साथ हिप्पो बेखौफ होकर दिन में 18-20 घंटे सोते हैं।

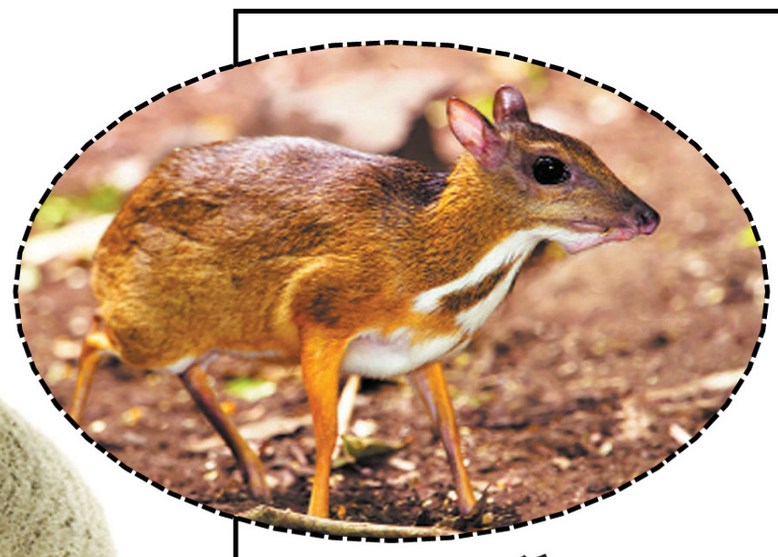

प्यारा और अनूठा माउस डियर

शेवट्रेन ऐसा जीव है, जिसका शरीर हिरन की तरह और मुंह चूहा जैसा होता है। अलग-अलग देशों के लोग इसे अलग-अलग नामों से बुलाते हैं। यह दक्षिण भारत के अलावा एशिया और अफ्रीका के विभिन्न जंगलों में पाया जाता है। इसे आर्द्र जलवायु ज्यादा भाती है। यही कारण है कि यह वर्षावनों में ज्यादा पाया जाता है।

शेवट्रेन या पिसूरी चूहे की शक्ल का जीव है, पर इसका शरीर हिरन जैसा होता है। इसलिए लोग इसे माउस डियर कहते हैं। एशिया में पाए जाने वाले माउस डियर अफ्रीकी माउस डियर से हल्के और छोटे होते हैं। एशियाई माउस डियर आठ किलोग्राम तक के होते हैं। वहीं, इसकी अफ्रीकी प्रजाति का वजन 16 किलोग्राम तक होता है। यह पूरी तरह शाकाहारी होता है और पौधों के मुलायम पत्ते व पेड़ से गिरे फलों को खाता है। इसके शरीर के निचले हिस्से पर हिरन के जैसी ही धारियां भी बनी होती हैं। इसके कान छोटे-छोटे होते है। यह बहुत ही डरपोक होता है, पर विरोधी कमजोर हो, तो हमला भी कर देता है। शेवट्रेन नाम फ्रेंच से लिया गया है, जिसका मतलब 'छोटी बकरी' होता है। तेलुगु में इसे जारिनी पंडी, मलयालम में खूरान और कोंकणी में इसे बरिंका कहा जाता है। एक अनुमान के अनुसार इस जीव की खोज नव पाषाण काल में हुई। इसके पेट की संरचना बाकी जीवों से थोड़ी अलग होती है। इसके पाचन प्रक्रिया के लिए चार अलग-अलग चेंबर होते हैं। भोजन बारी-बारी से हर चेंबर से होकर गुजरता है, जहां पौष्टिक तत्वों का अवशोषण होता है। मादा एक बार में एक ही बच्चा देती है. इस कारण इनकी संख्या बहुत ही कम है। इनके पैर पतले होते हैं और खुर गाय जैसे, पर काफी छोटे होते हैं। इन्हें सींग नहीं होता, पर नर का जबड़ा काफी मजबूत होता है और जरूरत पड़ने पर इससे वह दुश्मनों पर हमला भी करता है। ये समूह में रहने के बजाय जोड़ी में रहना पसंद करते हैं। ये बच्चों का देखभाल 2-3 माह तक ही करते हैं। 10 माह में इनके बच्चे वयस्क की भूमिका निभाने और प्रजनन के लिए तैयार हो जाते हैं।

लखनऊ की नूरा, अनाहत व आरना भारतीय एरोबिक्स टीम में चयनित, खेल प्रेमियों ने दी बधाई

एजेंसी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की एरोबिक्स टीम ने 14वें एरोबिक्स फेडरेशन कप में शानदार प्रदर्शन करते हुए उपविजेता ट्रॉफी जीत ली। इंडिया एरोबिक्स स्पोर्ट्स एंड फिटनेस फेडरेशन के द्वारा आयोजित इस टूर्नामेंट में लखनऊ की बालिका खिलाड़ियों-नूरा इनायती ने चार, जबकि अनाहत सिंह व आरना खुराना ने 3-3 सहित कुल 10 पदक अपने नाम किए।इसी के साथ इन तीनों खिलाड़ियों ने आगामी अगस्त माह में बैंकॉक (थाईलैंड) में होने वाली एशियन चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम में अपना स्थान पक्का कर लिया। खिलाड़ियों की मुख्य कोच मालविका बाजपेयी (आयोजन सचिव उत्तर प्रदेश एरोबिक्स स्पोर्ट्स एंड फिटनेस एसोसिएशन) ने बताया कि सभी खिलाड़ी योग शक्ति इंटरनेशनल फिटनेस स्टूडियो गोमती नगर में प्रैक्टिस करती हैं। खिलाड़ियों के इस शानदार प्रदर्शन पर उप्र ओलंपिक संघ के महासचिव आनंदेश्वर पांडेय सहित खेल संघों के पदाधिकारियों ने बधाई दी है।उन्होंने बताया कि नूरा इनायती ने अंडर-14 में व्यक्तिगत स्पोर्ट्स एरोबिक्स में रजत पदक जीता। वहीं अनाहत सिंह, नूरा इनायती व आरना खुराना की जोड़ी ने बालिका ट्रायो स्पोर्ट्स एरोबिक्स में रजत पदक जीता। इस तिकड़ी ने फिर फिटनेस एरोबिक्स की अंडर-14 मिक्स श्रेणी में रजत पदक जीता। अनाहत, नूरा व आरना ने इसके बाद अंडर-14 स्पोर्ट्स एरोबिक्स में पिटाइट ग्रुप में रजत पदक अपने नाम किया।

नॉर्वे शतरंज 2024: प्रज्ञानानंद ने आर्मागेडन में अलीरेजा को हराया, वेनजुन से हारीं वैशाली

स्टेवेंगर। भारतीय ग्रैंडमास्टर आर. प्रज्ञानानंद ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मंगलवार को यहां नॉर्वे शतरंज टूर्नामेंट के पहले दौर में आर्मागेडन गेम में फ्रांस के फिरोज़ा अलीरेजा को हराया। सामान्य टाइम कंट्रोल में एक आसान ड्रा के बाद, प्रज्ञानानंद को सफेद मोहरों के साथ खेलते हुए दस मिनट मिले, जबकि अलीरेजा के सात सेंकेड मिले, लेकिन शर्त यह थी उन्हें जीत दर्ज करनी थी, क्योंकि ड्रा होने पर काले मोहरों से खेलने वाले को अतिरिक्त अंक मिलते।

भारतीय खिलाड़ी ने शानदार प्रदर्शन कते हुए जीत दर्ज की। इस मुकाबले के अलावा महिला और पुरुष वर्ग में क्लासिकल टाइम कंट्रोल के तहत सभी मैच ड्रा रहे और इस अनूठे प्रारूप में विजेता का फैसला करने के लिए छह आर्मागेडन बाजियों का सहारा लेना पड़ा। विश्व के नंबर 1 मैग्नस कार्लसन ने क्लासिकल में 14 चालों का ड्रा खेला और फिर मौजूदा विश्व चैंपियन डिंग लिरेन के साथ 68 चालों का मैराथन ड्रा खेला और दिन को अपने पक्ष में कर लिया, जबकि हिकारू नाकामुरा आर्मागेडन में अमेरिकी हमवतन फैबियानो कारूआना से अधिक मजबूत साबित हुए।

अन्तरराष्ट्रीय क्रिकेट मैचों के लिए तरस रहा कानपुर का ग्रीन पार्क स्टेडियम

कानपुर। उत्तर भारत का प्रसिद्ध क्रिकेट स्टेडियम कहा जाने वाला ग्रीन पार्क ऐतिहासिक विरासत और दिग्गजों का गढ़ होने के बावूजद स्टेडियम में कई सालों से क्रिकेट मैच आयोजित नहीं हुआ। यहां पर अंतिम बार अन्तरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच नवम्बर 2021 में भारत और न्यूजीलैण्ड के बीच खेला गया था जो टेस्ट मैच था। वहीं साल 2009 से ग्रीनपार्क स्टेडियम में निर्माण कार्य में लगभग 70 से 75 करोड रुपये शासन की ओर से खर्च किए जा चुकें हैं। अब यहां पर मैच न मिलने से स्टेडियम ठूंठ बना खड़ा हुआ है। इससे क्रिकेट समर्थकों को भी निराशा होती है। ऐसे में शहर की जनता के मन में सबसे बड़ा सवाल यही रहता है कि आखिर ग्रीन पार्क में अब मैच क्यों नहीं होते जबकि पास ही लखनऊ शहर के इकाना स्टेडियम में क्रिकेट मैच होते रहते हैं। ग्रीन पार्क स्टेडियम खेल विभाग के अंतर्गत आता है। मैचों के आयोजन में यूपीसीए की अहम भूमिका होती है। दोनों के बीच आंतरिक तौर पर कई टकराव भी सामने आ चुकें हैं जिनका खामियाजा क्रिकेट समर्थकों को भुगतना पड़ रहा है। सीधे तौर पर खेल विभाग या यूपीसीए के अधिकारियों ने मैच न आयोजित होने के सवालों पर चुप्पी साध रखी है।

क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने सऊदी प्रो लीग के एक सीज़न में सर्वाधिक गोल करने का रिकॉर्ड तोड़ा

रियाद। पुर्तगाल और अल नासर के स्टार के स्टार फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने सऊदी प्रो लीग के एक सीज़न में सबसे अधिक गोल करने का नया रिकॉर्ड बनाया है। सऊदी प्रो लीग मैच में सोमवार को रोनाल्डो ने पहले हाफ के स्टॉपेज समय में और बाद में 69वें मिनट में गोल कर अपनी टीम को अल इत्तिहाद के खिलाफ 4-2 से जीत दिला दी।इन दो गोलों के साथ, मौजूदा सऊदी प्रो लीग सीज़न में रोनाल्डो के गोलों की संख्या कुल 35 गोल तक पहुंच गई, जिससे उन्होंने 2018-19 सीज़न में मोरक्को के अब्देर्राज़क हमदल्ला द्वारा बनाए गए 34 गोलों के रिकॉर्ड को तोड़ दिया।रिकॉर्ड तोड़ने के बाद उन्होंने एक्स पर पोस्ट किया, मैं रिकॉर्ड्स का अनुसरण नहीं करता, रिकॉर्ड मेरा अनुसरण करते हैं। कंग कप के फाइनल में जब अल नासर का सामना अजेय टीम अल-हिलाल से होगा तो रोनाल्डो एक्शन में दिखेंगे। क्लब ने दिसंबर 2022 में रोनाल्डो के साथ अनुबंध किया। ईएसपीएन के अनुसार, 37 वर्षीय खिलाड़ी को प्रति वर्ष 75 मिलियन डॉलर मिल रहे हैं, जिससे वह इतिहास में सबसे अधिक भुगतान पाने वाले फुटबॉलर बन गए हैं।

म्यूनिख आईएसएसएफ विश्व कप के लिए भारतीय राइफल और पिस्टल टीमों की घोषणा की गई

एजेंसी

नई दिल्ली। म्यूनिख में इस महीने के अंत में होने वाले आगामी अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ विश्व कप के लिए 23 सदस्यीय भारतीय राइफल और पिस्टल टीम की घोषणा की गई है। हाल ही में पहली बार ओलंपिक चयन ट्रायल के दौरान एक्शन में दिखे शीर्ष तीन निशानेबाजों में से अधिकांश इस टीम में शामिल हैं। भारत सभी 10 ओलंपिक स्पर्धाओं में भाग लेगा। दल के रवाना होने से पहले बोलते हुए, भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कलिकेश नारायण सिंह देव ने कहा, कुछ निशानेबाजों के मन में कार्यक्रम के बारे में कुछ स्वाभाविक प्रश्न थे, क्योंकि यह ओलंपिक से पहले का कार्यक्रम है, लेकिन हमने उन सभी से बात की और उन्हें म्यूनिख विश्व कप और उसके बाद फ्रांस में शिविर के महत्व के बारे में समझाया। हम हमेशा व्यक्तिगत कोचों के मामले में लचीले रहे हैं और हमने बस इतना कहा है कि वे एसओपी का पालन करें और

बुनियादी अनुशासन बनाए रखें। हमने इस महत्वपूर्ण अवधि के दौरान एक साझा और संयुक्त रूप से तैयार किए गए न्यूनतम प्रशिक्षण कार्यक्रम के महत्व के बारे में भी बात की है, चाहे वह विश्व कप के दौरान हो, शिविर के दौरान हो या घर पर हो, जिसकी उच्च प्रदर्शन निदेशक/राष्ट्रीय कोच द्वारा सक्रिय रूप से निगरानी की जाती है। उन्होंने कहा, यदि ऐसे बुनियादी प्रोटोकॉल का पालन किया जा सकता है, तो व्यक्तिगत कोचों का हमेशा स्वागत है। हम सभी को टीम इंडिया की सफलता के लिए एकजुट होना चाहिए। म्यूनिख विश्व कप पर विशेष रूप से बोलते हुए, उन्होंने कहा, म्यूनिख के लिए, मैं इस तथ्य पर अधिक जोर दूंगा कि यह ओलंपिक के लिए महत्वपूर्ण प्रदर्शन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और हम निशानेबाजों की व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने के लिए लचीले हैं, जिसमें व्यक्तिगत कोचों की भागीदारी भी शामिल है। हम समझते हैं कि कुछ निशानेबाजों के पास व्यक्तिगत प्रशिक्षण योजनाएँ हो सकती हैं, इसलिए हमने लचीलापन दिखाया है और उन्हें उदाहरण के लिए घटनाओं की संख्या चुनने या रैंकिंग पॉइंट्स ओनली निशानेबाजों के रूप में खेलने का विकल्प दिया है। हमारा ध्यान प्रतिस्पर्धी माहौल में रहने पर है, एक ऐसे टूर्नामेंट में जो ओलंपिक के समान प्रारूप में खेला जाता है। म्यूनिख विश्व कप में प्रतिस्पर्धा करने के बाद टीम दो सप्ताह के ब्रेक के लिए घर लौटने से पहले फ्रांस में एक शिविर में जाएगी। फिर वे ओलंपिक खेलों के लिए रवाना होने से पहले भोपाल में एक प्रस्थान शिविर के लिए एकत्र होंगे।

मुक्केबाजी विश्व क्वालीफायर: निशांत प्री क्वार्टर फाइनल में, ओटगोनबाटर को दो मिनट में हराया

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय मुक्केबाज निशांत देव ने मंगलवार को पेरिस ओलंपिक के लिए थाईलैंड के बैंकॉक में चल रहे दूसरे मुक्केबाजी विश्व क्वालीफायर में 71 किग्रा वर्ग के प्री क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया है। उन्होंने दूसरे दौर में मंगोलियाई मुक्केबाज ओटगोनबाटर ब्याम्बा-एर्डेनेटो को सिर्फ दो मिनट में हरा दिया। वहीं, अभिनाश जामवाल को 63.5 किग्रा वर्ग में जोस मैनुअल वियाफारा फोरी के हाथों हार का सामना करना पड़ा।निशांत देव ने ओटगोनबाटर के खिलाफ़ मुक्कों की झड़ी लगाकर पहले ही मिनट में स्टैंडिंग काउंट को मजबूर कर दिया। जैब और क्रॉस हुक के संयोजन की बदौलत एक और स्टैंडिंग काउंट हुआ और राउंड 1 में खेलने के लिए 58 सेकंड बचे होने पर रेफरी ने प्रतियोगिता रोक दी।

इससे पहले, कोलंबिया के वियाफ़ारा फ़ोरी के खिलाफ़ पहले राउंड में करीबी हार के बाद जामवाल ने हिम्मत के साथ वापसी की।

उन्होंने तीसरे और अंतिम राउंड में अपना दबदबा बनाया और सभी पांच जजों के अंक बराबर कर दिए। नियमों के अनुसार, जजों से फिर से प्रदर्शन का मूल्यांकन करने और विजेता का फैसला करने के लिए कहा गया; फिर सभी ने एक लंबी चर्चा के बाद फ़ोरी के पक्ष में मतदान किया और कोलंबियाई मुक्केबाज को 5:0 से विजेता घोषित किया।

टी20 विश्व कप के पहले मैच से पहले भारतीय ऑलराउंडर जडेजा ने कहा, न्यूयॉर्क में क्रिकेट खेलना मजेदार होगा

एजेंसी

न्यूयॉर्क। आईसीसी टी20 विश्व कप के पहले मैच से पहले टीम इंडिया के पहले प्रशिक्षण सत्र के बाद, स्टार ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा ने कहा कि न्यूयॉर्क में क्रिकेट खेलना मजेदार होगा।आईसीसी टी20 विश्व कप 1 से 29 जून तक वेस्टइंडीज और अमेरिका में खेला जाएगा। मेन इन ब्लू 1 जून को न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में बांग्लादेश के साथ अपना एकमात्र अभ्यास मैच भी खेलेगा।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल पर अमेरिका में अपने पहले प्रशिक्षण सत्र की एक झलक साझा की। वीडियो में, जडेजा मेगा टूर्नामेंट की शुरुआत से पहले आशावादी लग रहे थे।जडेजा ने वीडियो में कहा, हम पहली बार न्यूयॉर्क में क्रिकेट खेलेंगे, यह मजेदार होने वाला है। टीम इंडिया के स्ट्रेंथ और कंडीशनिंग कोच सोहम देसाई ने कहा कि खिलाड़ियों ने

न्यूयॉर्क पहुंचने के बाद अपनी दिनचर्या को आसान बना लिया है।सोहम ने कहा, हम परसों यहां आए और हमने अपनी दिनचर्या को आसान बनाया, खिलाड़ी अभी टाइम जोन के अभ्यस्त हो रहे हैं। आज हम अपना पहला ग्राउंड सेशन कर रहे हैं... इस बीच, भारत के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने कहा, हमने अभी तक क्रिकेट नहीं खेला है, आज टीम गतिविधि के लिए यहां आए हैं। उम्मीद है कि यह अच्छा होगा। मौसम वास्तव में अच्छा है, इसलिए हम इसका बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। मेन इन ब्लू के उप-कप्तान और ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या ने कहा, यहां न्यूयॉर्क में होना बहुत रोमांचक है, यहां अच्छा माहौल है, तेज धूप है। सूर्यकुमार यादव ने आगे कहा, मैंने सुना है कि यहां अमेरिका में क्रिकेट बढ़ रहा है, इसलिए हम वास्तव में उत्साहित हैं और यहां पहला दिन अद्भुत था, इसलिए आने वाले कुछ दिनों के लिए बहुत उत्साहित हैं। https://&.com/BCCI/status/1795667478292406694 भारत अपने टी20 विश्व कप अभियान की शुरुआत 5 जून को आयरलैंड के खिलाफ न्यूयॉर्क के नवनिर्मित नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में करेगा। इस बीच, भारत और पाकिस्तान के बीच सबसे प्रतीक्षित ब्लॉकबस्टर मुकाबला 9 जून को होगा। बाद में वे अपने ग्रुप ए मैचों को समेटने के लिए टूर्नामेंट के सह-मेजबान यूएसए (12 जून) और कनाडा (15 जून) से खेलेंगे। टूर्नामेंट में, भारत अपने ICC ट्रॉफी सूखे को समाप्त करने का लक्ष्य रखेगा, जिसने आखिरी बार 2013 में ICC चैंपियंस ट्रॉफी जीती थी। तब से, भारत 2023 में 50 ओवर के विश्व कप के फाइनल, 2015 और 2019 में सेमीफाइनल, 2021 और 2023 में ICC विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के खिताबी मुकाबले, 2014 में टी20आई के फाइनल, 2016 और 2022 में सेमीफाइनल में पहुंच चुका है, लेकिन एक बड़ी ICC ट्रॉफी हासिल करने में विफल रहा है।

भारतीय टीम: रोहित शर्मा (कप्तान), हार्दिक पांड्या (उपकप्तान), यशस्वी जायसवाल, विराट कोहली, सूर्यकुमार यादव, ऋषभ पंत (विकेट कीपर), संजू सैमसन (विकेट कीपर), शिवम दुबे, रवींद्र जडेजा, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, युजवेंद्र चहल, अर्शदीप सिंह, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज

युवा एशियाई जिउ जित्सु चैम्पियनशिप

बांदीपुरा। बांदीपुरा के डिप्टी कमिश्नर (डीसी) शकील उल रहमान नेबांदीपुरा की सबकत मलिक को सम्मानित किया, जिन्होंने हाल ही में अबू धाबी में आयोजित युवा एशियाई जिउ जित्सु चैंपियनशिप में रजत पदक जीता है। बांदीपुरा की 20 वर्षीय फिटनेस उत्साही सबकत मलिक ने अबू धाबी में आयोजित युवा एशियाई जिउ जित्सु चैंपियनशिप में रजत पदक जीता, जिसका श्रेय उन्हें पूरे जम्मू-कश्मीर की पहली लड़की होने के कारण दिया गया, जो दो बार एशियाई जिउ जित्सु चैंपियन है। डीसी ने अन्य लड़कियों के लिए एक रोल मॉडल बनने के लिए उनकी सराहना की और उन्हें अपने लक्ष्यों को निरंतरता, समर्पण और पूरे दिल से आगे बढ़ाने का आग्रह किया।उन्होंने कहा कि युवाओं को फिटनेस गतिविधियों में शामिल करना उन्हें नशीली दवाओं की महामारी से दूर रखने में उत्प्रेरक का काम करता है। डीसी ने खेल और फिटनेस की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए जिला प्रशासन के समर्पण पर जोर दिया।

जर्मनी ने भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम को 3-2 से हराया

एजेंसी

मोंचेनग्लाडबाक (जर्मनी)। भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम यूरोप दौरे के अपने चौथे मैच में जर्मनी से 2-3 से हार गई। भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम के लिए योगंबर रावत और गुरजोत सिंह ने गोल किए।

पहले क्वार्टर में दोनों टीमों के बीच काफी एक्शन देखने को मिला और दोनों टीमों ने पेनल्टी कॉर्नर के जरिए बढ़त हासिल करने के कई मौके बनाए। चूंकि दोनों टीमें एक-दूसरे के डिफेंस को भेद नहीं पाई, इसलिए पहला क्वार्टर गोल रहित रहा। दूसरे क्वार्टर के पांच मिनट बाद, जर्मनों ने फील्ड गोल करके बढ़त हासिल कर ली। हालांकि भारत ने डिफेंडर योगंबर रावत के पेनल्टी कॉर्नर के जरिए गोल कर 1-1 से बराबरी कर ली। पहले हाफ का स्कोर 1-1 रहा। तीसरे क्वार्टर में कुछ

ही मिनटों में भारत ने एक और पेनल्टी कॉर्नर जीता और फॉरवर्ड गुरजोत सिंह ने इसका पूरा फायदा उठाकर अपनी टीम को 2-1 की बढ़त दिला दी। लेकिन जर्मनी ज्यादा देर तक शांत नहीं रहा और कुछ ही मिनटों बाद पेनल्टी कॉर्नर से गोल कर स्कोर 2-2 से बराबरी कर ली। अंतिम क्वार्टर में मेहमान टीम के पास बढ़त हासिल करने का मौका था, लेकिन वे पेनल्टी कॉर्नर पर गोल नहीं कर पाए। खेल के अंतिम क्षणों में जर्मनी को पेनल्टी कॉर्नर मिला और उन्होंने इसका फायदा उठाकर मैच को 3-2 से अपने नाम कर लिया। भारतीय जूनियर पुरुष टीम यूरोप दौरे का अपना अंतिम मैच 29 मई को नीदरलैंड के ब्रेडा में जर्मनी के खिलाफ खेलेगी।

जोकोविच, सबालेंका सीधे सेटों में जीत के साथ दूसरे दौर में

एजेंसी

पेरिस। सर्बिया के स्टार टेनिस खिलाड़ी नोवाक जोकोविच ने फ्रेंच ओपन में जीत के साथ शुरुआत करते हुए फ्रांसीसी वाइल्डकार्ड पियरे-ह्यूजेस हर्बर्ट को 6-4, 6-7 (7-3), 6-4 से शिकस्त दी।जोकोविच का लक्ष्य रोलांड गैरोस में 25 ग्रैंड स्लैम एकल खिताब जीतने वाला टेनिस इतिहास का पहला खिलाड़ी बनना है, जहां उन्होंने पहले तीन बार ट्रॉफी उठाई है।जोकोविच के 2024 के नतीजे उनके सामान्य उच्च मानकों से कम रहे हैं। 2006 में अपना पहला एटीपी एकल खिताब जीतने के बाद से सिर्फ़ दूसरे सीज़न में, वह किसी भी स्तर पर फ़ाइनल में पहुँचे बिना रोलांड गैरोस पहुँचे हैं। दो बार के फाइनलिस्ट कैस्पर रूड भी सीधे सेटों में जीत के साथ आगे बढ़े। नॉर्वे के सातवें वरीय खिलाड़ी

रूड ने क्वालीफायर फेलिप मेलिगेनी अल्वेस को 6-3, 6-4, 6-3 से हराया। महिला वर्ग में दूसरी वरीयता प्राप्त आर्यना सबालेंका को दूसरे दौर में पहुंचने के लिए सिर्फ़ एक घंटा आठ मिनट का समय लगा, उन्होंने एरिका एंड्रीवा को 6-1, 6-2 से हराया। सबालेंका ने दुनिया की 100वें नंबर की खिलाड़ी एंड्रीवा की सर्विस पांच बार तोड़ी और अपने प्रतिद्वंद्वी के विनर्स की संख्या को तिगुना करते हुए 19 वर्षीय खिलाड़ी के खिलाफ़ अपने करियर का पहला मैच जीता। सबालेंका ने खेले गए 15 गेम में 27 विनर्स शॉट लगाए और सिर्फ़ 16 अनफोर्स्ड एरर किए।

टी20 विश्व कप : भारतीय टीम से जुड़े हार्दिक पांड्या

एजेंसी

न्यूयॉर्क। स्टार भारतीय ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या 5 जून को आयरलैंड के खिलाफ होने वाले आईसीसी टी 20 विश्व कप के उद्घाटन मुकाबले से पहले न्यूयॉर्क में टीम इंडिया में शामिल हो गए। आईसीसी टी-20 विश्व कप 1 से 29 जून तक वेस्टइंडीज और अमेरिका में खेला जाएगा। मेन इन ब्लू 1 जून को न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में बांग्लादेश के साथ अपना एकमात्र अभ्यास मैच भी खेलेगा।

बुधवार को इंस्टाग्राम पर पांड्या ने घोषणा की कि वह राष्ट्रीय कर्तव्य पर हैं और टूर्नामेंट से पहले भारतीय टीम से जुड़ गए हैं। हार्दिक इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 के खराब अभियान के बाद टीम में आ रहे हैं। पांच बार की चैंपियन मुंबई इंडियंस (एमआई) और पांड्या के लिए मौजूदा इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) सीजन भूलने लायक रहा है। वर्ष 2022 में डेब्यू सीजन में गुजरात टाइटन्स (जीटी) को खिताब दिलाने वाले पांड्या टीम के साथ दो साल के कार्यकाल के बाद मुंबई

लौटे।मुंबई टीम को पांच बार आईपीएल खिताब दिलाने वाले कप्तान रोहित शर्मा की जगह लेने से हार्दिक और फ्रैंचाइज़ी की सोशल मीडिया पर भारी आलोचना हुई। पांड्या को उनके मैचों के दौरान पूरे भारत के स्टेडियमों में हूटिंग का सामना करना पड़ा और टीम चार जीत, 10 हार और आठ अंकों के साथ अंक तालिका में सबसे निचले स्थान पर रही। 2015-21 तक फ्रैंचाइज़ी की सफलता में अहम भूमिका निभाने वाले पांड्या मैच जिताने वाला प्रदर्शन नहीं कर सके।

14 मैचों में पांड्या ने 18.00 की औसत और 143.04 की स्ट्राइक रेट से 216 रन बनाए, जिसमें उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 46 रहा। उन्होंने 35.18 की खराब औसत और 10.75 की इकॉनमी रेट से 11 विकेट भी लिए। भारत अपना टी-20 विश्व कप अभियान 5 जून को आयरलैंड के खिलाफ न्यूयॉर्क के नवनिर्मित नासाउ काउंटी इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में शुरू करेगा। इस बीच, भारत और पाकिस्तान के बीच सबसे प्रतीक्षित ब्लॉकबस्टर मुकाबला 9 जून को होगा। इसके बाद वे टूर्नामेंट के सह-मेजबान यूएसए (12 जून) और कनाडा (15 जून) के साथ अपने ग्रुप ए मैच खेलेंगे।

कैमरून फुटबॉल महासंघ ने मार्टिन एनडटौंगौ को राष्ट्रीय पुरुष टीम का अंतरिम कोच नियुक्त किया

एजेंसी

याउंडे। कैमरून फुटबॉल महासंघ ने घोषणा की है कि उसने कई सप्ताह के तनाव और संकट के बाद एक आपातकालीन बैठक के दौरान मार्टिन मपाइल एनडटौंगौ को राष्ट्रीय पुरुष फुटबॉल टीम का अंतरिम मुख्य कोच नियुक्त किया है।

रात जारी एक बयान में, महासंघ ने कहा कि वह अप्रैल में टीम का नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किए गए बेल्जियम के मार्क ब्रायस को अस्वीकार्य व्यवहार और महासंघ के साथ सहयोग करने से इनकार करने के कारण बर्खास्त कर रहा है।

कैमरून की राजधानी याउंडे में महासंघ मुख्यालय में मंगलवार की सुबह संकट बैठक शुरू होने से पहले महासंघ के अध्यक्ष सैमुअल एटो और ब्रायस के बीच वीडियो कांफ्रेंस में कठोर शब्दों का आदान-प्रदान होते देखे जाने के बाद आपातकालीन बैठक आयोजित की गई थी। कैमरून फुटबॉल क्लब अप्रैल से ही संकट में फंसा हुआ है, जब देश के खेल और शारीरिक शिक्षा मंत्री नार्सिस मौएले

कोम्बी ने ब्रायस को राष्ट्रीय पुरुष फुटबॉल टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया था।

महासंघ ने शुरू में इस नियुक्ति को यह कहते हुए खारिज कर दिया था कि वह नियुक्ति प्रक्रिया में शामिल नहीं था, लेकिन मई की शुरुआत में, एसोसिएशन ने ब्रायस को नए मुख्य कोच के रूप में पुष्टि की, लेकिन मंत्री द्वारा नियुक्त तकनीकी कर्मचारियों के कुछ सदस्यों को बर्खास्त कर दिया और उनकी जगह नए लोगों को नियुक्त किया। स्थानीय फुटबॉल विश्लेषकों के अनुसार कैमरून के पास जून में केप वर्डे और अंगोला के खिलाफ दो महत्वपूर्ण विश्व कप क्वालीफायर मैच निर्धारित हैं, लेकिन गहराते संकट से खेलों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

ओलंपिक पोल वॉल्ट चैंपियन थियागो ब्राज़ पर डोपिंग के कारण लगा प्रतिबंध, पेरिस 2024 से बाहर

एजेंसी

नई दिल्ली। ब्राजील के 2016 ओलंपिक चैंपियन पोल वॉल्ट एथलीट थियागो ब्राज़ इस वर्ष पेरिस में अपना खिताब दोबारा हासिल करने का प्रयास नहीं कर पाएंगे, क्योंकि एथलेटिक्स इंटीग्रिटी यूनिट (एआईयू) ने मंगलवार को डोपिंग के लिए उन पर 16 महीने का प्रतिबंध लगा दिया है।एआईयू के बयान में कहा गया है, एथलेटिक्स इंटीग्रिटी यूनिट (एआईयू) ने रियो 2016 ओलंपिक चैंपियन थियागो ब्राज़ पर ओस्टारिन ग्लूकोरोनाइड की मौजूदगी के कारण 16 महीने का प्रतिबंध लगा दिया है।

30 वर्षीय ब्राज़ ने अपने ऊपर लगे प्रतिबंध का विरोध करते हुए कहा कि उन्होंने प्रतिबंधित पदार्थ युक्त खेल पूरक के माध्यम से इसका सेवन किया था। उन्होंने कहा कि वह प्रतिबंध के विरुद्ध अपील करने पर विचार करेंगे।

एआईयू के प्रमुख ब्रेट क्लॉथियर ने कहा, ब्राजील के एथलीटों, जिनमें ब्राज़ भी शामिल हैं, को ब्राजील में कंपाउंड फ़ार्मेसियों से सप्लीमेंट्स के उपयोग से जुड़े ख़तरों के बारे में विशेष रूप से शिक्षित किया गया है। यह एआईयू ऑनलाइन फ़ोरम और एआईयू एथलीट सलाहकार नोटिस के माध्यम से हुआ है। इन बहुत स्पष्ट चेतावनियों के प्रकाश में, इस तरह के मामले से निपटना निराशाजनक है।

अनुशासनात्मक न्यायाधिकरण ने फैसला सुनाया कि, हालांकि ब्राज़ को पूरक पदार्थों के उपयोग में शामिल उच्च जोखिम के बारे में व्यक्तिगत रूप से सूचित किया गया था और परिणामस्वरूप उन्होंने इस जोखिम को नजरअंदाज किया था, लेकिन यह नहीं माना जा सकता कि उन्होंने जोखिम की स्पष्ट रूप से उपेक्षा की थी, क्योंकि उन्होंने सलाह के लिए अपनी मेडिकल टीम पर भरोसा किया था। पैनल के बहुमत ने निर्धारित किया कि वह महत्वपूर्ण दोष या लापरवाही में नहीं था। ब्राज़, जिन्हें 2 जुलाई को स्टॉकहोम में डायमंड लीग मीटिंग में इन-कॉम्पिटिशन टेस्ट के बाद सकारात्मक परिणाम मिलने के बाद 28 जुलाई, 2023 को एआईयू द्वारा अनंतिम रूप से निलंबित कर दिया गया था, उन्हें 27 नवंबर, 2024 तक प्रतिस्पर्धा करने से रोक दिया जाएगा।

इंग्लैंड और पाकिस्तान के बीच तीसरा टी20 मैच चढ़ा बारिश की भेंट

एजेंसी

नई दिल्ली। इंग्लैंड और पाकिस्तान के बीच रात कार्डिफ़ में होने वाला तीसरा टी-20 मैच बारिश के कारण बिना एक भी गेंद फेंके रद्द हो गया। सुबह कार्डिफ़ में भारी बारिश हुई, जो पूरे दिन जारी रही। दोपहर में बारिश कुछ देर के लिए रुकी, लेकिन शाम 5.15 बजे फिर शुरू हो गई, जिससे टॉस में बार-बार देरी हुई, इसके बाद अंपायर माइक बर्न्स और रसेल वॉरेन ने रात 8.12 बजे मैच रद्द कर दिया, जिससे दर्शकों में निराशा की लहर दौड़ गई।

बुधवार को लीड्स में खेले गए पहले मैच में मौसम के कारण खेल रद्द होने के बाद यह सीरीज का दूसरा मैच है, जिसमें अब तक 120 निर्धारित ओवरों में से केवल 39.2 ओवर ही फेंके जा सके हैं। इंग्लैंड की टीम चार मैचों की टी-20 श्रृंखला में 1-0 से आगे है। इंग्लैंड ने शनिवार को पाकिस्तान को दूसरे टी-20 में 23 रन से हराया था।

इंग्लैंड के कप्तान जोस बटलर कार्डिफ़ नहीं गए और अगर मैच होता तो उनकी जगह मोईन अली टीम की अगुआई करते। बर्मिंघम में इंग्लैंड की 23 रन की जीत के बाद बटलर शनिवार रात अपनी पत्नी लुईस के पास लंदन चले गए, क्योंकि दंपति को जल्द ही अपने तीसरे बच्चे की उम्मीद है।

मार्क वुड मार्च की शुरुआत से इंग्लैंड के लिए अपना पहला मैच खेलने वाले थे, जबकि सैम करन भी शनिवार को एजबेस्टन में बाहर रहने के बाद इस मैच में खेल रहे थे। बटलर के शुक्रवार को इंग्लैंड की बाकी टीम के साथ बारबाडोस जाने की उम्मीद है, और गुरुवार रात को ओवल में श्रृंखला के अंतिम मैच में खेलने के लिए समय पर टीम में वापस भी आ सकते हैं। जैसा कि हालात हैं, दक्षिण लंदन के लिए मौसम का पूर्वानुमान बहुत आशाजनक नहीं है क्योंकि दोनों टीमें विश्व कप में जाने से पहले कम से कम एक और मैच खेलना चाहेंगी।

प्रियंका चोपड़ा

की मां को लंच पर ले गए थे निक जोनास, बेटी का हाथ मांगा और किया ये वादा

प्रियंका चोपड़ा और निक जोनास की शादी को करीब 6 साल हो गए हैं. इंस्टाग्राम से शुरू हुआ दोस्ती का ये सिलसिला प्यार में बदल गया था और फिर दोनों ने एक दूसरे शादी कर ली थी. अब सालों बाद प्रियंका की मां मधु चोपड़ा ने बताया है कि कैसे निक जोनास ने उनसे बेटी प्रियंका चोपड़ा का हाथ मांगा था और उनसे क्या वादे किए थे.एक हालिया इंटरव्यू में मधु चोपड़ा ने बताया कि प्रियंका चोपड़ा ने निक के साथ डेटिंग के बारे में उन्हें कुछ नहीं बताया था. उन्होंने खुद टीवी पर देखा था कि प्रियंका और निक साथ देखे गए हैं. इस पर मधु चोपड़ा ने प्रियंका से पूछा भी था कि क्या कुछ चल रहा है, मगर उस वक्त प्रियंका ने मना कर दिया था और कहा था कि कुछ होगा तो बताउंगी.

जब निक को भारत लाईं प्रियंका

मधु ने बताया कि कुछ वक्त बाद प्रियंका ने उनसे पूछा कि निक भी भारत आना चाहते हैं क्या उन्हें ले आऊं? इस पर मधु ने सवाल भी किया था कि वो यहां आकर क्या करेगा? घूमने आ रहा है क्या? इस पर प्रियंका ने उनसे कहा था कि वो अपने गाने लिखेगा, घर पर ही रहेगा, मैं काम पर जाउंगी. मधु चोपड़ा ने कहा कि उन्हें जरा भी पता नहीं चला था कि इनके बीच कुछ है.

जब लंच पर ले गए निक

मधु चोपड़ा ने बताया, एक दिन निक ने मुझसे कहा कि मैं आपको लंच पर ले जाना चाहता हूं. लेकर गया लंच पर. वहां पूछने लगे कि कैसा लड़का सोचा है आपने प्रियंका के लिए. मैंने बताया. फलाना, फलाना, फलाना बॉक्सेस टिक होने चाहिए. तब वो बोले हां मैं वो आदमी हूं. क्या मैं वो शख्स बन सकता हूं. मैं आपसे वादा करता हूं एक भी आपका बॉक्स अनटिक नहीं होगाञ्मैं तैयार थी, पर मैं बहुत खुश हो गई थी.मधु चोपड़ा ने बताया कि वो खुश थीं कि इतना अच्छा लड़का मिला है. उन्होंने कहा कि उस वक्त वो निक को बहुत ज्यादा नहीं जानती थी. पर उन्हें एहसास हो गया था कि वो बहुत मजबूत लड़का है और बहुत अच्छा है. खास बात ये है कि मधु चोपड़ा से बात करने से पहले निक जोनास ने प्रियंका चोपड़ा को शादी के लिए प्रपोज़ नहीं किया था. जब मधु चोपड़ा ने हां कह दी तब निक ने प्रियंका चोपड़ा को प्रपोज़ किया था.

हम हर बार जिंदगी खो देते हैंज्राफा में इजराइल के अटैक की इन फिल्मी सितारों ने की निंदा

रविवार के दिन दक्षिणी गाजा के फिलिस्तीन शहर राफा में इजराइल ने बमबारी की. विस्थापित लोगों के एक शिविर और घरों को निशाना बनाया गया. इस हमले में 35 लोगों की मौत हो गई. इतना ही नहीं दर्जनों लोग घायल भी हुए. इस हमले ने सभी के दिल दहलाकर रख दिए. आम लोगों के साथ-साथ फिल्मी सितारे भी इजराइल की कड़ी निंदा कर रहे हैं. कई सितारों ने खुलकर अपनी बात रखी है.बॉलीवुड एक्ट्रेस स्वरा भास्कर ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक पोस्ट किया और इजराइल की आलोचना करते हुए उन्होंने लिखा, मेरे पास शब्द नहीं है सिर्फ बद-दुआएं हैं. स्वरा के साथ सेलिना जेटली का भी रिएक्शन सामने आया है. सेलिना ने इंस्टाग्राम पर पोस्ट करते हुए लिखा,जले हुए बच्चों की जो तस्वीरें आ रही हैं, पिता अपने बच्चों की बॉडी उठा रहे हैं, बच्चों के सिर नहीं है, उस खतरनाक मंजर को बयां करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है.

माहिरा खान ने भी की निंदा

पाकिस्तानी एक्ट्रेस माहिरा खान ने लिखा, लोगों को टेंट में सोते हुए जिंदा जलाया जा रहा है. बमबारी की जा रही है. ये हम किस तरह की दुनिया में रह रहे हैं. ये कौन से लोग हैं, जो बच्चों को जिंदा जलते हुए देख सकते हैं.

माहिरा खान के साथ-साथ पाकिस्तानी एक्ट्रेस मावरा हुसैन ने भी पोस्ट किया है. उन्होंने लिखा, मैं रोते हुए बच्चे, जले हुए बच्चे, बिना सिर वाले बच्चों की पोस्ट नहीं करूंगी. ये अब जागरूकता या जानकारी के लिए नहीं है. पिछले कई महीने, कई सालों से जिंदगी इसी तरह चल रही है. हमारे पास कोई पावर नहीं है और यही सच है. कोई भी पोस्ट या स्टोरीज बमबारी को रोक नहीं सकी. कोई प्रतिबंध नहीं, कोर्ट का कोई फैसला हमले को रोक नहीं सका. पूरी दुनिया एक साथ आकर कुछ नहीं कर सकी. हम हर बार जिंदगी खो देते हैं.

वो फिल्म, जिसे सलमान खान-संजय दत्त ने ठुकरा दिया और चमक गई थी जॉन अब्राहम की किस्मत

जॉन अब्राहम पिछले दो दशकों से बॉलीवुड का हिस्सा हैं. उन्होंने साल 2003 में 'जिस्म' से अपना फिल्मी करियर शुरू किया था. उसके बाद उनकी बैक टू बैक 4 फिल्में फ्लॉप हुईं. फिर, एक ऐसी पिक्चर आई, जिसके जरिए वो छा गए. फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई की थी और सुपरहिट रही थी. यूं तो उस फिल्म में जॉन निगेटिव रोल में थे, लेकिन उस किरदार के जरिए ही उन्होंने जबरदस्त कमाल दिखाया था. हालांकि, वो उस फिल्म के लिए मेकर्स की पहली पसंद थे ही नहीं.म जिस फिल्म की बात कर रहे हैं वो है 'धूम'.

यशराज फिल्म्स के बैनर तले बनी ये फिल्म साल 2004 में रिलीज हुई थी. इस पिक्चर में अभिषेक बच्चन, उदय चोपड़ा भी था. अभिषेक और उदय ने फिल्म में पुलिस वाले का रोल प्ले किया था और जॉन चोर के किरदार में थे. संजय गढ़वी ने उस फिल्म को डायरेक्ट किया था. हालांकि, रिपोर्ट्स की मानें तो जब फिल्म की कास्टिंग हो रही थी तो सबसे पहले वो फिल्म सलमान खान को ऑफर हुई थी.

संजय दत्त को भी मिला था ऑफर

बताया जाता है कि सलमान ने वो फिल्म रिजेक्ट कर दी थी. हालांकि, उन्होंने ये ऑफर क्यों ठुकराया था, उसकी वजह क्लियर नहीं है. सलमान के बाद वो फिल्म संजय दत्त को मिली, लेकिन उन्होंने भी उस फिल्म को करने से मना कर दिया था. उसके बाद वो फिल्म जॉन अब्राहम के पास पहुंची. वो राजी हो गए और 'धूम' उनके लिए गेम चेंजर साबित हुई.

बॉक्स ऑफिस इंडिया की मानें तो 11 करोड़ के बजट में बनी फिल्म ने भारत में 31 करोड़ से ज्यादा का कलेक्शन किया था. वहीं वर्ल्डवाइड 50 करोड़ की ग्रॉस कमाई हुई थी. 2006 में 'धूम' का दूसरा पार्ट भी आया था, जिसमें जॉन की जगह ऋतिक रोशन नजर आए थे. 2013 में 'धूम 3' आई थी और उसमें आमिर खान थे. पहले पार्ट की तरह ये दोनों पार्ट भी बॉक्स ऑफिस पर सफल हुई थी.

शाहिद कपूर

और मीरा राजपूत ने एक झटके में खर्च कर दिए 60 करोड़ रुपये

शाहिद कपूर और मीरा राजपूत कपूर की जोड़ी बॉलीवुड की फेवरेट जोड़ियों में से एक है. दोनों अक्सर सुर्खियों का हिस्सा रहते हैं. अब एक बार फिर ये दोनों चर्चा में आ गए हैं. इस बार वो अपनी नई प्रॉपर्टी को लेकर सुर्खियां बटोर रहे हैं. बॉलीवुड के इस मशहूर कपल ने मुंबई में एक लग्जरी अपार्टमेंट खरीदा है, जिसकी कीमत आपके होश उड़ा देगी.इंडेक्सटैप डॉट कॉम के मुताबिक शाहिद कपूर और मीरा राजपूत ने मुंबई में जो आलिशान अपार्टमेंट खरीदा है उसकी कीमत करीब 59 करोड़ रुपये है. शाहिद-मीरा ने ये लग्जरी अपार्टमें ओबेरोई 360 वेस्ट प्रोजेक्ट में खरीदा है, जो कि मुंबई के वर्ली इलाके में मौजूद है.

कब कराई है रजिस्ट्री

रजिस्ट्री के डॉक्यूमेंट्स के हवाले से रिपोर्ट में बताया गया है कि 59 करोड़ का ये अपार्टमेंट 5,395 स्क्वायर फीट का है. इस प्रॉपर्टी के साथ शाहिद-मीरा को तीन गाड़ियों के पार्किंग की जगह भी मिली है. बताया जा रहा है कि इसके लिए शाहिद-मीरा ने 58.66 करोड़ रुपये चुकाए हैं. प्रॉपर्टी का रजिस्ट्रेशन 24 मई 2024 को किया गया है.

हिंदुस्तान टाइम्स ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि शाहिद कपूर और मीरा ने ये लग्जरी अपार्टमेंट काफी ऊपरी मंजिल पर लिया है. इस प्रॉपर्टी का निर्माण ओबेरोई रिएलटी ने किया था और इसे शाहिद-मीरा ने चंदक रिएलटर्स प्राइवेट लिमिटेड से खरीदा है. चंदक रिएलटर्स ने इसे अपार्टमेंट को फरवरी 2023 में 35.31 करोड़ रुपये में खरीदा था.

बेचने वाले को करोड़ों का फायदा

रिपोर्ट में बताया गया है कि चंदक रिएलटी ने इस अपार्टमेंट को करीब 65 हज़ार रुपये स्क्वायर फीट के हिसाब से खरीदा था. अब उन्होंने इसे करीब 1 लाख रुपये स्क्वायर फीट के हिसाब से बेचा है. ये अपार्टमेंट सी फेसिंग है और रेडी टू मूव यानी तैयार हैं.इस डील के लिए शाहिद और मीरा ने 1.75 करोड़ रुपये की स्टैंड ड्यूटी अदा की है. शाहिद कपूर ने इसी बिल्डिंग में साल 2018 में भी एक आलिशान अपार्टमेंट खरीदा था. उस प्रॉपर्टी का साइज 8,281 स्क्वायर फीट था. उस वक्त शाहिद ने ये अपार्टमेंट 55.60 करोड़ रुपये में खरीदा था और उसके लिए उन्होंने 2.91 करोड़ की स्टैंप ड्यूटी जमा की थी.